पानीपत की चौथी लड़ाई
(एकांकी संग्रह)



भाषा विभाग पंजाब के सहयोग द्वारा प्रकाशित

पानीपत की चौथी लड़ाई

सुरेश शर्मा

पानीपत की चौथी लड़ाई
(एकांकी संग्रह)
सुरेश शर्मा

प्रथम संस्करण 1990

प्रकाशक
सवेरा प्रकाशन
एन एफ 134 भीतर माई हीरां गेट
जालंधर-144 001

कम्पोज़िंग
खालसा कम्पोज़िंग हाऊस,
पान मार्किट अड्डा टांडा,
जालंधर।

मुद्रक
सटो प्रिंटर्ज पगवाड़ा गेट
जालंधर।

चित्रकार
सुरजन

PANIPAT KI CHOTHI LADHAYI
(One Act Plays)
By
Suresh Sharma

Published by
Sawera Parkashan,
N F 134 Inside Mai Hiran Gate
Jalandhar-144 001

First Edition 1990

Price Rs 50

भूमिका

'पानीपत की चौथी लडाई' इन विचारको के क्षेत्र मे पजाब के युवा नाटककार श्री सुरेश शर्मा की अन्याय शोषण, भ्रष्टाचार सत्तालोलुपता और धर्मान्धता के विरुद्ध एक नई मोर्चाबन्दी है।

जब भी जीवन के गलत मूल्यो के विरुद्ध कोई युवा स्वर अपनी आवाज उठाता है तो उसे एक महासमर लडने के लिए अपनी कमर कसनी पडती है। आदर्शों की पुन स्थापना के लिए अपने इस छ्ननि नाटक सग्रह के साथ श्री सुरेश शर्मा भी 'पानीपत की चौथी लडाई' लडने की घोषणा कर रहे है। जुझारु तवर किसी भी नई कलम का यौवन हाना है। इस यौवन का स्वागत है।

श्री सुरेश शर्मा किसी पहचान की हडबडी म नही लगत। इससे पूव वह पजाब क जान पहचान क्रिकेट क खिलाडी रह चुके ह। सतत अध्यवसाय और साधना करन का प्रशिक्षण उसके पास है और खेल के मैदान की तरह लेखन के मैदान म भी फाऊल न खेलने की कसम उन्हाने ले रखा है उनका विनम्र व्यक्तित्व और अग्रज लेखका के प्रति सम्मान का भाव मुझे बताता है। सम्भवत साहित्य और नाटक क प्रति समपण का यह भाव उन्हे अपने पिता श्री हेमराज शर्मा से मिला है, जो पजाब के सुप्रसिद्ध रगकर्मी और पजाब के विख्यात मीडिया नाटक निर्देशक हैं।

इस सग्रह मे सकलित नाटका म से तीन नाटका न मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। पानीपत की चौथी लडाई जो आज के युगसत्य स मुह नही मोड रही। हमारे समाज म राजनीति की आयाधामी आज एक नावदान मे तबदील हो चुकी है और इस पर धर्मान्धता का मुलम्मा हमे पिछली सदी क अधेरो मे भटकन पर विवश कर रहा है। सुरेश शर्मा इस कटु विभीषिका से कतराय नही हैं, बल्कि उनकी कलम इसका पर्दाफाश करने क लिए व्यग्य का हथियार अपना लेती है, व्यग्य जो स्थितिया के प्रति आक्रोश स पैदा हाता है। व्यग्य जो परिवतन का आह्वान करता है।

सुरेश शर्मा का एक और नाटक 'फूलो की चुभन' आपको शिक्षा क्षेत्र मे ले जाता है। कौन नही जानता आज शिक्षा एक दुकान बन चुकी है और शिक्षक फेरी वाला की तरह हाक लगा कर अपना माल बेचत हुए अधिक से अधिक माल समेटन का प्रयास करते है। लेकिन सुरेश शर्मा के इस नाटक म एक ऐसा स्कूल टीचर भी है जा अपने सिद्धाता और आदश के लिए जीता है और जानबूझ कर की गयी गलती को कभी माफ नही करता। प्राय आदशवादी चरित्रा का निबटारा नाटक म एक त्रासद अ त के साथ कर दिया जाता है। लेकिन सुरेश शर्मा सहज लिखते हैं इसलिए इस नाटक मे कोई त्रासद अ त देने का आग्रह उन्होंने नही रखा।

इस सग्रह मे उनका एक और नाटक है 'नई सुबह । नाटक का मूलकथ्य यह है कि एक सन्यासी के जीवन से गृहस्थ का जीवन अधिक कठिन होता है अगर उसे सही ढंग से निबाहा जाये । अपनी छोटी सी उम्र म ही सुरेश शमा इस सत्य को पहचान पाये गहरे पानी पैठ साधु ।

सुरेश शर्मा का सग्रह ध्वनि नाटको के क्षेत्र म उनका पहला प्रयास है । ये सभी नाटक इससे पूव आकाशवाणी जालधर से प्रसारित होकर श्रोताओ के द्वारा खूब सराहे गये थे । श्री सुरेश शर्मा ने बिना किसी लाग लपट के ज्या का त्यो उह अपन पाठको के सामने प्रस्तुत कर दिया । फैशन के मुताबिक ठोक पीट कर उह बवजह मचीय नाटक बनाने का प्रयास नही किया । लेकिन इसक बावजूद जब ये नाटक अपन पाठको से बतियाते हैं तो एक बात स्पष्ट कर देते हैं कि ध्वनि नाटको म भी अपनी बात कहन की अद्भुत शक्ति होती है, और वह आज के साहित्य का एक सशक्त हिस्सा है ।

पानीपत की चौथी लडाई के साथ श्री सुरेश शर्मा न नाटक के क्षेत्र मे अपनी पहचान की लडाई शुरू कर दी है । मैं जानता हू अभी उह बहुत मील पत्थर चलना है । लेकिन साहित्य के क्षेत्र म एक और युवा स्वर न अपनी ईमानदारी लडाई की शुरआत तो की । स्वागत ।

—सुरेश सेठ

175 ग्रीन पाक
मुख्य बस स्टैंड के सामने
जालन्धर नगर—144 001

मेरी बात

क्रिकेट के दायरे से लेखक के दायरे तक का सफर मेरे जीवन के कडवे मीठे अनुभवो का सकलन मेरी लेखनी का आधार है। इसीलिये मेरे सभी नाटक काल्पनिक नही लगते। मेरे अधिकतर नाटक सामाजिक बुराईयो को उजागर करने की चेष्ठा करते हैं।

मेरे नाटको के पात्र यथार्थ से जुडे हुए हैं। पानीपत की चौथी लडाई का राजनीतिज्ञ भगवानदास, जो अपने आपको भगवान समझता है, समूची मानव जाति को कर्तव्यो के लिए प्रेरित करता है, और उनके अधिकारो को अपने स्वार्थी कदमो से कुचल कर सत्ता का सुख भोगता है। जब मानव को होश आता है तो भगवान का अत एक नये प्रभु का जन्म देता है।

स्कूल का अध्यापक विद्यानन्द अनुशासन प्रिय है। जान बूझ कर की गई गलती को क्षमा करना उसके सिद्धातो के विरुद्ध है। यह बात वो घर मे भी नही भूलता और अपने बेटे विकास के साथ वही व्यवहार करता है जो स्कूल म दूसरे बच्चो के साथ। विद्यानन्द का अपने सिद्धातो से प्रेम ही उसे अपने बेटे से दूर ले जाता है। अन्त मे बेटे को अहसास होता है कि उसने अपने पिता (अपने भगवान) के चरणो मे वो फूल अर्पण किये जो खुशबू नही चुभन देते रहे।

कहते हैं कि देश के भविष्य का निर्माण अध्यापक करते हैं और वही अध्यापक जब जिन्दाबाद और मुर्दाबाद के नारे लगाते हैं तो क्या प्रभाव डालते हैं उस पीढी पर जिनके हाथो हम इस देश का भविष्य सौंपना चाहते हैं इन्सान का नैतिक पतन इस सीमा तक हो चुका है कि लोगो की भलाई के लिये इकट्टा किया हुआ दान भी अपने स्वार्थों की पूर्ती के लिये प्रयोग मे लाता है। लेकिन फिर भी प्रकृति का यह नियम है कि हर अधेरी रात के बाद एक नई सुबह होती है।

मेरा यह प्रस्तुत प्रथम सकलन पाठको तक पहुँच सका इससे अधिक प्रसन्नता की बात मेरे लिये और क्या हो सकती है। पाठकगणो का प्रोत्साहन ही मेरी लेखनी को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है।

—सुरेश शर्मा

क्रम

इन्सानियत

पात्र परिचय

रौनी
जॉन
पीटर
फिलिप
मारथा
बेरी
डाक्टर
नर्स
जूली
वकील
कर्नल

जौन	कितनी बार पढेगा यह लैटर ?
पीटर	जब तक दिल नही भर जाता।
जौन	किसका है ?
पीटर	मेरी पत्नी का।
जौन	क्या बहुत मुहब्बत करती है तुमसे ?
पीटर	बहुत।
जौन	कितनी गहराई है उसके प्यार म ?
पीटर	समुद्र की गहराई का अंत हो सकता है मगर मैक्सीन के प्यार का कोई अन्त नही। बल्कि मैं तो यही कहूंगा कि प्यार का मतलब बातो मे नही अनुभव म जाना जाता है।
जौन	इस मामले म मेरा अनुभव तो बिल्कुल भी नहीं है।
पीटर	जब शादी कर लोगे तो पती पत्नी के पवित्र रिश्ते को भी समझ लोगे।
जौन	क्या लिखती है तुम्हारी पत्नी।
पीटर	सब कुछ तो नहीं मगर इक बात तुमे जरूर बताऊगा मैं बाप बनने वाला हू ।
जौन	(खुशी से) सच।

पीटर हां जौन तभी तो इसे बार बार पढ रहा हूं । यह लैटर पढ़कर कितनी खुशी होती है शायद इसका अंदाजा तुम न लगा सको ।

जौन मुझे मालूम है पीटर । हम फौजियों को सिर्फ इन पत्रों का ही तो इन्तजार रहता है । कभी खुशी व कभी गम व ।

पीटर खुशी और गम इनका कोई महत्व नहीं है हमारे लिए । हम तो हुक्म का तामील ही कर सकते हैं । न जाने कब आर्डर आ जाए कि उठो और दुश्मनों के खून से धरती लाल कर दो । (बादल जोर से गरजते हैं) आज मौसम कुछ ज्यादा ही खराब है ।

जौन यह मौसम भी खूंखार फौजी कमांडर जैसा लगता है ।

पीटर (हंसता है) बिल्कुल सर डैनिम जैसा जो दुश्मनों पर मौत का कहर बरसा देता था ।

जौन और खुद भी मौत से मात खा गया ।

पीटर कल मैस में कैप्टन रौनी से मुलाकात हुई थी ।

जौन क्या कहा था उन्होंने ।

पीटर यही कि इंटेलीजेंस की रिपोर्ट के मुताबिक बोर्डर किसी भी समय खुल सकता है ।

जौन पड़ौसी मुल्क से वैसे भी हमारे सम्बंध कभी अच्छे नहीं रहे ।

पीटर उनका बोर्डर के साथ साथ फौजों का जमाव आने वाली तबाही का संकेत ही तो है ।

जौन अब शायद दुश्मन उतना कमजोर नहीं है । उसका 90 प्रतिशत बजट डिफेंस पर ही खर्च हो रहा है (दूर से गोलियां चलने की आवाज)

पीटर लगता है बोर्डर के उस पार फायरिंग हो रही है ।

जौन यह तो पिछले एक महीने से हो रहा है । तभी तो बोर्डर पर टैंस है । वो फिलिप आ गया ।

पीटर कहां थे अब तक तुम ?

फिलिप हैडक्वाटर गया था ?

पीटर कोई लैटर तो नहीं थी ।

फिलिप तुम दोनों का एक एक लैटर वहां आया था मैं ले आया हूं । ये लो । (दोनों अपने अपने लैटर खोलते हैं)

पीटर मैं बाप बन गया फिलिप मेरे घर लड़का पैदा हुआ है आज मैं बहुत खुश हूं । तुम सब को मिठाई खिलाऊंगा । क्या बात है जौन तुम्हारी आंखों में आंसू ?

फिलिप क्या हुआ जौन ?

जौन मेरी मां नहीं रही । वो मुझे बहुत प्यार करती थी ।

पीटर आई एम सौरी जौन । मैं अपने बच्चे की खुशी नहीं मनाउगा। कुछ लिखा लेटर म यह सब कैसे हुआ ?

जौन रात को ठीक ठाक थी मगर सुबह हुई तो मैं भी कितना अभागा हू जो मा की इच्छा भी पूरी न कर सका। हमेशा यही कहती थी कि बेटा शादी कर लो मेरा क्या भरोसा (रोता है)

फिलिप दिल छोटा न करो जौन ? मरना तो इसान के अपने बस म नहीं है।

पीटर तुम एपलीकेशन लिख दो। घर म तुम्हारी जरूरत होगी।

फिलिप हा हा जौन पीटर ठीक कहता है। पीटर जाना तो तुझे भी चाहिए।

पीटर नही फिलिप मैं घर नही जाऊगा।

फिलिप क्या ?

पीटर जौन की मा क स्वर्गवास होने क बाद मेरे लिए कोई खुशी करना भी अच्छा नही होगा।

जौन कैसी बातें करते हो पीटर। तुम्हारी पत्नी को इस समय तुम्हारी भी जरूरत है। तुम्हारा पहला बच्चा है न। सभी तुम्हारा इतजार कर रहे होंगे।

पीटर नही जौन मैं नही जाऊगा।

जौन तो फिर मैं भी नही जाऊगा।

पीटर तुम्हारा जाना बहुत ज्यादा जरूरी है।

जौन कोई जरूरी नही।

पीटर अब मैं तुम्हे कैसे समझाऊ।

फिलिप तुम दोनो ही बिना वजह अपना समय नष्ट कर रहे हो। तुम दोनो को ही जाना है। तुम दोनो अपनी अपनी अपलेकेशन लिखो मैं हैडक्वाटर जाकर तुम्हारी छुट्टी मजूर कराके लाता हू। तब तक तुम लोग अपना सामान बाध लो।

सगीत अतराल

जौन लगता है फिलिप आ गया।

पीटर तुमने अपना सामान बाध लिया न।

फिलप हा पीटर (फिलिप अदर आता है)।

फिलप अपना अपना सामान खोल दो तुम्हारी छुट्टी मजूर नही हुई।

जौन मगर क्यो ?

फिलप जग शुरू होने वाली है।

जौन तो क्या अपनी मा की मौत क पश्चात् मैं घर भी नही जा सकता। क्या सैनिक नियम इतने कठोर होते है।

फिलप जौन मैं जानता हूँ इस समय तुम्हारे जजबात को ठेस पहुँची है। अगर हम फौजी ही जजबात मे फँस गए तो क्या होगा ?

जौन	मगर हम यह क्यों भूल जाते है कि हम भी इंसान हैं ।
पीटर	हमारे सीना म दिल नही पत्थर के टुकडे ह ।
जौन	अगर ऐसा है ता बहुत जल्द सारी दुनिया अस्तित्व हीन हो जाएगी। मैं तो चाहता हूँ कि छोड दूँ यह नौकरी और भाग जाऊँ यहा से ।
फिलप	तुम ऐसा भी नही कर सकते क्या इसे देशद्रोह समझा जायेगा। बाहर जीप के रुकने की आवाज आती है ।
पीटर	मैं देखता हूँ कौन है ? (पाज) कैप्टन रौनी है । (रौनी अन्दर आता है तीनो सैल्यूट मारते ह) ।
फिलप	बैठिए सर ।
रौनी	जौन मुझे तुम्हारी मा के चले जाने का दुख है । मगर फौजी कानून के मुताबिक तुम्ह छुटटी नही मिल सकती ।
जौन	यस सर ।
रौनी	और मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम इसे एक कत्तव्य परायण सनिक की तरह सहन करोगे और इस देश के लिए मर मिटने का तैयार रहोगे ।
जौन	यस सर
रौनी	पीटर तुम्हारी खुशी भी इस समय तुम्हे घर नही जाने देगी ।
पीटर	यस सर
रौनी	क्योंकि दुश्मन ने सरहद के पार अपनी फौजो का जमाव इस हद तक कर लिया है कि लडाई जरूर होगी । हमे ऊपर से आडर मिल चुका है कि काई भी सैनिक छुट्टी पर नही जाएगा ।
पीटर	यस सर
रौनी	सैनिक प्रशासन को बुनियाद अनुशासन है और अनुशासन के दायरे मे रहकर ही हम अपने दुश्मन को लडाई के मैदान म हरा सकते ह ।
पीटर	सर अगर जौन को दो तीन दिन के लिए छुटटी मिल जाती तो
रौनी	नही पीटर । फौज का कानून जजबात को नही मानता और यह कानून सब पर एक समान लागू होता है । इसम ता मैं भी कुछ नही कर सकता ।
जौन	ठीक है सर अगर यह सनिक कानून मुझ मरी मरी हुई मा का चेहरा भी नही देखने द सकता ता मैं
रौनी	नही जौन सैनिक का ता जजबाती होने का भी कोई अधिकार नही । जजबात के भवर म फस कर क्या तुम दुश्मना का नाश कर सकोगे ।
जौन	कौन दुश्मन और कैसे दुश्मन सर ?
रौनी	वही जो सरहद के उस पार रहते हैं ।
जौन	वो बेगुनाह लोग भी जिनका हम जैसे सनिको से कोई सम्बध नही ।
रौनी	दुश्मनों की धरती पर रहने वाला से दोस्ती की उम्मीद बेवकूफ लोग करते हैं और तुम भी बेवकूफ हो ।

जौन आई एम सारी सर। मेरा यह मतलब नही था।

रौनी तुम जो भी साचते हो वो सिफ दिल मे रखो। जुबान पर लाने की इजाजत यह सैनिक कानून किसी को नही दता।

जौन यस सर

रौनी और मुझे उम्मीद है कि आईदा तुम हाशियार रहाग।

जौन यस सर

रौनी मैं बस तुम लागो को यही बतान आया था कि तुम दोना की छुट्टी मजूर नही हुई और अपने-2 हथियारो के साथ तैयार रहो लडाई कभी भी शुरु हा सकती है (कैप्टन रौनी कमरे स बाहर चला जाता है)

जौन यस सर

पीटर यस सर

फिलप जौन तुम्हे कैप्टन साहब के सामने एसी बातें नही करनी चाहिए थी।

पीटर वो तुमसे नाराज भी हो सकते थ और फाज म अफसर के नाराज़ होने का मतलब तुम अच्छी तरह जानते हा।

जौन लकिन मैंन कोई गलत बात नही की।

फिलप गलत और सही का अन्तर सिफ अफसर लागा के ही अधिकार मे है हमारा अधिकार तो सिफ हुक्म मानना ह।

जौन हम इन्सान न हुए केवल शतरज के माहरे हुए और वो भी प्यादे जो खुद कदम कदम पर मरते है अपने बादशाह का सिंहासन सलामत रखने के लिए। दूर से बम के धमाके की आवाज़ साथ मे गोलियो की आवाज)।

फिलप यह गोलियो की आवाज सुन रहे हो जौन ?

जौन हा सुन रहा हूँ।

पीटर लगता है अब की बार तबाही बहुत ज्यादा हागी।

संगीत अन्तराल

लडाइ के मैदान मे

रौनी (धीमे स्वर म) हमे उस सामने वाली दुश्मन की चौकी पर हमला करना है।

पीटर यस सर

रौनी ऊपर स वायरलैस पर हमे आडर मिला है कि हमे इस चौकी पर हर हाल मे कब्ज़ा करना है दुश्मन इसी चौकी स अपने क्षेत्र को नियन्त्रित करता है। हम ज़मीन पर लेटकर आगे बढना है।

फिलप ओ के सर

रौनी दैन स्टाट। (पाज) जहा तक हो सके फायर करने की नौबत नही आनी चाहिए।

जौन — सर क्या हम पाँच आदमी यह काम कर सकेंगे ?

रौनी — हमें ऐसा करना होगा ।

जौन — आत्महत्या ही होगी और कुछ नहीं ।

रौनी — देश से प्यार करने वाले ऐसा नहीं सोचते ।

फिलप — सर लगता है वहां पचास साठ सैनिक तो होंगे ही ।

रौनी — ज्यादा भी हो सकते हैं अगर तुम सब को इसकी चिंता नहीं करना चाहिए हम सिर्फ उस चौकी के नजदीक जाकर अपने आपको पेड़ों के पीछे छिपाए रखेंगे जैसे ही हमारी फौजें पहुँच जाएगी हम अटैक करेंगे ।

पीटर — फौजें कब तक आ जाएगी ?

रौनी — कुछ कहा नहीं जा सकता । हमें इन्तजार करना है तब तक जब तक हमें पीछे से सिगनल नहीं मिलता ।

पीटर — यस सर । (पाज) सर वो देखिए दुश्मन के टैंक हमारी सीमा की तरफ बढ़ रहे हैं (उड़ते जहाजों की आवाज) एयरफोर्स ने भी अटैक कर दिया लगता है (बमबारी गोलियों की आवाज। सर अब क्या करें ।

रौनी — अपने आप को बचाओ । दुश्मन की नजरों में आने से पहले किसी सुरक्षित स्थान पर छिप जाओ । (भागने कदमों की आवाज) ।

पीटर — सर वो देखिए हमें सिगनल मिल रहा है । हमारी फौजों ने भी अटैक कर दिया है ।

रौनी — मगर अब हम चौकी पर कब्जा नहीं कर सकते । बहुत देर हो चुकी है । हम तो फंस चुके हैं ।

फिलप — अब क्या करें सर ?

रौनी — बाईं तरफ फौजें नहीं है उधर भागो ।

फिलप — मगर वो तो दुश्मन का इलाका है ।

रौनी — जानता हूँ मगर इसके सिवा और कुछ नहीं किया जा सकता । भागो (भागते हैं गोलियों की आवाज जहाज उड़ने की आवाज भीषण लड़ाई)

संगीत अन्तराल

रौनी — (कराहता है) दूर से गोलियां चलने की भी आवाज)

मारथा — लगता है इन्हें होश आ रहा है ।

रौनी — (कराहते हुए) कहां हूँ मैं ?

मारथा — भगवान का लाख लाख शुक्र है जो तुम्हें होश आ गया

रौनी — मैं कहां हूँ ? कौन हैं आप ?

मारथा — एक बदनसीब औरत जिसका सब कुछ खत्म हो गया (गोलियां चलने की आवाज)

रौनी — लड़ाई अभी तक चल रही है । मेरे दूसरे साथी

मारथा मर गए। उनका अंतिम सस्कार मैंने कर दिया था।

रौनी कितने थे वो ?

मारथा तीन।

रौनी मगर हम तो पाच थे। कौन बचा होगा ?

मारथा बचा भी होगा या चिथडे हो गया होगा उसका शरीर या कही पडा होगा लावारिस चील कौओ के लिए।

रौनी मैं कितने दिनो से बेहोश हूँ ?

मारथा सात दिन। मैंने तो उम्मीद ही छोड दी थी।

रौनी यह पटिटया।

मारथा मैंने की है। नस रह चुकी हूँ न। तुम्हारी किस्मत अच्छी थी कि कुछ दवाईया थी घर म।

रौनी मैं आपका यह एहसान

मारथा यह मेरा फर्ज था।

रौनी लडाई शुरु हुए सात दिन हो गए। इन सात दिना म हमारी फौजो ने दुश्मन को तबाह कर दिया होगा। मैं दुश्मना को छोडू गा नही आह

मारथा अभी तुम इस काबिल नही हो कि दो कदम भी चल सको। जब ठीक हो जाओगे तो जो जी म आए करना।

रौनी (कराहते हुए) जोश मे ता मैं यह भी भूल गया कि मैं तो खुद मौत के मुह से वापिस आया हूँ। आपका यह उपकार मैं कभी नही भूलू गा माँ जी।

मारथा तुम्हारा यह मा कहना बहुत अच्छा लगा क्याकि सात दिन से मेरे बच्चों ने मुझे मा नही कहा।

रौनी कहा हैं आपके बेटे ?

मारथा उनकी हत्या कर दी गई।

रौनी हत्या। मगर किन्हाने ?

मारथा उन लोगा ने जो बारूद के व्यापारी बन कर सारी दुनिया मे मौत बाटते हैं।

रौनी मैं कुछ समझा नही।

मारथा फौज मे नौकरी करते हो। दुश्मनो को मौत के घाट उतारने के लिए उतावले हो मगर फिर बारूद के व्यापारिया के बारे मे अनजान हो।

रौनी तो तुम्हारे बेटे इस लडाई मे मारे गए।

मारथा हा

रौनी फिर तो वो शहीद हो गए अपने वतन की खातिर।

मारथा वो फौज मे नौकरी नहीं करते थे और ना ही उन्हाने किसी आजादी के लिए किसी का खून किया तो फिर शहीद कैसे हो गए ?

रौनी आपकी बातें मेरी समझ म नहीं आतीं।

मारथा तुम्हें आराम की जरूरत है।

रौनी (लम्बी सांस लेते हुए) ठीक कहती हैं आप, लेकिन शरीर का म
दनदनाती हुई गोलियां, मंडराती हुई मौत क्या आराम हो सकता है
(बम का धमाका)।

मारथा लगता है कोई गोला नजदीक ही फटा है। कितनी करीब थी मौत
चारों तरफ लाशों के अम्बार तड़पते लोगों की चीखें पानी से
सस्ता बेगुनाहों का बहता खून। यह सब क्या है? कहां ले जा रहे
हम अपने आपको।

रौनी (बात काटते हुए) बस कीजिए भगवान के लिए ऐसा मत कहो। मैं
सैनिक हूं आपकी बातें कहीं मुझे कमजोर न कर दें।

मारथा अगर मेरी कही हुई बातों से तुम्हें तकलीफ होती है या तुम खुद सच्च
को झूठ का लबादा पहनाकर अपनी आंखों से दूर रखना चाहते हो तो
ऐसी बातें नहीं करूंगी। वैसे भी तुम्हें आराम की सख्त जरूरत है।

रौनी ठीक कहती हैं आप। बहुत थक गया हूं। मुझे आराम ही करना चाहि
(पाज) सुनिए।

मारथा कहो

रौनी मैंने आपसे पहले भी पूछा था मगर आपने जवाब नहीं दिया यह कौ
सी जगह है? कहां हूं मैं?

मारथा उस जगह जिसे तुम दुश्मनों की धरती कहते हो।

रौनी क्या?

मारथा हां कैप्टन मैं भी तुम्हारी दुश्मन हूं।

रौनी नहीं आप झूठ बोल रही हैं।

मारथा मैंने जिन्दगी में कभी झूठ नहीं बोला। कैप्टन यह रही तुम्हारी स्टेनग
उठाओ और खत्म कर दो अपने दुश्मन को।

रौनी (भावुक होकर) नहीं नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता।

मारथा दुश्मन के साथ हमदर्दी।

रौनी जब मैं जख्मी था तब आप भी तो मुझे खत्म कर सकती थीं।

मारथा जान लेना तो सैनिकों का काम है। मैं तो एक नर्स हूं।

रौनी मैं आप पर गोली नहीं चला सकता।

मारथा मगर क्यों?

रौनी इस क्यों का जवाब शायद मैं जीवन भर न दे सकूं।

मारथा मगर मैं जानती हूं।

रौनी क्या ?

मारथा यही कि तुम समझ रहे हो कि मैंने तुम्हारी जान बचाकर तुम पर कोई एहसान किया है।

रौनी सच यह ही तो है। कैसे मैं अपने ज़मीर की आवाज़ कुचल कर अपनी जान बचाने वाले की जान ले लू।

मारथा तुम्हारा ज़मीर है।

रौनी ज़मीर तो हर इन्सान में होता है मगर कभी कभी मर ज़रूर जाता है।

मारथा ज़मीर मरता नही सो ज़रूर जाता है। मगर तुम्हारा ज़मीर शायद मर चुका है। उठाओ अपनी स्टेनगन और

रौनी (बात काटते हुए) प्लीज मा जी ऐसा मत कहिए (रोता है)

मारथा मुझे माफ कर देना मेरे बच्चे। मुझे तुम्हे तकलीफ पहुँचाने का कोई हक नही।

रौनी फौज म रहते हुए मैं भी मानवता को भूल चुका थ। अब ऐसा नही है। मा जी। अब यह और खून नही बहेगा मगर मैं कर भी क्या सकता हू ?

मारथा वाकई तुम कुछ नही कर सकते। क्योकि तुम्हार देश का शासक लाशो के सिंहासन पर बैठ कर राज करना चाहता है। लोगो को रोटी का निवाला देने की बजाए उनके हाथ मे बारूद का गोला थमाना चाहता है।

रौनी देश की सुरक्षा भी तो ज़रूरी है। तभी तो हमने दूसरे देशो से बहुत से हथियार खरीदे।

मारथा किससे डर है आपको ? हमसे जिन्होंने हमेशा शांति का सदेश दुनियाँ के चारो तरफ बिखेरा।

रौनी दूसरे देश भी तो है जिनकी सरहदें हमारे देश के साथ लगती हैं।

मारथा मगर अटैक तो हम पर ही हुआ न। हम पर युद्ध थोप कर आपके शासक हमारी उन्नति के रास्ते मे बाधा बनना चाहते हैं।

रौनी ऐसी बात नही है।

मारथा ऐसी ही है। (पाज) हर देश की अपनी समस्याए होती हैं। उन समस्याओं से पडोसी देश फायदा उठाने की कोशिश करें तो (इतने मे चार पाच सैनिक अन्दर दाखिल होते है)

जौन पकड लो इन्हे (रौनी पर नज़र पडती है) ओह सर आप (सैल्यूट करता है) हम तो समझे थे कि

रौनी मर गया हू मैं

जौन यस सर। यह बुढिया कौन है ?

रौनी	एक औरत जिसका सब कुछ खत्म हो गया।
जोन	मगर यह तो अभी जिंदा है। बैरी इस बुढ़िया को बाहर ले जाकर शूट कर दो।
रौनी	नहीं जॉन तुम ऐसा नहीं कर सकते।
जॉन	दुश्मनों के साथ हमदर्दी। मैं कुछ समझा नहीं सर।
रौनी	यह नेक औरत हमारी दुश्मन नहीं है।
जान	सरहद के इस पार रहने वाला हर कोई हमारा दुश्मन है।
रौनी	हमारी दुश्मनी तो उनसे है जो हथियार उठाकर हमारा मुकाबला करते हैं यह मासूम लोग तो
जोन	सर आप ही कहा करते थे कि सैनिक को जजबाती होने का कोई अधिकार नहीं। मगर आज आप खुद
रौनी	तब मैंने इंसानियत को इतना करीब से नहीं देखा था।
जौन	और आज दगा की इंसानियत वो भी एक दुश्मन की।
रौनी	जॉन तुम शायद भूल रहे हो कि मैं तुम्हारा आफिसर हूं।
जौन	मैं जानता हूं सर मगर फौज का कानून सब पर एक समान लागू होता है। दुश्मन का जिंदा छोडना कानून की अवहेलना है और यह मैं नहीं होने दूंगा।
रौनी	अपने आफिसर का हुक्म न मानना भी एक बहुत बडा अपराध है। इस बात का तुम्हें अन्दाजा तो होगा।
जौन	यस सर
रौनी	तो फिर मैं तुम्हारा आफिसर तुम्हें हुक्म देता हूँ कि इस औरत को छोड दो।
जौन	लेकिन सर।
रौनी	(ऊँची आवाज में) इटज माई आडर जौन। अण्डरस्टेंड। (हाफता है) (जैसे उसे ऊँचा बोलने में बहुत कष्ट हुआ हो)
जौन	ओ के सर। मगर मैं आपकी शिकायत हायर अथारटी से जरूर करूँगा और उनसे पूछूंगा कि फौज में भावुक होने का हक क्या सिर्फ आफिसर को ही है हम जैसे प्यादे जो अपने राजा की रक्षा के लिए मरते हैं कटते हैं मगर कहते कुछ नहीं। क्या इस फौज में सैनिक के रैंक के साथ साथ कानून भी बदलता है मेरी मां मर गई मगर मुझे छुट्टी नहीं मिली। क्यों ?
रौनी	(धीमी आवाज में) मुझे दुःख है जौन कि मैं तुम्हें छुट्टी नहीं दे सका क्योंकि स्थिति तथा कर्नल की इजाजत नहीं देनी थी।
जौन	मगर इस दुश्मन की जान बचाने की इजाजत देनी है।

रौनी — जौन तुम समझते क्या नहीं ?

जौन — क्योंकि मैं समझना ही नहीं चाहता। मैं तो केवल एक ही बात जानता कि यह औरत हमारी दुश्मन है जिसको बचा कर आपने अपने लिए मुसीबतें खड़ी कर ली हैं।

रौनी — (बहुत धीमी आवाज़ में) देखो जौन मेरी हालत इस समय ठीक नहीं है मुझे यहां से ले चलो। इस औरत को मारना नहीं यह मेरा हुक्म है।

बरी — लगता है सर बेहोश हो गए।

जौन — अब तो इस बुढ़िया का मारना और भी आसान हो गया। कैप्टन रौनी को तो मालूम भी नहीं होगा।

बैरी — नहीं जौन मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा।

मारथा — इसे मत रोको बेटे। इस दुनिया में अब ज़िंदा रहने का कोई मकसद नहीं है। मुझे मारने से शायद इसके कंधे पर एक तगमा और लग जाए।

जौन — तो फिर तैयार हो जाओ।

बैरी — बेवकूफी मत करो जौन। निहत्ये और सिविलियन पर गोली चलाने की इजाज़त इन्सानियत नहीं देती।

जौन — मगर हमारा फौजी शासन तो देता है।

बैरी — फौजी शासन यह भी कहता है कि मृत्यु से लड़ रहे ज़ख्मी आफिसर को जल्द से जल्द हास्पिटल पहुँचाओ।

मारथा — तुम्हारा साथी ठीक कहता है। इसकी हालत ठीक नहीं है। यह मत समझना कि मैं मौत से डर कर ऐसा कर रही हूं। इसकी ज़िन्दगी मुझ से ज़्यादा कीमती है।

बैरी — उठाओ जौन। जल्दी करो।

जौन — तेरी किस्मत बहुत अच्छी है बुढ़िया।

बैरी — कुईक जौन कुईक। (कदमों की आवाज़ और हल्की गोलाबारी)

मारथा — (भावुक हो कर) कौन कहता है कि सरहद के उस पार रहने वाले सभी दुश्मन ही होते हैं।

संगीत अन्तराल

डॉक्टर — हैलो कैप्टन कैसा फील कर रहे हो ?

रौनी — ठीक हूं डाक्टर।

डाक्टर — गुड। नर्स टैम्परेचर

नर्स — नार्मल सर

डाक्टर — वैरी गुड। कैप्टन यह तुम्हीं हो जो इतनी जल्दी रिकवर कर गये और होता तो शायद बच भी न सकता।

रौनी — डाक्टर क्या लड़ाई अभी तक चल रही है ?

डॉक्टर नही सीज कायर हो चुका है।
रौनी थैंक गाड
डॉक्टर लडाई से डर लगने लगा है क्या ?
रौनी नही
डॉक्टर ता फिर ?
रौनी डरता हू कि एक दूसरे से आगे निकलन की दौड मे कही यह दुनिया ही खत्म न हो जाए।
डॉक्टर मैं कुछ समझा नही।
रौनी डॉक्टर तुम्ह सब से ज्यादा खुशी कब होती है ?
डॉक्टर जब मैं किसी को मौत के मु ह म वापिस ले आता हू।
रौनी तो तुम भी मानते हो कि जान लने से जान बचाना ज्यादा जरूरी है।
डॉक्टर हा
रौनी तो फिर क्या आज इन्सान ऐसी चीजो का आविष्कार कर रहा हू जिससे सिफ मौत ही मिलती है।
डॉक्टर कैप्टन जैसी तुम्हारी सोच है मैं उसकी सराहना करता हू। मगर हमें अपन दिल की बात जुबान पर लान का कोई अधिकार नही है।
रौनी मगर क्या ?
डॉक्टर क्योकि हमार दश म प्रजातन्त्र नही है यहा क फौजी शासक के कानो म लोगा के दिलो के धडकन की आवाज नही पहुँचती जानत हो क्या ?
रौनी क्योकि तडपते लोगो की चीखो की आवाज ज्यादा ऊची है।
डाक्टर जब सब कुछ जानते ही हो ता ऐसा क्यो साचते हो ?
रौनी डाक्टर यह भी तो जरूरी नही कि मेरा दिमाग भी वही सोचे जैसा इस देश पर शासन करने वाले सोचते हैं।
डॉक्टर तुम्हारी बाता स देश द्रोह की गध आती है।
रौनी यह सच नही है डॉक्टर। मुझे भी इस देश से उतना ही प्यार है जितना कि तुम्हे। लेकिन अपने जजबाता को रोकना मेरे लिए बहुत कठिन है। बहुत कठिन है डॉक्टर।
डॉक्टर रिलैक्स कैप्टन रिलक्स (पाज)
रौनी क्या मेरे घर सूचना भिजवा दी थी डॉक्टर।
डॉक्टर यैस कैप्टन। तीन दिन पहले टेलीग्राम दे दिया था।
रौनी तो फिर वो अभी तक क्यों नही आई ?
डॉक्टर धीरज रखो।
रौनी तुम शायद नहीं जानत इस समय मुझे अपनी पत्नी की कितनी कमी महसूस हो रही है ?

डाक्टर हम भी तो तुम्हारे पास हैं।

रौनी मगर तुम भी उचित कहने की हिम्मत नही रखते। मुझे तो यहा यही घुटन महसूस हो रही है।

डाक्टर मगर मैं तुम्हे अभी बिस्तर से उठने की इजाजत नही दे सकता। (नर्स अन्दर आती है)

नर्स सर कोई जूली नाम की लडकी कैप्टन रौनी से मिलने आई है।

रौनी जूली आ गई। डॉक्टर वो मेरी पत्नी है।

डाक्टर ठीक है मैं अन्दर भेजता हू।

रौनी थक्यू डाक्टर।

डॉक्टर शायद अब तुम्हें इस घुटन से थोडी सी राहत मिले।

रौनी हा डॉक्टर। मेरी जूली के विचार मुझसे अलग नही है। वो अपना दिमाग रखती है और अपनी मर्जी के मुताबिक सोचती है)।

डाक्टर ठीक है मैं उसे भेजता हू डॉक्टर बाहर जाता है जूली आती है।

जूली यह तुम्हे क्या हो गया रौनी (रोती है)

रौनी नही जूली नही रोना नही (जूली रोए जा रही है) मैं अभी जिन्दा हू जूली।

जूली भगवान के लिए ऐसा मत कहिए। मरें आपके दुश्मन।

रौनी कौन से दुश्मन ?

जूली जो सरहद के उस पार रहते है। उन्होने ही तो तुम्हारा यह हाल किया है।

रौनी नही जूली आज अगर मैं जिंदा हू तो उस नेक औरत की बदौलत जिसकी इसानियत ने मुझे यह सिखाया कि सरहद के पार रहने वाले भी तो दोस्त हो सकते है।

जूली दुश्मन दोस्त नही हुआ करते।

रौनी जूली मुझे यह जख्म लडाई ने दिये है।

जूली मै जानती हू।

रौनी तुम सब कुछ नही जानती। मैं बताता हू। लडाई मे दुश्मनो से बचते हुए हम भाग रहे थे कि नजदीक ही एक बम फटा और आखो के आगे अधेरा ही अधेरा। जब आख खुली तो एक बूढी औरत जिसे तुम दुश्मन कहती हो मेरे जख्मो पर मरहम रख रही थी।

जूली क्या ?

रौनी हा जूली। अगर वो औरत न होती तो तुम सुहागन नही विधवा होती।

जूली तो क्या मेरे सुहाग को दुश्मन ने बचाया।

रौनी उसे दुश्मन कहना दोस्ती का अपमान है।

जूली — आइ एम सारी रौनी। मैं तो ममी थी

रौनी — जूली अब शायद मैं फौज म न रह सकू

जूली — मैं तो पहले ही तुम्हे कहती थी मगर तुम पर तो सैनिक बनने का भूत स्वार था।

रौनी — सैनिक होना बुरी बात नही है जूली। मगर जनता की भावनाओ को कुचल कर सैनिक साम्राज्य तले निर्दोप सिवलियन को मौत के घाट उतारना मुझे अच्छा नही लगा डॉक्टर अन्दर आता है।

डाक्टर — सारी मैन आपको डिस्टब किया लकिन आना भी जरूरी था।

रौनी — क्या कोई खास बात है डाक्टर ?

डाक्टर — हा रौनी। यू आर अडर अरैस्ट।

रौनी — क्या ?

जूली — क्या। अण्डर अरैस्ट। लडाई म बहादुरी म लडने वाले को मैडल की जगह कैद।

रौनी — यह सब क्या है डॉक्टर ?

डाक्टर — मुझे अभी अभी आडर मिले है अगर देखना चाहो तो

रौनी — तुमने तो पढा ही होगा तुम ही बता दो क्या लिखा है ?

डॉक्टर — तुम पर देश द्रोही होने का इल्जाम है। तुम्हारे स्वस्थ होने के बाद तुम पर सनिक अदालत म मुकद्दमा चलेगा। तब तक तुम यहा नजरबद रहोगे और तुम स कोई मिल नही सकता।

जूली — मै भी नही।

डॉक्टर — आप भी नही मैडम। बाहर आर्मी के कास्टेबल पहरा देन के लिए आ गए हैं अब आपको जाना होगा।

जूली — तो क्या मैं रौनी स मिल भी नही सकूगी ?

डाक्टर — इसके लिए आपको हैडक्वाटर म इजाजत लेनी पडेगी।

रौनी — जाओ जूली जाओ। इस सनिक शासन के नियम भी बडे कठोर होते हैं मेरे साथ कही तुम भी जेल की मजारो म न पहुच जाओ।

जूली — तब तो मैं अपने आपको खुशनसीब समझूगी।

रौनी — नही जूली ऐसा मत सोचना। घर जाओ अपने सास ससुर का ख्याल रखना। अब बूढो को सहारे की जरूरत है। जिसे सिफ तुमने ही देना है। मैं शायद जिन्दगी म आने वाले तूफान का सामना कर सकूगा या नहीं।

सगीत अन्तराल

रौनी पर सनिक अदालत म मुकद्दमा चलता है।

वकील — तुम इस आदमी को जानते हो ?

जौन — जी।

वकील कौन है यह ?
जौन कैप्टन रौनी । जी मैं इनके अधीन काम करता हू
वकील तुम्हे जो पूछा जाए सिर्फ उसी का जवाब दो ।
जौन जी ।
वकील इक्कीस दिसम्बर शाम पाच बजे तुम कहा थे ।
जौन कैप्टन रौनी के पास जो उस समय जख्मी हालत म बिस्तर पर पडा था ।
वकील और कौन कौन थे वहा ?
जौन मेरे साथ मेरा साथी बैरी और एक दुश्मन ।
वकील कैप्टन रौनी के खिलाफ रिपोर्ट तुमने ही लिखवाई थी ?
जौन जी ।
वकील जो कुछ भी हुआ विस्तार से बताओ ।
रौनी मैं बताता हू वहा क्या हुआ था ?
कर्नल (गुस्से स) रौनी । सैनिक अदालत के नियमो की जानकारी रखते हो या नही ?
रौनी यस कर्नल ।
कर्नल तो जब तुमसे कुछ पूछा जाए तभी बोलना । कार्यवाही जारी रखो ।
वकील हा तो जौन वहा जो कुछ भी हुआ अदालत को बताया जाए ।
जौन मैं और बैरी जब एक घर म गए तो वहा कैप्टन रौनी थे और वही पर जब मैंने एक दुश्मन को शूट करना चाहा तो कैप्टन रौनी ने मुझे ऐसा न करने का हुक्म दिया और मैंने वो हुक्म माना । क्योकि कैप्टन रौनी मेरे आफिसर हैं ।
वकील अब किसी भी तरह का कोई शक नही रह जाता कि कैप्टन रौनी के ऊपर जो देशद्रोही होने का मुकद्दमा चल रहा है उचित है या नही । अगर फौज म कैप्टन रौनी जैसे लोग दुश्मनो के साथ हमदर्दी करने लगे तो देश के दुश्मन जब चाहे हमे गुलामी की जजीरो मे जकड सकते हैं । कैप्टन रौनी का अपराध मामूली नही है । इससे हमारी डिफेंस को भी खतरा हो सकता है । इसलिए मैं अदालत से रिक्वेस्ट करूँगा कि इसे कडी से कडी सजा दी जाए ।
कर्नल तुम्हे अपनी सफाई म कुछ कहना है ?
रौनी यस कर्नल । (पाज) मेरे ऊपर लगाया गया इल्जाम कि मैंने दुश्मन के साथ हमदर्दी की है बेबुनियाद है । बार बार यह कहा गया कि मैंने एक दुश्मन की जान बचाई । मैं अदालत से पूछना चाहूगा कि वो दुश्मन कौन था ? (पाज) वो दुश्मन एक लाचार और बदनसीब बूढी औरत थी जिसने मुझे जख्मी हालत म मौत की दहलीज से वापिस खीच कर मेरी जान

बचाई। लड़ाई म उस क घर के सभी लोग मारे गए। वो मुझे मारकर उनका बदला भी ले सकती थी। मगर उसकी इसानियत न उसे ऐसा करन की इजाजत नही दी और अब मुझसे यह पूछा जा रहा है कि मैंने इसानियत क मुह पर तमाचा क्यो नही मारा ?

वकील (ताली बजाता है) एक्सीलेन्ट। कैप्टन रौनी सैनिक होन के साथ-साथ एक अच्छे कहानीकार भी है। मिनटो मे एक दिलचस्प वाक्य उन्होंने अदालत को बताया जो यह दर्शाता है कि कैप्टन रौनी भावना म बह कर फौज के उस नियम को भूल गया कि फौज का निर्माण जज्बात की बुनियाद पर नही होता।

रौनी फौज मे नौकरी करन वाले भी तो इसान हैं पत्थरो क तराशे हुए बुत नही।

वकील तुम्हारी बातो से सौफीसदी गद्दार होने की बू आती है। मैं अदालत से इसकी सख्त सजा की सिफारिश करता हू ताकि दोबारा कोई कैप्टन रौनी जैसा बनने की कोशिश न करे।

रौनी मैं अदालत से पूछना चाहता हू कि दुनिया के किस कानून मे लिखा है कि सिवलियन पर गोलिया चलाई जाए।

वकील जिस देश के तुम नागरिक हो वहा किसी दूसरी दुनिया का कोई भी कानून नही माना जाता।

रौनी तो फिर बदल डालो इस कानून को जिसम इसानियत की हत्या होती हो। बदल डालो इस सैनिक शासन को जिसम इसान के मुह से रोटी के नवाले छीन कर हाथ मे बन्दूक थमाई जाती हो।

कर्नल (गुस्से से) कैप्टन रौनी। इस अदालत मे ऊँचा बोलना भी एक अपराध है।

रौनी इस देश म जन्म लेना भी एक बहुत बडा अपराध है कर्नल साहब। जहा बच्चा जन्म लेते ही विदेशी ताकतो का कर्जदार होता है।

कर्नल तुम शायद भूल रहे हो कि तुम कहा हो और किससे बात कर रहे हो ?

रौनी नही सर मैं बिल्कुल नही भूला कि मै किसस बात कर रहा हू। मुझे सब कुछ याद है और ये भी याद है कि किस तरह पिछले दस सालो से प्रजातन्त्र का लालच देकर तानाशाही के चाबुक से भोलीभाली जनता का मास नोचा जा रहा है।

कर्नल अब बहुत हो चुका रौनी। अब तुम्हे इस अदालत से रहम की उम्मीद नही रखनी चाहिए। इस देश के कानून क अनुसार हर देशद्रोही को मौत की सजा मिलती है और तुम्हारा देशद्रोही होना भी प्रमाणित हो चुका है इसलिए तुम्हे सजाए मौत सुनाई जाती है।

रौनी (हँसता है) इस सैनिक शासन से और उम्मीद भी क्या रखी जा सकती है। (पाज) मैं मौत से नहीं डरता। जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी होगी। मगर मृत्यु स्वाभाविक होनी चाहिए। लेकिन इस धरती के तानाशाह शासक जीवन और मरण की मोहर अपनी इच्छा से लगाते हैं। मौत की सज़ा मेरे लिए सजा नहीं एहसान है मुझ पर इस घुटन में तो सांस लेना भी मुश्किल हो गया था। भगवान से जाकर पूछूंगा कि इन्सान को इतना अक्लमन्द क्या बनाया कि वो अपने ही आविष्कारों से अपना ही सर्वनाश कर रहा है। पूछूंगा कि आज सभ्यता इतनी उन्नति क्यों कर गई कि आज इन्सान दूसरे के हिस्से की रोटी छीनना अपना अधिकार समझता है। क्यों आज प्रजातन्त्र पर तानाशाही की हुकूमत है। क्यों आज स्याह अन्धेरे रोशनियों को निगल रहे हैं। अगर ऐसा ही होता रहेगा तो मुझे दूसरे जन्म की कोई इच्छा नहीं।

□

फूलों की चुभन

पात्र परिचय

विद्यानन्द
पार्वती
विकास
इन्दु
अयोध्या प्रसाद
सुमित्रा
सुरेश
प्रिंसिपल
सुनार
एक आदमी
चपड़ासी

(प्रिंसिपल के कमरे में एक आदमी आता है, जिसका नाम अयोध्या प्रसाद है)

अयोध्या प्रसाद — क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?

प्रिंसिपल — ओह, सेठ जी आप ? आपको इजाज़त लेने की क्या जरूरत है ? आप तो मालिक हैं आपके ही चंदे से तो यह स्कूल चलता है।

अयोध्या प्रसाद — हूं ! मेरे ही चंदे से यह स्कूल चलता है शायद यह बात भूल चुका है विद्यानंद। आप उसे यहां बुलाइये इसी वक्त।

प्रिंसिपल — अभी पीरियड खत्म होने में कुछ समय है और क्लास बीच में छोड़कर

अयोध्या प्रसाद — वो यहां आ नहीं सकता, यही कहना चाहते हैं न आप ?

प्रिंसिपल — जी हां ! विद्यानंद जी के कुछ असूल हैं जिन्हें वे किसी भी कीमत पर नहीं तोड़ेंगे। आप पांच मिनट इन्तज़ार कीजिये। उनका नैक्स्ट पीरियड फ्री है। मैं सूचना भिजवा देता हूं। (घण्टी बजाता है। चपड़ासी अन्दर आता है)

चपड़ासी — जी साहब !

प्रिंसिपल — ऐसा है कि विद्यानंद जी से कहना कि मैंने बुलाया है।

चपड़ासी — जी बहुत अच्छा। (बाहर चला जाता है)

प्रिंसिपल — वो 5 7 मिनट में पहुँच ही जाएँगे । आखिर बात क्या है ? मुझे भी तो बताइये सेठ जी ?

अयोध्या प्रसाद — प्रिंसिपल साहब आप उसे अच्छी तरह से समझा दीजिये कि ऐसी हरकत अयोध्या प्रसाद फिर दोबारा सहन नहीं करेगा ।

प्रिंसिपल — क्या कोई गलती हो गई है विद्यानन्द जी से ?

अयोध्या प्रसाद — बहुत बडी गलती की है । उसने मेरी औलाद के मुँह पर नहीं, बल्कि मेरे मुह पर तमाचा मारा है ।

प्रिंसिपल — तो क्या सुरेश को ?

अयोध्या प्रसाद — हा ! कल उसने सुरेश की पिटाई की । अयोध्या प्रसाद के स्कूल का एक मामूली सा मास्टर, अयोध्या प्रसाद के ही लडके के साथ इस तरह का बर्ताव करे । मेरे लिए यह बहुत शर्म की बात है ।

प्रिंसिपल — मगर मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हू कि उसने यह सब बेवजह नहीं किया होगा ।

अयोध्या प्रसाद — मैं यह सब कुछ नही जानता । सुरेश इस स्कूल के सभी विद्यार्थियों से अलग है क्यो कि वो मेरा लडका है और उससे सबका व्यवहार भी अलग ही होना चाहिये ।

प्रिंसिपल — जी मैं आपका सदेश सब तक पहुचा दूगा ।

(स्कूल मे पीरियड खत्म होने की घण्टी बजती है और साथ में बच्चों का शोर गूजता है विद्यानद के कदमो की आवाज और उसका प्रिंसिपल के आफिस का दरवाजा खोलना)

विद्यानद — क्या मैं अदर आ सकता हू ?

प्रिंसिपल — आईये विद्यानद जी, हम आपका ही इतजार कर रहे थे । बैठिये ।

विद्यानद — नमस्कार सेठ जी !

प्रिंसिपल — सेठ जी आप से नाराज हैं ।

विद्यानद — क्या मुझसे कोई भूल हुई ?

अयोध्या प्रसाद — बहुत बडी भूल विद्यानद ! तुमने अपनी हैसियत को नज़र अदाज करके मेरे गिरेबान पर हाथ डालने की भूल की ?

विद्यानद — मैंने अपनी हैसियत भूल कर आपके गिरेबान पर हाथ डाला ? सेठ जी मैं कभी भी अपनी हैसियत नही भूला । हमेशा यह याद रखता हू कि मैं इस स्कूल का एक मामूली सा अध्यापक हूँ । आपका गिरेबान तो बहुत ऊंचा है उस तक मेरा हाथ नही पहुच सकता ।

अयोध्या प्रसाद — तो फिर क्यो मारा था मेरे लडके के गाल पर तमाचा ?

विद्यानद — क्योकि उसने अनुशासन तोडा था ।

अयोध्या प्रसाद — और तुम यह भी भूल गये कि वो किसका लडका है ?

विद्यानद — मेरी क्लास मे पढने वाला प्रत्येक विद्यार्थी एक समान है । मेरा

व्यवहार सभी के साथ एक जैसा होता है। जान बूझ कर की गई गलती को क्षमा नही किया जा सकता। अनुशासन की सीमा लाघ कर अभद्र व्यवहार करने वाले को सजा जरूर मिलेगी। चाह वो आपका ही लडका क्यो ना हो।

अयोध्या प्रसाद — विद्यानद तुम यह भूल रहे हो कि तुम किससे बात कर रहे हो।

विद्यानद — सेठ जी मैं अच्छी तरह जानता हू कि मैं किससे बात कर रहा हू। मैं उस पिता से बात कर रहा हू जो अपने बेटे का भविष्य उज्ज्वल बनाने की बजाए उसे गुमनामी के अधेरे म धकेलने की कोशिश कर रहा है। मैं यहा ज्यादा देर नहीं रुकू गा क्याकि कुछ विद्यार्थी लाइब्रेरी म मेरा इतजार कर रहे होंगे। जाने से पहले इतना जरूर कहूगा कि आप उसक भविष्य से खिलवाड कर रहे हैं सेठ जी! (विद्यानद का प्रस्थान)

अयोध्या प्रसाद — दखा प्रिंसिपल साहब, किस प्रकार अपनी जुबान से जहर घोल रहा था। अब और सहन नहीं होता।

प्रिंसिपल — सेठ जी आप इस स्कूल मे सब कुछ ह। कोई फैसला करने से पहले आप हर पहलू पर अच्छी तरह से सोच विचार लें।

(बाहर चपडासी एक आदमी को अदर आन से रोकता है)

आदमी — मैं प्रिंसिपल स मिले बगैर नही जाऊगा।

चपडासी — आज प्रिंसिपल साहब किसी स नही मिलेंगे अदर मीटिंग हो रही है। तुम अदर नही जा सकते।

आदमी — मैं जरूर जाऊगा। मै प्रिंसिपल से मिलना चाहता हू। (शोर प्रिंसिपल तक पहुचता है)

प्रिंसिपल — क्या बात है ? यह शोर क्या मचा रखा है ?

चपडासी — साहब यह आदमी (इतनी दर म वो आदमी प्रवेश करता है)

आदमी — साहब मैं बहुत दूर से आपसे मिलन आया हू और यह अंदर आने ही नही देता था।

प्रिंसिपल — आप बैठिये। तुम जाओ।

आदमी — साहब मैं एक गरीब आदमी हू। सडक के एक कोने म छाबडी लगाता हू और रात को रिक्शा भी चलाना पडता है तब कही जाकर परिवार का गुजारा मुश्किल से हो पाता है।

प्रिंसीपल — मैं आपक लिय क्या कर सकता हू ?

आदमी — मेरा लडका इसी स्कूल मे पढता है। कल उसने बताया कि जिस क्लास म वो पढता है वहा का अनुशासन ना के बराबर है और उसका भविष्य वहा सुरक्षित नहीं है।

प्रिंसीपल — फिर क्या चाहते हैं आप ?

आदमी — मै चाहता हू कि आप उसका सैक्शन बदलकर विद्यानन्द जी के पास कर दें, बस फिर मैं निश्चित हो जाऊँगा।

प्रिंसीपल — शायद आप विद्यानन्द जी की बैंत के बारे मे कुछ नही जानते वो अपने विद्यार्थियो के साथ कठोरता से पेश आते है।

आदमी — कठोर रवैया तो कभी कभी मा बाप भी अपने बच्चो के साथ अपनाते है और गुरु का दर्जा उनसे कम नही है साहब, अगर मेरा लडका गलती करेगा तो उसे सजा मिलनी ही चाहिये। तभी तो उसे अच्छे बुरे का ज्ञान होगा। मैं तो यही चाहता हूँ साहब कि मेरी दिन रात की मेहनत व्यर्थ ना जाए और मेरे बच्चे का मुस्तकबिल ऊँचा हो। यह तभी मुमकिन होगा जब वो विद्यानन्द से पढेगा।

प्रिंसीपल — ठीक है उसका सैक्शन चेंज हो जाएगा। आप बाहर इतजार कीजिये।

आदमी — बहुत बहुत धन्यवाद साहब। मैं आपसे बाद मे मिलता हूँ। (बाहर चला जाता है)

प्रिंसीपल — अब आप ही बताए सेठ जी, एक तरफ आप है और दूसरी तरफ यह गरीब आदमी जो अपने बेटे को विद्यानन्द से पढवाना चाहता है। अब फैसला आपके हाथ मे है। होगा तो वही जो आप चाहेगे। अगर आप मेरी राय जानना चाहते है तो मैं यही कहूँगा कि अध्यापक और विद्यार्थी के पवित्र रिश्ते के दरम्यान मा बाप को नही आना चाहिये।

अयोध्या प्रसाद — आप ठीक कहते हैं प्रिंसीपल साहब! बेटे के प्यार ने मेरी आखो के सामने नासमझी की दीवार खडी कर दी थी।

सगीत अतराल

विद्यानन्द का घर उसकी बीवी पार्वती और बेटा विकास

पार्वती — विकास बेटे!

विकास — क्या बात है मा?

पार्वती — यह ले खाना खा ले!

विकास — ओह हो मम्मी आज फिर दाल?

पार्वती — बेटे तेरे पिता जी को अच्छी लगती है ना इसीलिये बनाई थी।

विकास — उनको अच्छी लगती है तो उन्हे ही खिलाओ। मैं यह बिल्कुल नही खाऊँगा।

पार्वती — अच्छे बच्चे जिद नही किया करते।

विकास — मैं कोई अच्छा बच्चा नही हूँ।

पावती	तू तो मेरा बड़ा अच्छा बेटा है आ मेरे पास आ, मैं तुझे अपने हाथ से खिलाती हूं।
विकास	मैं यह खाना कभी नहीं खाऊँगा (और हाथ से खाने की थाली नीचे फेंक देता है और उसी समय विद्यानन्द भी आता है)
विद्यानद	(गुस्से मे) विकास ! यह क्या बदतमीजी है ? यह क्यों किया ?
पावती	रहने भी दीजिये बच्चा है, गलती हो गई।
विद्यानद	यह गलती इसने जानबूझ कर की है इसने खाने को नीचे फेंक कर अन्न का अपमान किया है ! क्यों ?
विकास	क्योंकि मुझे यह दाल अच्छी नहीं लगती।
विद्यानन्द	(थप्पड़ मारता है) आगे जुबान चलाता है ? (बच्चा रोता है)
पार्वती	अब बस भी कीजिये। मार ही डालेंगे क्या ? चल बेटे आ मेरे साथ।
विद्यानद	पावती तुम्हारी यही बातें तो उसे बार बार गलती करने के लिये उकसाती है।
पावती	माँ हूँ ना। पत्थर दिल तो नहीं, आपकी तरह।
विद्यानद	तो तुम क्या समझती हो कि मेरे सीने में जो धड़कता है वो दिल नहीं ? नहीं पार्वती ऐसा मत कहो मैं नहीं चाहता कि माँ की ममता और बाप का प्यार बेटे को आसमान की बुलंदियों को छूने में बाधा बन जाए।
पावती	मगर आपका यह सख्त रवैया उसके दिल में कहीं आपके लिये नफरत ना भर दे। चल बेटा
विकास	(रोते हुए) माँ क्या पिता जी मुझे बिलकुल प्यार नहीं करते ?
पावती	करते है बेटे, बहुत प्यार करते हैं तुझे !
विकास	नहीं माँ वो तो सदा ही मुझे पीटते रहते हैं। ऐसा क्यों मां ?
पावती	इसमें भी शायद तेरी ही कोई भलाई हो।

(संगीत अन्तराल)

पावती	चाय बनाऊँ आपके लिये ?
विद्यानद	नहीं दिल नहीं कर रहा।
पावती	विकास को आप से एक शिकायत है।
विद्यानन्द	मुझसे ? क्या शिकायत है उसे ?
पावती	उसका ख्याल है कि आप उसे प्यार नहीं करते।
विद्यानन्द	उसका यह ख्याल ठीक नहीं है पावती। एक पिता अपने बेटे से प्यार नहीं करता ? यह असंभव है। तुम क्या समझती हो कि उसे

सजा देकर मुझे कोई खुशी होती है ? सजा उसे मिलती है और निशान मेरे दिल पर बनते है, मगर मैं विकास की तरह वो निशान तुम्हे दिखा नहीं सकता क्या करूँ अनुशासनहीनता भी तो बर्दाश्त नही होती । पावती मैं चाहता हू विकास को इस समाज की ऊँच-नीच की समझ अच्छी बुरी बातो का ज्ञान बडो का आदर और जिंदगी मे कुछ बनने की लालसा हो अगर इन सब बातो के लिये कभी कभी मैं सख्ती से पेश आता हू तो कोई गलती तो नही करता ।

पावती — मैं आपको अच्छी तरह समझती हूँ मगर क्या करूँ मेरे सीने मे भी दिल है जिसमे मा की ममता कूट कूट कर भरी हुई है । मुझसे उसका इस तरह रोना सहन नही होता ।

विधानद — सहन करना ही होगा पावती । अगर ऐसा नही करोगी तो उसके भविष्य की इमारत की नीव कमजोर पड जाएगी । विकास कहा है ?

पावती — यही है । बडे प्यार से समझाना पडा उसे ।

विधानद — विकास इधर आओ बेटे !

विकास — जी ।

विधानद — बेटे तुम्हारे पास दो घण्टे का समय है तुम खेलना चाहो तो बाहर जाकर अपने दोस्तो के साथ खेल आओ ।

पावती — हा हा बेटे जाओ ।

विकास — नही मा, दिल नही कर रहा ।

पावती — जाओ बेटे, जिद नहीं करते ।

विधानद — रहने दो पावती अगर वो नही जाना चाहता तो जैसी उसकी इच्छा (विकास चला जाता है ।)

पावती — देखा अभी तक आपसे

विधानद — नाराज है । मगर इसका मुझे कोई दुख नही है कि बेटा, बाप से नाराज है । मैं तो अपना फर्ज पूरा कर रहा हू । जब मेरे हाथो से खिला हुआ फूल अपनी सुगन्ध चारो तरफ बिखेरेगा उस वक्त मुझे कितनी खुशी होगी शायद इसका अन्दाजा तुम ना लगा सको ।

(दो घण्टे पश्चात) (सगीत अन्तराल)

विकास — मा मैं जरा बाहर खेल आऊँ ?

विधानद — विकास !

विकास — जी ।

विधानद — कहा जा रहे हो ?

विकास	खेलने।
विद्यानद	तुम बाहर खेलने नही जा सकते।
पावती	जाने भी दीजिये ना।
विद्यानद	तुम बीच मे मत बोलो पावती। तुम बाहर नही जाओगे विकास क्योकि यह तुम्हारा पढने का टाइम है। जब तुम्हारे खेलने का टाइम था, तब मैंने तुम्हे खेलने के लिये कहा था लेकिन तुमने वक्त की एहमियत को नहीं समझा।
बिकास	नही मम्मी मैं जाऊँगा मैं जाऊँगा मम्मी।
पावती	बेटे अपने पापा का कहना मानो जैसा वो कहते हैं वैसा करो।
विद्यानद	जाओ विकास अपनी किताबें लेकर आओ।
विकास	नही मम्मी, मैं नही पढूगा मैं जाऊँगा बाहर खेलने के लिय।
विद्यानन्द	(गुस्से म) विकास एक मिनट मे अपनी किताबें यहा लाओ वर्ना मैं तुम्हारी खाल उधेड दूगा।
पावती	जाओ बेटे जिद ना करो।
बिकास	अच्छा मम्मी।
पावती	यह आपका स्कूल नही घर है और घर मे इस तरह आपको
विद्यानद	पावती घर हो या स्कूल अनुशासन तो हर जगह ही होना चाहिये। इस के बिना इसान अधूरा है।
पावती	आपकी बातें तो मेरी समझ से बहुत बाहर की हैं।
विद्यानद	लेकिन वक्त तुम्हे एक दिन सब कुछ सिखा देगा और तब तुम्हे यह अहसास होगा कि एक बाप होने के नाते या एक अध्यापक होने के नाते मैंने जो कुछ भी किया उचित ही किया। सोचो पावती जरा सोचो तब तुम्हारे दिल को कितनी खुशी होगी। जब लोग कहगे कि यह है विकास की मा उस विकास की मा जिसका बेटा आज समाज की बहुत ऊँची पदवी पर है। उस दिन मैं समझूगा कि मेरी महनत बेकार नही गई।
	(सगीत अतराल)
	दस साल के अतराल के बाद।
अयोध्या प्रसाद	सुमित्रा! आज मेरी जिंदगी का सबसे खुशी का दिन है।
सुमित्रा	वो तो होगा ही। आज हमारा बेटा सुरेश पूरे दस साल बाद अमेरिका से बहुत बडा डॉक्टर जो बन के आ रहा है।
अयोध्या प्रसाद	कितना बडा हो गया होगा वो।
सुमित्रा	आप जितना ऊँचा तो हो ही गया होगा।
अयोध्या प्रसाद	मुझसे भी ऊँचा सुमित्रा।

सुमित्रा	आपने भी तो उसे इस बुलन्दी पर पहुँचाने के लिये कोई कसर नही छोडी ।
अयोध्या प्रसाद	सुमित्रा जब आज से कोई 15 साल पहले की बात याद करता हू तो ऐसा लगता है कि मैं अपने बेटे के भविष्य के साथ खिलवाड करने चला था । मगर विद्यानन्द जी ने मेरी आखें खोल दी और मुझे यह महसूस करवाया कि अपनी औलाद के साथ इतना प्यार ना करो कि वो प्यार उसका दुश्मन बन जाए ।
सुमित्रा	और उसके बाद ही तो आपने उसकी हर गलत बात को रोकने के लिये उस पर पाबदिया लगानी शुरू कर दी ।
अयोध्या प्रसाद	अगर मैं यह सब कुछ नही करता तो सुरेश जहा आज है वहा कभी न होता । विद्यानद द्वारा दिखाया गया रस्ता कठिन जरूर होता है मगर उस रास्ते से गुजर जाने के बाद इसान जब पीछे मुडकर देखता है तो अपने आप को एक नई दुनिया मे महसूस करता है और उस दुनिया की बुनियाद खोखली नहीं होती ।
सुमित्रा	वो तो है ही । आप बातें ही करते रहेंगे या सुरेश को लाने एयरपोर्ट भी जाएँगे ।
अयोध्या प्रसाद	ओह हा बातों बातो मे तो ध्यान ही नही रहा । मैं अभी गया और जल्दी ही सुरेश को लेकर आया ।
	(अयोध्या प्रसाद का प्रस्थान । गाडी स्टार्ट होने की आवाज़ और कार तेज़ी से भागती है)
	(सगीत अतराल) (गाडी रुकने की आवाज़)
अयोध्या प्रसाद	तुम इस सामान की चिंता ना करो सुरेश । पहले मम्मी से मिल लो बडी देर से तुम्हारा इतज़ार कर रही होगी ।
सुरेश	अच्छा पिता जी !
अयोध्या प्रसाद	आओ अदर चलें । सुमित्रा लो भई तेरे सुरेश को लेकर हम आ भी गये ।
सुरेश	मा !
सुमित्रा	कितना बडा हो गया है रे तू ? क्या कभी अमरीका मे मम्मी की भी याद आई थी ?
सुरेश	बहुत आई थी मम्मी । कभी कभी तो दिल करता था कि छोड दू ये सब कुछ और भाग जाऊ अपनी मम्मी के पास । मगर पिता जी की उम्मीद को नाउम्मीद मे कैसे बदल सकता था ?
अयोध्या प्रसाद	शाबास बेटे, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी ।
सुरेश	पिता जी आपके आशीर्वाद ने और आपके अनुशासन ने मुझे इस

काबिल बनाया कि आज आपका बेटा डॉक्टर बन कर आपके सामने खडा है ।

अयोध्या प्रसाद — नही बेटे इस ऊचाई तक पहुचने का श्रेय मुझे नही विद्यानद जी को है उन्होने ठीक समय पर चेतावनी देकर मुझे एक गलत रास्ते पर जाने से रोक लिया । मैं चाहूगा कि हम विद्यानद जी के पास चलना चाहिये । तुम्हे मेरे नही उनके आर्शीवाद की जरूरत है ।

(सगीत अतराल)

दरवाजा खटखटाने की आवाज !

विद्यानन्द — पार्वती जरा देखना बाहर कौन आया है (पार्वती दरवाजा खोलती है)

अयोध्या प्रसाद — क्या विद्यानद जी घर पर है ?

पार्वती — जी आईये !

विद्यानद — सेठ जी आप ? आईये बैठिये ।

अयोध्या प्रसाद — विद्यानद जी यह वही सुरेश है जिसने आपसे प्रेरणा लेकर डाक्टरी की । यह आज ही अमरिका से आया है । इनके चरण छूओ बेटे ।

सुरेश — मुझे आशीर्वाद दीजिए गुरुजी कि मैं दुखिया की सेवा कर सकू ।

विद्यानद — सुरेश सच मानो जब मैं अपने विद्यार्थिया को और उनका स्टेटस देखता हू तो बहुत खुशी होती है ।

सुरेश — जी यह सब तो आपकी ही बदौलत है । विकास कहा है ? दिखाई नही दे रहा।

विद्यानन्द — विकास आई ए एस आफिसर बन गया है बस ट्रेनिंग खत्म करके एक दो दिन म आ जाएगा ।

सुरेश — यह तो बहुत ही अच्छा है । मुझे पूरा यकीन है कि आपके द्वारा सींचा गया फूलो का पौधा अपनी खुशबू चारो तरफ जरूर बिखेरेगा ।

अयोध्या प्रसाद — दूसरो को मुस्तकबिल बनाने वाला क्या अपनी औलाद का मुस्तकबिल बनाने म कोई कसर छोड रखेगा । विद्यानद जी विकास को आई ए एस करवाने म आपको बहुत मेहनत करनी पडी होगी ।

विद्यानन्द — सेठ जी यह तो मेरा फर्ज था ।

अयोध्या प्रसाद — सुरेश को तुम अपने हाथो से ही

सुरेश — गुरु जी मैं आपके लिये यह तोहफा लाया हू । मैंने अगर अपनी डॉक्टरी की मजिल तक का रास्ता बिना किसी रुकावट के पूरा

किया है तो सिफ आपकी वदौलत और मैं अपने गुरु जी को छोटी सी दक्षिणा देना चाहता हू । मेरी गुरु दक्षिणा स्वीकार कीजिये ।

विद्यानद — मैं द्रोणाचाय नही हू । मैं तो स्कूल का एक मामूली सा अध्यापक हू जो अब रिटायर भी हो चुका है । सुरेश, अगर तुम आज इस मजिल तक पहुचे हो तो इसमे तुम्हारी अपनी मेहनत भी तो है । तुम मेरी वदौलत यहा तक नही पहुचे हो अगर ऐसा होता तो मेरी क्लास का हर विद्यार्थी कुछ न कुछ जरूर वनता ।

सुरेश — गुरु जी शायद आपको मालूम ना हो कि अस्सी प्रतिशत विद्यार्थी जिन्होने आपसे शिक्षा ग्रहण की । आज देश की वडी वडी पदवियो पर काम कर रहे हैं सिफ आपकी वजह स ।

विद्यानन्द — सुरेश मैं उन बीस प्रतिशत विद्यार्थियो की बात कर रहा हूँ जो आज गुमनामी के अन्धेरे मे अपना अस्तित्व तलाश कर रहे होंगे । क्या वो मेरे विद्यार्थी नही थे ? क्या मैं उनको क्लास म मन लगा कर नही पढाता था । फिर आज उनका भविष्य उज्जवल क्यो नही हुआ ? सिफ इसीलिये कि मेरे द्वारा बताया गया रास्ता उन्हे काटो से भरा हुआ नजर आता था । वे भी तो मेरी ही बगिया के फूल थे । उन उन फूलो की चुभन मैं आज भी अपने सीने मे महसूस करता हू । मैं तो सिफ रास्ता दिखाता था उस पर चलने वाले अगर अपनी मजिल पा लेते थे तो सिफ अपनी मेहनत और लगन के बलबूते पर ।

अयोध्या प्रसाद — विद्यानन्द जी सुरेश बडे प्यार से यह आपके लिये अमेरिका से लाया है । इसे स्वीकार कीजिये ।

विद्यानन्द — नही सेठ जी मैं उस चीज़ को कैसे स्वीकार कर लू जिसका कि मैं हकदार नही हू ।

सुरेश — आप ही तो हकदार हैं इसके । आपकी प्रेरणा ने ही तो मेरी सोई हुई भावनाओ को जगाकर मुझे इस काबिल बनाया कि मैं समाज मे सिर ऊँचा करके चल सकू ।

विद्यानन्द — सुरेश इतना ऊँचा सिर करके मत चलना कि नीचे तुम्हें कुछ दिखाई ही ना दे बेटे नीचे जरूर देखना जब देखोगे तो तुम्हें लोगो की भीड मे कुछ जाने पहचाने गरीब और लाचार चेहरे जरूर दिखाई देंगे जो अपने जीवन का एक एक पल इसी आशा के साथ व्यतीत कर रहे हैं कि कोई तो होगा जो उनके घावो पर मरहम रख सके । यही काम तो करना है तुझे ।

सुरेश — मैं ऐसा ही करूँगा। मैंने यह प्रोफैशन अपनाया ही इसीलिय है कि गाव गाव जाकर उन लोगो के काम आ सकू, जो स्वाथ की बुनियाद पर खडे अस्पतालो की इमारतो म अपना इलाज करवान मे असमथ हं। मुझे आशीर्वाद दीजिये गुरु जी।

विद्यानद — सुरेश, तुम्हारे विचार सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। सेठ जी आपके घर का चिराग एक दिन इस समाज म फैले हुए अधेरे को उजाल म बदल देगा ऐसा मेरा विश्वास है।

(सगीत अन्तरान

(विकास आते हुए)

विकास — मा मा कहा हो तुम ?

पावती — आ गया विकास तू। कैसी रही तेरी ट्रेनिंग।

विकास — एक दम फस्ट क्लास मा। अब तो तेरा बेटा डिप्टी कमिश्नर हो गया है।

पावती — आज तुम्हारे पिता जी की मेहनत सफल हुई। तेरा लाख लाख शुक्र है भगवान।

विकास — पिता जी की मेहनत ? नही मा पिता जी की नही मेरी मेहनत कहो मा। उन्होने तो सारी जिंदगी बेंत का सहारा लेकर मुझे नालायक बनाने मे कोई कसर नही छोडी। यह तो मेरी अपनी हिम्मत थी कि आज मैं आई ए एस आफिसर हू।

पावती — विकास यह क्या कह रहे हो तुम। मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नही थी।

विकास — मुझे भी पिता जी से ऐसी उम्मीद कभी नही थी। उन्होने कभी भी मुझे अपनी औलाद की तरह नही चाहा। ऐसा व्यवहार तो लोग दुश्मनो के साथ भी नही करते। मेरी पीठ पर उनकी बेंत के द्वारा बनाई गई उल्टी सीधी लकीरें मुझसे सिफ यही कहती हैं कि उन्होने एक बाप का फज अच्छी तरह से नही निभाया।

पावती — बद करो बकवास ! तुम्हे अपने पिता जी के बारे म ऐसा कहने का कोई हक नहीं। तुम्हे क्या मालूम कि वो तुम्हे कितना प्यार करते हैं।

विकास — प्यार ? प्यार का मतलब भी पता है उनको। अगर उन्हे प्यार था तो अपने असूलो से अनुशासन से स्कूल से और अपने हाथ म पकडी हुई बेंत स ! अगर नही था तो सिफ अपनी औलाद से।

पावती — विकास तुम्हारी बातो से ऐसा लगता है जैसे तुम्हे अपने पिता जी स नफरत हो गई है।

विकास	मुझे उनसे नफरत नहीं है मां। मुझे अगर नफरत है तो उनके व्यवहार से उन तरीकों से जो उन्होंने मुझ पर इस्तेमाल किये
पार्वती	विकास अगर तुम ऐसा समझते हो तो यह एक बहुत बडी गलत फहमी के सिवा और कुछ नहीं है। सोचो जरा ठण्डे दिमाग से सोचो कि यह उनकी बेंत का ही डर था जो तुम्हे दिन रात पढने के लिये मजबूर करता था। अगर वो यह सब ना करते तो जहां तुम आज हो कभी ना होते। उन्होंने तेरी जान बूझ कर की गई गलतियों पर ही हमेशा तुझे सजा दी प्यार करने का मौका तुमने कब दिया उन्हें। मैं तो यही समझती हूं कि उन्होंने जो कुछ भी किया, ठीक ही किया।
विकास	(दरवाजा खुलने की आवाज) ठीक ही तो नहीं किया मां।
पार्वती	लगता है तेरे पिता जी आ गये। बेटे उनके सामने कोई ऐसी बात मत करना जिससे उन्हें दुःख हो। (विद्यानन्द आता है
विद्यानन्द	आ गये बेटे ?
विकास	जी।
विद्यानन्द	विकास बेटे जिस पदवी पर तुम आसीन हुए हो उस पर बदनामी के दाग मत लगने देना। गरीब और लाचार लोगों पर जुल्म कभी भी नहीं होने देना।
विकास	पिता जी, अब मैं वो पहले वाला छोटा सा लडका नहीं हूं जो हर वक्त आप की कही हुई बातों पर अमल करता रहा। आज मैं एक बहुत बडा अफसर हूँ और मैं यह आपसे बेहतर जानता हूँ कि मुझे क्या करना है और क्या नहीं ?
विद्यानन्द	(गुस्से से) विकास ! यह कोई बात करने का तरीका है तुम्हारा ? और शायद तुम यह भी भूल गये कि मैं तुम्हारा पिता हूँ।
विकास	जी नहीं मैं यह बिल्कुल नहीं भूला कि आप मेरे पिता हैं जो मुँह से नहीं हाथ में पकडी हुई बेंत से ज्यादा बात करते थे।
विद्यानन्द	मुझे सख्ती करने पर भी तो तुम्हीं ने मजबूर किया था। हर बार कोई ना कोई जिद जानबूझकर बार बार की गई गलतियाँ जो सिर्फ सजा की ही हकदार थी और तुम मुझसे यही उम्मीद रखते थे कि मैं तुम्हें प्यार करूँ।
विकास	प्यार ? यह लफ्ज आपके मुँह से अच्छा नहीं लगता।
विद्यानन्द	देखो विकास, अगर तुम्हें मुझसे यह शिकायत है कि मैंने तुझे प्यार नहीं किया या करना ही नहीं चाहता था तो यह तुम्हारी भूल है। मैं तो बस यही कहूँगा कि एक बाप होने के नाते मुझे जो कुछ

करना चाहिये था मैंने किया। अगर उसके बाद भी तुम्हें मुझसे कोई शिकायत है तो यह तुम्हारी अपनी सोच है। मैं तो सिर्फ इतना ही कहूँगा कि सोना तपकर ही कुन्दन बनता है।

विकास मेरी सोच कभी गलत नहीं हो सकती। क्योंकि मैं आई ए एस आफिसर हूँ। अगर आप समझते हैं कि मैं आपकी बदौलत यहां तक पहुँचा हूँ यह सच नहीं है। सच तो यह है कि जैसा व्यवहार आपने मेरे साथ किया। ऐसा व्यवहार तो लोग घर में पाले हुए कुत्तों बिल्लों से भी नहीं करते। आपने तो मुझे उन जैसा भी नहीं समझा।

विद्यानन्द (गुस्से से) विकास! अब इससे आगे और कुछ कहने की इजाजत मैं तुम्हें नहीं दूँगा। पार्वती इससे कह दो कि मेरी नजरों से दूर हो जाए।

पार्वती ऐसा मत कहिये। आपने अपनी जिन्दगी के सारे फर्ज ईमानदारी से पूरे किये हैं। इसका मुझे गुमान है। बस एक फर्ज आपका और रह गया है, वो भी पूरा कर दीजिये इसकी शादी करके।

विकास इसकी भी कोई जरूरत नहीं है माँ। मैं शादी कर चुका हूँ।

पार्वती क्या!

विद्यानन्द सुना पार्वती? कुछ सुना तुमने?

पार्वती तुमने अपनी जिन्दगी का इतना बड़ा फैसला कर लिया और हमें पूछा तक नहीं। हम्हारे दुश्मन तो नहीं थे।

विकास यह बात नहीं है मां। समय बहुत कम था और मैं आपको सूचना नहीं भिजवा सका। उन्हें बहुत जल्दी थी।

पार्वती उन लोगों के कहने पर तुमने यह सब कुछ किया और उन लोगों को भूल गया जिनके साथ तुमने अपनी जिन्दगी के 21 साल बिताए। उस बाप को भूल गया जिसकी मेहनत और लगन के बलबूते पर आज तुम इस जगह पहुँचे हो। उस मां को भूल गये जो इसी आस के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रही है कि कब उसका बेटा बड़ा होगा और अपने पिता के बुढ़ापे का सहारा बनेगा। मगर इस सबका बहुत अच्छा इनाम दिया है तुमने बेटे।

विकास मैं इस बात से कब इन्कार करता हूँ आप सब लोग मेरे साथ चलिये। बहुत बड़ी कोठी मिली है मुझे नौकर चाकर हैं आपकी जिन्दगी आराम से कटेगी वहां।

विद्यानन्द आराम से ही तो नहीं कटेगी वहां। नौकर चाकर कोठी और जितनी भी सुविधायें इकट्ठी कर सकते हो करो। अगर तुम

समझते हो कि इसमें तुम मुझे सुख दे सकते हो तो (बात बदलकर, निर्णय लेते हुए) मैं वहां नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं तुम पर बोझ नहीं बनना चाहता। हां अगर तुम्हारी मां जाना चाहे, तो मैं उसे रोकूंगा नहीं।

पार्वती — आपने यह कैसे सोच लिया कि मैं आपको छोड़कर इस नालायक औलाद के साथ चली जाऊँगी ? मुझे तो इसे अपनी औलाद कहने में भी शर्म महसूस होती है।

विकास — तो ठीक है अगर आप नहीं जाना चाहते तो आपकी इच्छा मैं आपको मजबूर नहीं करूंगा (बाहर निकल जाता है)

(संगीत अंतराल)

कमरे में पार्वती की सिसकियां गूंज रही हैं।

सुरेश — मां जी, आप हौंसला रखिये सब ठीक हो जाएगा।

अयोध्या प्रसाद — आखिर ये सब हुआ कैसे ?

पार्वती — यह जख्म औरों के दिये हुए नहीं हैं। जब अपने ही बेगाना जैसा सलूक करें तो दिल को ठेस पहुँचती ही है। बस यही सदमा पहुँचा है इन्हें।

सुरेश — डैडी ! मैं जरा गुरु जी का चैकअप कर लूं। (दूसरे कमरे में चला जाता है)

अयोध्या प्रसाद — तो विद्यानन्द जी के इस हाल में पहुँचने का कारण विकास है।

पार्वती — भाई साहब, अब क्या बताऊँ, इन्हें विकास से ऐसी उम्मीद नहीं थी अपने पिता के साथ इज्जत से पेश आना तो दूर यह तो

अयोध्या प्रसाद — विकास ऐसा भी हो सकता है ?

पार्वती — यही सब कुछ तो यह भी सोचते रहे। मगर जब इन्हें यह एहसास हुआ कि इनकी औलाद इस हद तक गिर सकती है तो ये सहन न कर सके। जब किसी घर में लड़के का जन्म होता है तो लोग खुशियां मनाते हैं मिठाईयां बांटते हैं और साथ में यह भी सोचते हैं कि बड़ा होकर यह उनके बुढ़ापे का सहारा बनेगा। लेकिन उस वक्त उनके दिल पर क्या बीतेगी भाई साहब जब उनकी बगिया का फूल उन्हें खुशबू नहीं चुभन दे रहा हो।

अयोध्या प्रसाद — बहन जी मैं आपका दर्द अच्छी तरह समझता हूँ। आपको इस तरह मायूस नहीं होना चाहिये सब ठीक हो जाएगा सुरेश उन्हें चैकअप कर रहा है आइये हम भी चलकर देखते हैं (दूसरे कमरे में जाते हैं) सुरेश कुछ मालूम हुआ।

सुरेश — गुरु जी को यह क्या हो गया है कुछ समझ नहीं आता

अयोध्या प्रसाद	तुम्हारी डाक्टरी क्या कहती है ?
सुरेश	मेरी डाक्टरी तो यही कहती है कि इ ह जो कुछ हुआ है वो नही होना चाहिये था । समझ नही आता कि ऐसा कैसे हो गया ?
अयोध्या प्रसाद	क्या काई सीरियस बात
सुरेश	जी मुझे तो बताते हुए भी (विद्यानन्द बहुत धीमी आवाज मे जैसे बहुत बीमार और तकलीफ हो।
विद्यानन्द	बटे ! तुम कैसे डाक्टर हो जजबात के भवर म फसकर इस डाक्टरी के पेशे के साथ नाइसाफी मत करो ।
अयोध्या प्रसाद	विद्यान द जी ठीक कहते हैं बटे । तुम्हे इस तरह ।
सुरेश	(बात काटकर) नही डैडी म नही बता सकूँगा ।
विद्यानन्द	लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मुझे क्या हुआ है ? मेरे शरीर के आधे हिस्स की हरकत बडी देर स रुक चुकी है । मुझे पैरालसिस हो गया है पावती ।
पावती	नही । ऐसा नही हो सकता (सिसकती है ।।
अयोध्या प्रसाद	आप इस तरह दिल छोटा ना कीजिये । विद्यानन्द जी ठीक हो जायेंगे । सुरेश यह सब हुआ कैसे ?
सुरेश	ब्लड प्रैशर बहुत ज्यादा बढ जाने स ऐसा हुआ है डैडी । आखिर क्या परशानी थी इन्हे कौन सा ऐसा सदमा था जो आज इन्हे इस हालत तक पहुँचा गया ।
पावती	इनको सदमा पहुँचाने वाला इनका अपना ही बटा है ।
सुरेश	विकास ? लेकिन वो है कहा ?
पावती	वो बहुत दूर जा चुका है । आँखो मे भी और दिल से भी ।
सुरेश	विकास ऐसा कर सकता है कभी सोचा भी नही था । मैं उस बेवकूफ का अभी इनफाम करता हूँ ।
विद्यानन्द	रुको बेटे मैं तुमम कुछ कहना चाहता हू ।
सुरेश	जी ।
विद्यानन्द	तुम मेर बारे म विकास को कुछ नही बताओगे ।
सुरेश	मुझे बताना ही चाहिये गुरु जी । आज इस घर को उसकी बहुत जरूरत है ।
विद्यान द	उसे ऐसा खुद सोचना चाहिये था । अगर उसके दिल के किसी भी कोन मे मेरे लिय जगह होगी तो वो जरूर आयेगा । लेकिन मैं इतना खुदगज नही हूँ कि अपनी बीमारी का सहारा लकर उस यहा बुलाऊँ ।

सुरेश	गुरु जी, माफी चाहता हूँ । उसको बुलाना ही होगा ।
विद्यानन्द	सुरेश बेटे तुम्हे याद ही होगा कि एक दिन तुम मेरे पास मुझे गुरु दक्षिणा देने आये थे और मैंने इकार कर दिया था ।
सुरश	जी मुझे याद है ।
विद्यान द	तो आज मैं तुमसे वो गुरु दक्षिणा मागता हूँ, बोलो बेटे अपने गुरु को गुरुदक्षिणा दोगे ?
सुरेश	जी । आप जो कहेंगे, आपको हर कीमत पर दूंगा ।
विद्यानन्द	तो फिर सुनो और वचन दो कि तुम विकास को मेरे बारे म कुछ नही बताओगे । यही तुम्हारी गुरुदक्षिणा है ।
अयोध्या प्रसाद	ये आप क्या माग रहे हैं विद्यान द जी, विकास तुम्हारा अपना खून है ।
विद्यानन्द	मैं इस बात स कब इकार करता हूँ लेकिन जब तक वो अपनी जान बूझकर की गई गलतियो की माफी नहीं मागता मैं उसे अपने दु ख मे शामिल नही करूंगा । मुझम अभी इतनी हिम्मत है कि मैं अपने सारे दु ख अकेला सह सकूं ।
पावती	क्या आप मुझे भी भूल गये । अर्धांगिनी हूँ आपकी और आपकी तकलीफो के आधे हिस्से की वारिस ।
विद्यान द	तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ पावती । तुम्ही तो एक वो सहारा हो जिसके सहार अब कम से कम जिन्दगी की गाडी घिसट घिसट कर तो चलेगी ही ।
सुरश	ऐसा ना कहिये गुरु जी आप ठीक हो जाओगे ।
	(सगीत अ तराल)
	कार सडक पर तेजी से भाग रही है उस गाडी मे विकास और उसकी पत्नी इन्दु बैठे हैं ।
विकास	आज हमारी शादी को पूरा एक साल हो गया है समय इतनी जल्दी बीत गया पता ही नही चला ।
इन्दू	जब समय की रफ्तार तेज हो तो ऐसा होना स्वाभाविक ही है । सुनो । इधर से गुजर ही रहे है तो अपन उस ज्यूलर से मेरे गले के हार के बारे मे पता ही कर लेते हैं ।
विकास	हा हा जरूर । (कार थोडा चलकर रुक जाती है और इजन बद हो जाता है । दरवाजा खोलकर दोना बाहर निकलते हैं)
सुनार	आईये हजूर बैठिय दो काफी नाना भई ।
विकास	इसकी क्या जरूरत है ?
सुनार	साहब ऐसा कैसे हो सकता है कि आप आए और ह ह

इन्दू	वो हमने गले के हार का आर्डर दिया था वो तैयार हो गया क्या ?
सुनार	माफ कीजियेगा । वो बहुत बारीकी का काम है थोडा बहुत समय तो लगेगा ही आप इत्मीनान रखिये आपको एकदम असली माल का बनाकर दूगा ।
विकास	वो तो ठीक है मगर आप उस हार को मगवायें तो सही, हम देखना चाहते है कि वो किस कडीशन मे है ।
सुनार	हा हा जरूर देखिये हुजूर । मैं अभी लेकर हाजिर हुआ ।
इन्दू	देखिये कितनी ब्यूटीफुल ज्यूलरी रखी है इन शो केसीज़ मे ।
विकास	तुमसे भी ज्यादा क्या ?
सुनार	हे हे हे यह देखिये हजूर ।
इन्दू	यह क्या ? इतना गदा हार ?
विकास	आप शायद कोई गलत हार उठा लाये। यह वो हार हो ही नही सकता जिसका हमने आर्डर दिया था ।
सुनार	ये बिल्कुल वही हार है हजूर अभी इसको फाइनल टच देना बाकी है ।
विकास	मैं नही मानता कि यह वैसा खूबसूरत भी बन सकता है ।
सुनार	हजूर सोना तो तपकर ही कुदन होता है । एक अच्छा जेवर बनने तक सोने को किन किन हालात मे से गुजरना पडता है शायद इस बात का आपको । माफ कीजियेगा हजूर बदतमीजी कर रहा हूँ । पहले सोने को गलाया जाता है फिर उस पर बदर्दी से छिलाई भी होती है और ना जाने क्या कुछ नही करना पडता फिर कही जाकर एक अच्छा गहना बनता है । अब आप यही देख लीजिये ना हजूर, कि आप आज कितने बडे अफसर हैं । अपने मा बाप के अनमोल जेवर । आप की सुदरता को चार चाद लगाने की खातिर उन्होंने भी तो आपके साथ वही सलूक किया होगा जो मैं आज इस जेवर के साथ कर रहा हू अगर मेरा बाप मेरे साथ भी ऐसा सलूक करता तो मैं भी आपकी ही तरह किसी शहर मे बडा अफसर होता ।
इन्दू	कितने दिन और लगेंगे ?
सुनार	चार पाच दिन तो लग ही जायेंगे ।
इन्दू	ठीक है लेकिन इसकी सुदरता मे कोई कमी नही आनी चाहिए । चलिए चलते हैं । (दोनो बाहर आते है और गाडी स्टार्ट होती है और नजरो से भागती है । विकास को सुनार की और भी बाप की ही कही बातें याद आती हैं ।)

विद्यान द   मैं तो सिफ इतना ही कहूगा कि सोना तपकर ही कु दन बनता है।

सुनार   हा हजूर सोना तो तपकर ही कु दन हाता है। एक अच्छा जेवर बनने तक सोन को किन किन हालात म स गुजरना पडता है शायद इस बात का आपको

पावती   यह उनकी बैंत का डर था जा तुम्हें दिन रात पढने पर मजबूर करता था।

सुनार   पहले सोने को गलाया जाता है फिर उस बदर्दी से छिलाई भी होती है।

पावती   उ होन हमेशा तेरी जान बूझकर की गई गलतियो के बदले म ही तुझे सजा दी।

सुनार   उ होने भी तो आपक साथ वही सलूक किया होगा जो आज मैं इस जेवर से कर रहा हूँ।

पावती   उन मा बाप को भूल गया जो यही सोचते रह कि कब बेटा बडा होगा और उनके बुढापे का सहारा बनेगा।

विकास गाडी को एकदम ब्रेक लगता है।)

इन्दू   गाडी क्यो रोक दी, क्या बात है आप कुछ परेशान से दिखाई दते है।

विकास   मा और पिता जी की याद आ गई थी। पता नही वो किस हाल म होंगे कैसे होंगे मैंन तो उनकी खबर तक नही ली। (गाडी स्टाट और टन होकर एक तरफ मुडती है और तेजी से भागती है।)

इन्दू   आप कहा जा रहे है ? यह रास्ता तो घर की तरफ नहीं जाता।

विकास   यही रास्ता सिफ घर की ही तरफ जाता है इन्दू उस घर की तरफ जिसम मा होती है पिता हाते हैं। जो घर, घर नहीं मंदिर है इन्दू और मैंने उस मंदिर की पवित्रता को भंग किया है। मैंने अपन भगवान के चरणा म वो फूल चढ़ाने की जगह कांटे, चुभा देते रहे। सिफ चुभन। (गाडी के टायर चीखने की आवाज)

इन्दू   आप गाडी तो धीरे चलाइये वर्ना ....

विकास   कुछ नहीं होगा इन्दू, मैं घर वापिस लौटकर जा रहा हूँ। (गाडी तेज रफ्तार म भागती है और घर पहुँचती है।)

इन्दु	मा जी (रोती है)
विकास	यह सब कैसे हुआ मा ? क्यो हुआ ?
पार्वती	यह अपने दिल से पूछो ? अपने आप से पूछो ? तुम्ही तो वो फूल हो, जो अपने माली को खुश्बू नहीं (सिसकती है ।)
विकास	हा मा । मैं ही वो बदनसीब फूल हू, जो सारी ज़िन्दगी पिता जी को चुभन ही देता रहा (सभी रोते हैं सिसकते हैं ।)

□

निर्माण

प्रिंसिपल वर्मा
जानकी
प्रिंसिपल महता
प्रधान
भटनागर
शर्मा
नजिन्द्र
पुष्पा
सुभाष
अशोक
बहादुर
मधु सूदन
चपडासी
एक दूसरा और तीसरा स्वर

पष्पा : क्या बात है बेटे ? आज कालज से बडी जल्दी वापिस आ गया।

सुभाष आज कालेज म हडताल हा गई मा।

पुष्पा मगर क्यों ?

सुभाष पता नही मा यह सब तो वाही जान जिन्होने ऐसा किया है।

पुष्पा इसमे तो बच्चा की पढाई का बहुत नुकसान होगा।

सुभाष उन्हे इससे क्या मा। वो ता बस यही कह रहे हैं कि जब तक उनकी मागें नही मानी जाएँगी कालेज नही खुलेगा।

पुष्पा बच्चो क भविष्य का निर्माण करन वाले आज उस रास्ते पर चल पडे हैं जिसकी काई मजिल ही नही है। विद्या जैसी पवित्र सस्थाओ म अगर स्वार्थ ने इस तरह अपनी जगह बना ली तो क्या इस देश क भविष्य का निर्माण हो सकता ? (और इसी के साथ नाटक से सम्बधित अनाऊसमैंट) (नारे लगाए जा रहे है) हमे क्या चाहिए। इन्साफ। इन्साफ के आगे—झुकना पडेगा। हर जुल्मो सितम की टक्कर मे—हडताल हमारा नारा है। (नारो क शोर म प्रधान की स्पीच)

प्रधान	दोस्तो। जैसा कि आप सब को यह मालूम ही है कि पिछले एक महीने म हम सब अपने अधिकारो के लिए जिस तरह अपनी बुलद आवाज मैंनजमैंट के कानो तक पहुँचा रहे हैं उसम किसी भी तरह की कमी नही आनी चाहिए इसके लिए हमारा यह सघष चाहे कितना ही लम्बा क्यो न हो जाए।
भटनागर	टीचस यूनियन जिदाबाद।
प्रधान	हमे इस राष्ट्र का निमाता कहा जाता है। हम लोगो द्वारा ही शिक्षा प्राप्त करके आज कुछ स्वार्थी लोग समाज की ऊँची पदवीयों पर काम कर रहे हैं और वो लोग कितने एहसान फरामोश हैं इसका अदाजा तो आपको हो ही चुका होगा। मगर हम उह यह बता देना चाहत ह कि अगर हमारी मेहनत इस देश के भविष्य का निर्माण कर सकती है तो हमारा रोष इस निर्माण मे बाधा भी उत्पन कर सकता है। अगर हमारी मागें मानी न गई तो ऐसा ही होगा। कुछ प्रोफैसर जो हमारे साथ इस स्टराईक मे हिस्सा नही ली रहे उह भी मैं यह बता देना चाहता हूँ कि वो अपनी क्लासेज लगाना बद कर दें नही तो उनके साथ अच्छा सलूक नहीं होगा।
	(सगीत अतराल)
पुष्पा	क्या हुआ बेटे यह माथे पर चोट कैसी ? तेरी तो कमीज पर भी बहुत खून लगा है।
सुभाष	मा आज कालेज म वो हुआ। जिसकी इजाजत मानवता, मानव को नही देती।
पुष्पा	आखिर हुआ क्या ? कुछ मुझे भी तो बता।
सुभाष	आज टीचस के बीच मारपीट हुई/पत्थर तक चले/और निशाना बना मैं—और मुझ जस कई विद्यार्थी/जो पढ लिख कर कुछ बनना चाहत हैं।
पुष्पा	चोट गहरी तो नही है बटे।
सुभाष	गहरी चोटें तो हमार हिदी क प्राफैसर/डॉ० मधुसूदन को आई हैं।
पुष्पा	वो तो बडे ही अच्छे आदमी हैं।
सुभाष	तभी तो उनक साथ एसा सलूक हुआ।
पुष्पा	मगर क्या ?
सुभाष	क्योंकि वो अपना कतव्य/बिना किसी स्वाथ क पूरा कर रह थे।
पुष्पा	मैं समझी नही।

सुभाष — मा । आज वो स्टराईक मे हिस्सा न लेकर/विद्यार्थियो को पढाने के लिए कलास की तरफ जा रहे थे/तो दूसरे ने उन्हे ऐसा न करने के लिए कहा । जब वो न माने तो मारपीट हुई । कुछ प्रोफैसर/मधुसूदन जी को बचाने के लिए आगे आए/तो फिर पत्थर बाज़ी हुई ।

पुष्पा — कैसा जमाना आ गया । ईमानदारी किस कदर कदम-कदम पर झूठ और फरेब मे मात खा रही है ।

सुभाष — मगर ऐसा ज्यादा देर तक नही होगा ।

पुष्पा — यह हडताल कब तक रहेगी ।

सुभाष — क्या पता । इम्तहान सर पर आ गए है और पढाई अभी तक पूरी नही हुई ।

पुष्पा — बच्चो के भविष्य का क्या होगा ?

सुभाष — होना क्या है मा ? ज्यादा से ज्यादा फेल ही हो जायेंगे एक साल ही खराब हो जाएगा न उनका ।

पुष्पा — साल खराब हो जाना कोई मामूली बात तो नही है ।

सुभाष — उन्ह इससे क्या ? और यह जरूरी भी तो नही कि जो कुछ तुम सोचो/वो भी ऐसा ही सोचे ।

पुष्पा — चलो मुझ जैसा न सोचें कम से कम ठीक तो सोचें ।

सुभाष — उन्हे तो बस एक ही चीज नजर आती है और वह है स्वार्थ ।

पुष्पा — मैं तो बस यही कहूँगी कि भगवान इन्हे सोचने समझने की शक्ति दें । मा बाप पता नही किस तरह कदम कदम पर परेशानीयो का सामना करके अपने बच्चो को स्कूल कालेजो मे भेजते हैं कि वह को वा पढ लिख कर कुछ बन सकें । मगर इन्हें इससे क्या यह आग तो सिर्फ अपने बारे म ही सोचेंगे ।

(सगीत अन्तराल)

चपडासी — प्रधान जी आपको प्रिंसिपल साहब बुला रहे है ।

प्रधान — किस सिलसिले म ?

चपडासी — यह तो मालूम नहीं ।

प्रधान — अच्छा ठीक है तुम जाओ मैं [illegible] आता हू । हा तो साथियो बता आ मिलना चाहिए [illegible] ।

भटनागर — हमने तो तुम्हें अपना प्रधान [illegible] हम तुम्हारे साथ है ([illegible])

प्रधान — तो फिर ठीक है । [illegible] । ([illegible] पहुचता है) [illegible]

प्रिंसीपल हा बैठो ।

प्रधान कहिए ?

प्रिंसीपल जल्दी मे हो ?

प्रधान क्यो ?

प्रिंसिपल इत्मीनान से बातें करना चाहता हू ।

प्रधान ठीक है जब तक आप चाहे । (प्रिंसिपल घण्टी बजाता है)

चपडासी यस सर ।

प्रिंसिपल किसी को भी अन्दर मत आने देना ।

चपडासी जी बहुत अच्छा । (बाहर चला जाता है)

प्रिंसिपल यह हडताल कब तक चलेगी ?

प्रधान यह मैनजमैंट पर डिपैंड करता है बल्कि मैं तो कहूगा आप पर क्योकि आप ही हमारे और मैनजमैंट के बीच की कडी हैं ।

प्रिंसिपल देखो उमेश मैं तुमसे बडा हू और बडे होने के नाते मैं तुम्हे यही सलाह दूगा कि हडताल खत्म कर दो ।

प्रधान मगर मैं आपकी यह सलाह मानने को तैयार नही हू । पिछले एक महीने से जारी संघर्ष को सिर्फ आपके इतना ही कह देने से बन्द कर दिया जाए । नही नही ऐसा कभी नही होगा ।

प्रिंसिपल मैंने तुम्हारी सारी मागो के बारे मे हाई अथोरटी से बात की थी । मगर उन्हे तुम लोगो से कोई सहानूभूति नही । इस तरह अधेरे मे हाथ पैर मारना भी तो बहुत बडी नादानी है । मेरी मानो तो हडताल खत्म कर दो ।

प्रधान कुछ प्राप्त किए बगैर ही ।

प्रिंसिपल जो तुम्हे मैनजमैंट से नही मिल सका वो मैं दूगा । मगर किसी और तरीके से ।

प्रधान मैं आपका मतलब नही समझा ।

प्रिंसिपल मेरी बात ध्यान से सुनो । यह तो तुम जानते ही हो कि मैं रिटायर होने वाला हूँ ।

प्रधान मगर इस बात का हमारी स्टराइक से क्या सम्बन्ध ।

प्रिंसिपल पहले मेरी बात सुनो । फिर जो कुछ भी कहना चाहो कहना ।

प्रधान ठीक है अब नही बोलूगा कहिए ?

प्रिंसिपल मैंने मैनजमैंट को एक साल की एक्सटशन के लिए लिखा है जिसे शायद वो मन्जूर न करे । उन्हे मुझ पर शक है कि मैंने दूसरे तरीके से बहुत पैसा कमाया है ।

प्रधान उनका शक गलत तो नहीं है ।

प्रिंसिपल — मगर तुम भी कौन से धर्मराज युधिष्ठिर हो। कालेज मे घपले बहुत किए है तुमने और अपने सस्पेंड होने के डर से इस हडताल का सहारा ले रहे हो।

प्रधान — गुल तो आपने भी कम नही खिलाए। यह जो नया ब्लाक बना है 25 लाख का जैसा कि आपके कागजो मे है। कम से कम 5 लाख आपने इधर उधर किए है।

प्रिंसिपल — अगर हम इसी तरह एक दूसरे पर दोष लगाते रहे तो दिन बीत जाएगा। मैं चाहता हू कि हमे आपस म कुछ तय कर लेना चाहिए। क्योकि हम दोनो को ही एक दूसरे की जरूरत है।

प्रधान — चाहते क्या है आप ?

प्रिंसिपल — मेरी सर्विस सिर्फ चार महीने और रह गई है और इन चार महीनो मे तुम जो कुछ भी कर सकते हो करो। तुम्हारी तरफ कोई आंख उठा कर भी नही देखेगा और इसके बदले मे तुम्हें हडताल खत्म करने का आश्वासन देना होगा।

प्रधान — हडताल तो मैं अभी खत्म कर देता हू। मगर इससे आपको क्या ? आप तो रिटायर हो जायेंगे।

प्रिंसिपल — अगर हडताल खत्म हो जाती है तो शायद मुझे एक साल और मिल जाए।

प्रधान — अगर ना मिल सका तो।

प्रिंसिपल — यह सोचना तुम्हारा काम नही है तुम वही करो जो मैं कहता हू।

प्रधान — ठीक है ऐसा ही होगा।

प्रिंसिपल — तुम्हारा घर बहुत छोटा है न।

प्रधान — जी।

प्रिंसिपल — तुम ऐसा करो कि कालेज मे वो जो मेरी कोठी के साथ जो पाच छह कमरो का बडा घर है उसमे शिफ्ट कर जाओ। यह मेरी तरफ से दोस्ती का छोटा सा तोहफा।

प्रधान — थैंक्यू सर। मैं बाहर जा के स्टराईक खत्म करने का एलान करता हू।

प्रिंसिपल — अब शायद इस हडताल के समाप्त होने की वजह से मुझे एक साल और मिल जाए।

(संगीत अन्तराल)

(पीरीयड की घण्टी बजती है और लडके क्लास से बाहर आते हैं उनका हल्का सा शोर) शोर बन्द होता है प्रोफैसर के कमरे की आवाज क्लास मे पहुँचती है)

भटनागर आज मेरी तबीयत ठीक नही इसलिए आप सब लोग फ्री हैं।
(उठने का शोर)

अशोक चलो उठो सुभाष चलकर कंटीन म बैठते हैं।

सुभाष कन्टीन म बैठने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।

अशोक ओ डोंट बी सिली। मेरे साथ ऐसी बातें मत किया कर। चल उठ।

सुभाष नही यार मन नही करता।

अशोक तो ठीक है हम भी नही जाते।

सुभाष एसा करते हैं कि लाईब्रेरी म चलते ह।

अशोक मगर किस लिए ?

सुभाष लाईब्रेरी मे लोग क्यो जाते हैं ?

अशोक सुभाष। तुम्ह किताबो के सिवा तो और कुछ दिखाई भी नही देता। इन किताबों के जाल म उलझ कर अपनी आँखो के साथ बेइन्साफी मत करो।

सुभाष चादी के बर्तनों म खाना खाते हो न। इसीलिए ऐसी बातें करते हो। कभी अपने आपको मेरी जगह रख कर देखो।

अशोक सुभाष। अगर तुम्ह मेरी बात से दुःख पहुँचा है तो मैं माफी चाहता हूँ।

सुभाष नही अशोक ऐसी कोई बात नही। म तो सिर्फ अपनी मजबूरी बता रहा था।

अशोक तो क्या यह सब किसी मजबूरी वश कर रहे हो। सुभाष अगर तुम्हें पैसो की जरूरत है तो मुझे बताओ। करोड़पति बाप का इकलौता बेटा हूँ।

सुभाष इस समस्या का हल अगर पैसा से हो सकता तो हर अमीर आदमी पढ़ा लिखा होता।

अशोक पढ़ लिखकर भी तो आदमी पैसे कमाने के लिए ही नौकरी करता है और उसकी भी कोई गारण्टी नही कि उसे नौकरी मिल ही जाएगी।

सुभाष अगर तुम्हारी कही हुई बातो पर हर कोई अमल करे तो जानते हो क्या होगा ?

अशोक क्या होगा ?

सुभाष इस देश के भविष्य का निर्माण नहीं हो पाएगा।

अशोक इसकी चिन्ता तो उन्ह करनी चाहिए जिन्ह इस देश का कर्णधार कहा जाता है।

सुभाष — मगर हम लोगों का भी तो कोई फर्ज है।

अशोक — अगर हर कोई अपना फर्ज ईमानदारी से पूरा करता चले तो देश के भविष्य का निर्माण अपने आप ही होता चला जाएगा।

सुभाष — मुझे किसी से कोई मतलब नहीं। मगर मैं अपना हर कर्त्तव्य ईमानदारी से ही करूंगा।

अशोक — सुभाष तुम अकेले नहीं हो जो ऐसा सोचते है। तुम जैसे न जाने कितने ही होंगे। क्या अच्छे नम्बरों में पास होने के बावजूद भी उन लोगों को नौकरी मिल जाती है। उन्हें नौकरी इसलिए नहीं मिलती क्योंकि ऊपर वाले ईमानदार नहीं हैं। अब दूर ही क्यों जाते हो यहीं देख लो प्रोफैसर साहब ने क्लास नहीं ली। क्योंकि उनका मूढ नहीं था। क्या वो अपने पेशे से ईमानदार हैं। जबकि यह कहा जाता है कि टिचर बिल्ड दी नेशन।

सुभाष — तुमने जो कुछ भी कहा/वो गलत नहीं है। ऐसा मैं भी मानता हूं। अगर मैं भी तुम्हारी तरह सोचूं/या उन लोगों की तरह करूं/जो वो करते है। तो जानते हो क्या होगा। इस देश का अस्तित्व अंधकार की आगोश में लुप्त हो जाएगा। यह तो तुम मानते ही हो। कि कुछ ऐसे लोग भी है। जो ईमानदारी से अपना हर कर्त्तव्य पूरा करते है।

अशोक — और यह लोग अंधकार में छोटे छोटे दीपकों समान हैं जो समाज में फैले अंधेरों में रौशनी नहीं कर सकते।

सुभाष — मगर यह टिमटिमाती लौ। उन लोगों के लिए एक आस की किरण तो बन सकती है। जो इन अंधेरों में भटक कर अपना अस्तित्व तलाश कर रहे हैं।

अशोक — मगर इसके बाद क्या होगा जब इन टिमटिमाते दीपकों की बत्ती जल जाएगी। मंजिल पा लेने वाले इन बुझे हुए दीपकों में नई बत्ती भी नहीं लगायेंगे और फिर एक दिन कोई दीपक नहीं बचेगा।

सुभाष — मैं ऐसा नहीं मानता अशोक। क्योंकि मंजिल उन्हें ही मिलेगी जो निस्वार्थ अपना हर कर्त्तव्य ईमानदारी से पूरा करना चाहते हैं।

अशोक — काश ऐसा ही हो।

सुभाष — ऐसा ही होगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

(संगीत अन्तराल)

भटनागर — कुछ पता चला?

प्रधान — क्या?

भटनागर — प्रिंसिपल साहब को अक्सटैंशन नहीं मिली।

प्रधान	तुम्हे कैसे पता चला ?
भटनागर	कुछ उडती उडती खबर है ।
प्रधान	ठहरो मैं खुद ही उनसे पूछता हूं । (चद्रमा की आवाज और प्रिंसिपल के पास पहुंचता है)
प्रिंसिपल	आओ बैठो ।
प्रधान	बाहर कुछ अफवाह सी है कि आपको अक्सटेंशन नही मिला ।
प्रिंसिपल	यह अफवाह नही सच है ।
प्रधान	तो कब जा रहे हैं आप ?
प्रिंसिपल	यह तो नए प्रिंसिपल की ज्वायनिंग पर डिपेंड करता है ।
प्रधान	आ कौन रहा है ?
प्रिंसिपल	आर एस वर्मा। जो एक बहुत ही ईमानदार और सख्त ऐडमनिस्टरटर है ।
प्रधान	मगर मैं इसकी परवाह नही करता । अगर उसने स्टाफ को तग किया तो मैं यहा ऐसी समस्यायें खडी कर दूंगा जिसका समाधान वो कर नही सकेगा ।
प्रिंसिपल	ठीक कहा तुमने । जब तक ज्वायन नही करता अपनी यूनियन को और मजबूत करो और मैं भी कुछ ऐसा ही करूंगा जिससे उसे सिर्फ मुसीबतें ही झेलनी पड़ें ।
प्रधान	तो इसका मतलब है आप मैनेजमेंट द्वारा एक्सटेंशन न मिलने की वजह से वर्मा की राह म काटे बिखेरना चाहते हैं ।
प्रिंसिपल	ठीक सोचा तुमने । (घण्टी बजाता है)
चपडासी	यस सर ।
प्रिंसिपल	अकाऊट आफिसर शर्मा को भेजना ।
प्रधान	तो फिर ठीक है आप अपना काम कीजिए मैं अपना करता हू । अब चलता हू । (बाहर निकल जाता है)
शर्मा	आपने मुझे बुलाया सर ।
प्रिंसिपल	हा बैठिए । इस समय कालेज अकाऊट म कितना पैसा है ?
शर्मा	जी कोई 15 लाख से कुछ दो तीन हजार ऊपर ही होंगे ।
प्रिंसिपल	हूं । तो फिर ऐसा कीजिए की 15 लाख का ड्राफ्ट मैनेजमेंट के नाम का बनवा लीजिए ।
शर्मा	यह आप करने क्या जा रहे हैं सर ?
प्रिंसिपल	ऐसा सवाल आपको कम से कम मुझसे नही करना चाहिए । जैसा मैं कहता हू आप वैसा ही कीजिए ।
शर्मा	ओ के सर ।

प्रिंसिपल	यह काम कल तक हो जाना चाहिए। (फोन की घण्टी बजती) हैलो कौन वर्मा जी। कहिए कैसे है आप तो हम आपका ही इन्तज़ार कर रहे है कब आ रहे है आप नैक्सट वीक ठीक है आपका इतज़ार रहेगा ओ के ओ के वर्मा जी (फोन नीचे रखता है
शर्मा	कुछ और सर !
प्रिंसिपल	नही बस वो ड्राफ्ट बनवा देना।
शर्मा	जी बहुत अच्छा (बाहर निकल जाता है) (पाज) प्रधान जी आप मेरे साथ आईए।
प्रधान	क्यो क्या हुआ ?
शर्मा	कमरे म चलकर बातें करते हैं। आईए। पाज़) बैठिए।
प्रधान	कुछ खास बात हुई लगती है प्रिंसिपल के साथ।
शर्मा	उन्होने मुझे एक ऐसी बात करन के लिए कहा है अगर वो हो गई तो यहा बहुत सी समस्यायें खड़ी हो जाएगी।
प्रधान	कुछ मैं भी तो सुनू।
शर्मा	उन्होने मुझे कालेज अकाऊट के सारे पैसे का ड्राफ्ट बनान के लिए कहा है। वो यह सारा पैसा मनेजमैंट को भेज रहे हैं। अगर ऐसा हो गया तो सारे स्टाफ को तनखाह यहा म मिलेगी।
प्रधान	तो इसका मतलब है कि नया प्रिंसिपल ज्वायन करन ही वाला है।
शर्मा	हा सात दिन बाद। अब आप ही बतायें कि मैं क्या करू ?
प्रधान	आप वही कीजिए जो आपका प्रिंसिपल कहता है।
शर्मा	मगर यह तो जाने वाले है।
प्रधान	जाने वाले हैं। अभी गए नही। जैसा वो कहते हैं वैसा ही कीजिए बाकी जो होगा मैं सम्भाल लूगा। अच्छा चलता हू प्रिंसिपल मेहता की विदाई पार्टी का भी इतज़ाम करना है।
	(सगीत अन्तराल)
	(पार्टी चल रही है और सगीत बज रहा है लोगो का हल्का सा शोर)
प्रधान	साईलैंन्स प्लीज़। (शोर बन्द) जैसा कि आप सब जानते ही हैं कि हम सब इस कालज क आदरणीय प्रिंसिपल मेहता साहब को विदाई देन क लिए यहा इकट्ठे हुए हैं और साथ मे यह हमारी खुशनसीबी है कि नए प्रिंसिपल श्री आर एस वर्मा जी भी उपस्थित हैं। हमार रिटायर्ड प्रिंसिपल मेहता जी ने सदा स्टाफ से कापरेट किया है और ऐसी उम्मीद हम वर्मा जी से भी करेंगे और उनकी छत्र छाया म यह कालेज आसमान की बुलदियो को छूऐगा ऐसा मेरा

विश्राम है। इस कालेज के स्टाफ ने महता जी की अपनी तरफ से रंगीन टी वी देने का फैसला किया है और यह तोहफा हमारी तरफ से वर्मा जी महता साहब को देंगे। (तालीयां) आईए वर्मा जी। (तालीयां)

प्रिंसिपल महता — मैंने आप लोगों के साथ जितने भी साल बिताए उन्हें भूल पाना मेरे लिए बहुत कठिन होगा। मेरे साथ स्टाफ के कभी कभी मतभेद भी हुए। मगर हमने एक अच्छे परिवार की तरह ये मतभेद आपस में मिल बैठकर दूर किए। घर की बात घर में ही रहे तो दूसरों को कुछ कहने का मौका नहीं मिलता। वर्मा जी को मैं अच्छी तरह जानता हूं। यह अपना हर कर्त्तव्य मेहनत और ईमानदारी से करते हैं बल्कि मैं तो यही कहूंगा कि इस कालिज की खुशकिस्मती है जो उन्हें वर्मा जी जैसा प्रिंसिपल मिला और मैं उनसे निवेदन करूंगा कि वो यहां आकर कुछ कहें। (तालीयों के बीच वर्मा स्टेज पर आते हैं)

वर्मा — आप सब लोगों ने जो आदर दिया उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। आप लोग चाहते हैं कि मैं स्टाफ के साथ कोपरेट करूं। ऐसा ही होगा। इसके बदले में भी आपसे ऐसी ही उम्मीद करूंगा। कहा जाता है कि अध्यापक इस देश के बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं और इन्हीं से ही देश का भविष्य जुड़ा है। अगर आप वाकई इस देश के भविष्य की बुनियाद मजबूत करना चाहते हैं तो आपको मेहनत ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन अनुशासन के दायरे में रहकर करना पड़ेगा और मैं उम्मीद करता हूं कि आप भी ऐसा ही करेंगे। धन्यवाद। (तालीयों की गड़गड़ाहट से वर्मा के भाषण का स्वागत होता है)

संगीत अंतराल

शर्मा — क्या मैं अन्दर आ सकता हूं?

वर्मा — आईए शर्मा जी। आपको इजाजत लेने की क्या जरूरत है? बैठिए।

शर्मा — जी शुक्रिया।

वर्मा — कहिए? कैसे आना हुआ? आप कुछ परेशान से लगते हैं।

शर्मा — जी सारी रात सो नहीं सका। बस यही सोचता रहा कि मुझे आपसे सब कह देना चाहिए।

वर्मा — कोई भूल हुई आपसे?

शर्मा — जी। मगर डरता हूं।

वर्मा — देखिए शर्मा जी घबराने की कोई बात नहीं जो भी है आप कहिए।

शर्मा	म्हता अच्छा आदमी नही था ।
वर्मा	यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं ह ।
शर्मा	मगर उसन जो किया ऐसा तो आप साच भी नही सकते । कल प टे है कमचारियो को तनखाह कहा से मिलेगी ।
वर्मा	क्या कहत है आप शर्मा जी ?
शर्मा	कालेज अकाऊट म जितना भी पैसा था वो सब मैनजमैंट का मेहता साहब भेज चुके ह ।
वर्मा	मगर क्यो ।
शर्मा	क्योकि वा आपको स्टाफ क सामन नीचा दिखाना चाहत ह ।
वर्मा	शर्मा जी यह अच्छा किया जो आपन समय रहते मुझे यह बात बता दी ।
शर्मा	अब क्या होगा सर ? कल जब स्टाफ को तनखाह नही मिलेगी ता क्या ?
वर्मा	कुछ नही होगा । क्योकि उह कल तनखाह जरूर मिलेगी । (टेलीफोन उठाता है) मैनेजमेंट के प्रसिडेंट से मिलाईए । (फोन नीचे रखता है) आप चिता न कीजिए शर्मा जी सब ठीक हो जाएगा । (पाज) (घण्टी बजती है) हैलो नमस्कार आचाय जी यहा एक समस्या खडी कर गए है मेहता साहब और उसके समाधान क लिए आपकी सहायता चाहिए । वो कालेज अकाऊट का सा रा पसा मनजमट को भेज चुके हैं वा आप तक पहुँच ही चुका होगा यहा पर तो स्टाफ को तनख्वाह देन के लिए कुछ भी नही है सब झूठ रहा था मेहता ने आपसे यहा अकाउट मे कुछ नहीं है । आप ऐसा कीजिए कि दिल्ली मे बैंक से कहिए कि वा यहा अपनी ब्राच मे कह कि हमे पैस दे दें ठीक है आचाय जी ओ क थैंक्यू । (टेलीफोन रखता है) शर्मा जी आप कल बैंक जाकर पैस ले आना ।
शर्मा	थैंक्यू सर ।
वर्मा	नही शर्मा जी थैंक्यू ता मुझे आपका करना चाहिए जो आपन मुझे बता दिया । थैंक्यू वैरी मच शर्मा जी ।

संगीत अतराल

वर्मा	बहादुर ।
बहादुर	जी साहब ।
वर्मा	यह ला 30 रु० और हमारी कार म पैट्रोल डलवा लाओ ।
बहादुर	पैट्रोल डलवा लिया सर ।
वर्मा	मगर तुम्हार पास तो पैस नही थे । फिर यह पट्रोल कहाँ स डलवाया ।

बहादुर — कालेज के खाते से साहब ।

वर्मा — (गुस्से से) किससे पूछ कर ।

बहादुर — सर यहा तो हमेशा ऐसे ही होता आया है ।

वर्मा — और तुमने भी मुझे उन लोगो जैसा समझा ।

बहादुर — माफी चाहता हू साहब ।

वर्मा — तुम कसूरवार हो बहादुर ।

बहादुर — आगे से ऐसा नही होगा साहब ।

जानकी — छोड भी दीजिए अब इसमे इस बेचारे का क्या कसूर । इसकी गलती म इसका अपना तो कोई स्वार्थ नही है न ।

वर्मा — ठीक है बहादुर । आगे से इस बात का ध्यान रखना कि कभी भी मेरा पर्सनल काम कालेज के खर्च से नही होना चाहिए और यह लो 300 रु० कल कालेज मे जमा करवा देना ।

सगीत अन्तराल

(कुछ समय पश्चात्)

वर्मा — आईए शर्मा जी बैठिए ।

शर्मा — यह कुछ पिछले महीने के स्पोटस के बिल हैं ।

वर्मा — लाईए दीजिए । (पढता है) अकेले क्रिकेट का बिल बीस हजार का ।

शर्मा — जी उन्होने प्रैक्टिस के लिए सामान खरीदा है ।

वर्मा — प्रैक्टिस बाल 40 रु० की । कौन है क्रिकेट कोच ?

शर्मा — जी नरजिन्द्र । नरजिन्द्र कुमार श्री वास्तव । उन्हे बुलाऊ ?

वर्मा — हा । नही रहने दो । मैं उसे कल बुला लूगा । यह सब हो क्या रहा है शर्मा जी ?

शर्मा — अब क्या कहें सर । आपको तो मालूम ही है कि सब कुछ जानते हुए भी मेहता साहब ने यह सब रोकने की कोशिश नही की ।

वर्मा — मुझे मालूम हुआ है कि मेहता साहब के आडर के मुताबिक कालेज का हर खर्च उमेश जो कि यहा का प्रधान है उसके जरिए होता है ।

शर्मा — जी ।

वर्मा — आप ऐसा कीजिए कि एक आडर टाईप करवाकर मेरे पास लाईए कि आगे से हर काम का खर्च अकाऊट सैक्शन करेगा ।

शर्मा — मगर इससे तो प्रधान बहुत नाराज होगा ।

वर्मा — यह कालेज किसी की खुशी और नाराजगी से आगे नही बढ़ेगा । यहा पर वही होगा जो उचित होगा ।

सगीत अन्तराल

प्रधान — इस क्रिमिनल ने मेरे उस गिरेबान पर हाथ डाला जिसकी तरफ मेहता के दमन की भी हिम्मत नहीं होती थी ।

भटनागर	अगर कहो तो यूनियन की मीटिंग बुला लें ।
प्रधान	अभी नहीं । पहले मुझे वर्मा से मिल लने दो । मैं अभी आया तुम यहीं मेरा इन्तज़ार करना । (दरवाज़ा खोलता है) मुझे आपसे बात करनी है ।
वर्मा	इस समय म बीज़ी हू थोडी देर बाद आईए ।
प्रधान	नही मुझे अभी करनी है ।
वर्मा	आप कमरे से बाहर निकल जाईए ।
प्रधान	ऐसा मुझे आज तक किसी न नही कहा ।
वर्मा	मगर मैं कह रहा ह । दोबारा जब भी आओ पूछ कर आआ । न्यू यो कैन गो ।
प्रधान	आपने मेरी बहुत इन्सलट कर दी वर्मा साहब । मुझे आपसे ऐसी उम्मीद नही थी । कोई बात नही अब मैं आपसे यूनियन के प्लेट फाम पर ही बात करूगा । (दरवाज़ा खोलता है और बाहर आता है) ।
भटनागर	क्या हुआ ?
प्रधान	इसका दिमाग दरुस्त करना ही पडेगा । आज इसे बताना ही पडेगा कि मेरे बगैर इस कालेज में एक कदम भी बढाना बहुत कठिन है । तुम कहा जा रहे हो तजिन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी ।
तजिन्द्र	प्रिंसिपल साहब न बुलाया है ।
प्रधान	किस सिलसिले मे ?
तजिन्द्र	मालूम नही । मैं जरा होकर आता हू । (प्रिंसिपल के कमरे मे) आपने मुझे बुलाया था सर ।
वर्मा	आप ?
तजिन्द्र	जी मैं यहा का क्रिकेट कोच हू ।
वर्मा	अच्छा अच्छा आप है । बैठिए । कैसी चल रही है क्रिकेट की टीम ।
तजिन्द्र	जी बहुत अच्छी । लड़के जी तोड प्रैक्टिस कर रहे हैं ।
वर्मा	क्या बात है पिछले दो सालों स हम चैम्पियन नही बन रहे ।
तजिन्द्र	जी वो कुछ अच्छे लडके एकदम ही बी ए करने के बाद कालेज छोड गए थे ।
वर्मा	इस साल चासेज कसे हैं ?
तजिन्द्र	जी बहुत अच्छे है । मुझे पूरी उम्मीद है कि चैम्पीयन हम ही होंगे ।
वर्मा	गुड । यह जो क्रिकट के सामान की खरीद है यह आप करते हैं ?
तजिन्द्र	जी हां ।
वर्मा	यह जो प्रैक्टिस बॉल 40 रु० के हिसाब स आपने 10 दजन खरीदे हैं इसस मैं सतुष्ट नहीं हू ।

तजिन्द्र	मैं आपका मतलब नहीं समझा सर।
वर्मा	मेरा कहने का मतलब है कि यह बाल 40 रु० की नहीं है।
तजिन्द्र	माफी चाहता हूं सर। क्रिकेट के बारे में शायद आपको मालूम न हो यह सबसे मंहगा खेल है।
वर्मा	निखिल वर्मा को जानते हो ?
तजिन्द्र	जी वो तो इस देश के बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं।
वर्मा	निखिल मेरा बेटा है और मैं खुद भी खेलता रहा हूं और तुम्हारा यह कहना कि मुझे क्रिकेट के बारे में जानकारी नहीं है यह तुम्हारी भूल है।
तजिन्द्र	मगर फिर भी यह गेंद 40 रु० की ही है।
वर्मा	(दराज में से एक गेंद निकालता है) यही गेंद न।
तजिन्द्र	जी हां यही गेंद।
वर्मा	यह रहा इस गेंद का बिल 18 रु०।
तजिन्द्र	(घबराते हुए) मगर उसने तो मुझे
वर्मा	उसे ऐसा करने के लिए तुमने ही कहा था।
तजिन्द्र	मगर सर मैं
वर्मा	यह फ्राड कब से कर रहे हो ?
तजिन्द्र	मुझे माफ कर दीजिए सर। मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं कहां जायेंगे।
वर्मा	अगर आप माफी मांगना चाहते हैं तो लिख कर दीजिए।
तजिन्द्र	(सम्भल जाता है) लिख के तो मैं नहीं दूंगा।
वर्मा	तो फिर तुम्हें क्षमा भी नहीं किया जा सकता।
तजिन्द्र	ठीक है जो करना है कीजिए। मैं जा रहा हूं। (चला जाता है)
	(आफिस के बाहर प्रधान खड़ा है)
प्रधान	क्यों क्या हुआ ?
तजिन्द्र	लगता है मैं सस्पैंड हो जाऊंगा।
प्रधान	मेरे होते हुए न तो यह हुआ है और न ही होगा।
	संगीत अंतराल
वर्मा	कहिए क्या कहना चाहते हैं आप अपने बारे में ?
प्रधान	मैं अपने बारे में नहीं तजिन्द्र के बारे में कुछ कहना चाहता हूं।
वर्मा	कहिए ?
प्रधान	जिसकी बदौलत आज इस कालेज की टीम इस राज्य में अपना नाम रखती है। जिसकी मेहनत से ही इस कालेज के खिलाड़ी देश की टीम में खेल रहे हैं और आपने उसे प्रोत्साहन देने की बजाए उसके हाथ में सस्पेंशन लैटर थमा दिया। मैं पूछना चाहता हूं क्यों ?
वर्मा	इस क्यों का जवाब तुम मुझसे बेहतर जानते हो।

प्रधान — मैं कुछ नहीं जानता। मैं इस तरह स्टाफ के साथ ज्यादती नही होने दूगा।

वर्मा — जान बूझ कर किए गए फ्राड को क्षमा नही किया जा सकता। किसी भी कीमत पर नही चाहे कोई भी हो।

प्रधान — तो यह आपका आखरी फैसला है।

वर्मा — जी हा।

प्रधान — तो फिर आप भी सुन लीजिए वर्मा जी। आपकी हठधर्मी के कारण ही अब कालेज मे पढाई नहीं हडताल होगी।

सगीत अन्तराल

(नारो का शोर)

भटनागर — मधुसूदन जी आप कहा जा रहे हैं ?

मधुसूदन — कुछ विद्यार्थी कक्षा म मेरी प्रतीक्षा कर रहे होगे।

भटनागर — अन्दर कोई भी नही होगा। आप यहा हमारे साथ बठिए।

मधुसूदन — सर्वप्रथम मैं आपसे केवल यही अनुरोध करूगा कि आप मुझे यहा रोकने की चेष्ठा मत कीजिए।

भटनागर — और दूसरे।

मधुसूदन — और दूसरे आप का यह कहना कि भीतर कोई भी विद्यार्थी उपस्थित नहा होगा। सत्य नही है। पढने के इच्छुक विद्यार्थी कक्षा मे होगे और पढाने के इच्छुक अध्यापको को रोकना दुखदायी होगा।

एक स्वर — मधुसूदन जी ठीक कहते हैं भटनागर साहब। आप हमे जाने दीजिए।

भटनागर — अरे ओ प्रिंसिपल के चमचो। आराम से बैठ जाओ।

मधुसूदन — कैसे बैठ जायें यहा और क्या करें ? अगर आप अपने समस्त कर्त्तव्यो को भुलाकर शिष्टाचार एव अनुशासन की अवहेलना कर रहे हैं तो इसका मतलब यह नही कि हम भी ऐसा ही करें।

भटनागर — आराम से बैठ जाओ यहा।

एक — आप हमारे साथ इस तरह की जोर जबरन्ती नही कर सकते।

दूसरा — आराम से बैठता है कि नही कि दिखायें दो चार हाथ।

तीसरा — मारो साले को। कुछ ज्यादा ही आदर्शवादी बनता है।

मधुसूदन — अरे अरे सभ्य इसानो जैसी बात करो। यह कोई तरीका है।

एक — मैं कहता हू छोड दीजिए।

भटनागर — ले जाओ इनको यहा से। हम इस कालेज मे पढाई नहीं होने देंगे। यह हमारा भी आखरी फैसला है।

सगीत अन्तराल

(नारो का तेज शोर और फिर हल्ला)

वर्मा	20 दिन हो गए इस स्टराईक को ।
जानकी	आप उनकी बात मान क्यो नही लेते ?
वर्मा	कैसे मान लू जानकी ? अगर इसी तरह इनकी नजायज मागो के आगे झुक जाऊँ तो लोग सच्चाई, ईमानदारी और आदर्श की बातें भी सुनना पसन्द नही करेंगे ।
जानकी	आपके आदर्शों ने भी तो आपको सिवाए दु खो के और कुछ नही दिया । अगर आप के सिद्धा त चट्टान की तरह मजबूत हैं तो फिर क्यो तजिन्द्र को सस्पेंड करने के बाद आप इस तरह गुमसुम हैं ।
वर्मा	उस बेचारे के भी बाल बच्चे होंगे ।
जानकी	तो फिर बहाल कर दीजिए उसे ।
वर्मा	ऐसा करना मेरे सिद्धान्तो के खिलाफ है ।
जानकी	आपकी बातें तो मेरी समझ म नही आती । (नारो की आवाज ऊचा और मैदान म)
प्रधान	साथियो । आज हमारी लडाई का बीसवा दिन है और मुझे खुशी है कि हम सब क जोश म किसी भी तरह की कोई कमी नही आई । हमारा यह सघर्ष अगर बीस महीने भी चलेगा तो भी हम अपन स्टाफ के लिए लड़ेंगे ।
भटनागर	टीचज यूनियन जिन्दाबाद
प्रधान	मगर हम अफसोस है कि मैनेजमेंट न हमारे ऊपर एक ऐसा निक्कमा प्रिंसिपल थोपा जिस के सीने मे दिल नाम की कोई चीज ही नही है । स्टाफ पर नजायज तरीके से रौब डालना कामकाज मे खामिया निकालना और लोगो को सस्पड करने के सिवा इस और आता ही क्या है ? अगर इस कालेज के विद्यार्थीयो का नुक्सान हो रहा है तो इसका जिम्मेदार सिर्फ वर्मा है । अगर इसका बस चले तो हमारे बच्चो क मु ह स रोटी के नवाले तक छीन ले और ऐसे इसान को इसान नही जल्लाद कहना चाहिए । शायद घर के आरामदार सोफे पर बैठे हुए उस जल्लाद के काना तक मेरी आवाज पहुँच रही होगी । अगर उसम हिम्मत है तो हमारी बातो का जवाब यहा आकर दे । (आवाज धीमी) मैं जानता हू वो यहा नही आयगा क्योकि यहा आन क लिए शेर का कलेजा चाहिए ।
जानकी	आप कहा जा रहे हैं ?
वर्मा	वो मुझे बुला रहे हैं जानकी और मुझे वहा जाना ही चाहिए ।

जानकी — आप वहा मत जाईए।

वर्मा — अगर मैं वहा नही जाता तो उनके आरोप जो मुझ पर लग रहे हैं सही समझे जायेंगे। मैं वहा जरूर जाऊगा। (ऊची आवाज मे नारे लग रहे हैं और सभी एक दम चुप क्योकि उनकी नजर वर्मा पर पडती है वर्मा स्टेज पर पहुँचता है)

वर्मा — आप सब लोगो को मुझसे शिकायत है कि मैं स्टाफ के साथ अच्छा व्यवहार नही करता। मै यहाँ पर आए हुए सभी इन्सानो से पूछना हू कि कोई भी हाथ खडा करके कहे कि मैंने उसे तग किया है। कल जब मधुसूदन जी कलास म जाना चाहते थे तो आपने उन्ह रोका। उनके साथ आपका व्यवहार देखकर यहा के विद्यार्थी क्या सीख कर जायेंगे। कहा जाता है कि अध्यापक ही देश के भविष्य का निर्माण करते है। मैं पूछना चाहता हू आपसे कि इस देश के भविष्य की इमारत का निर्माण जिन्दाबाद और मुर्दाबाद के नारो से क्यो हो रहा है। क्या आज हर जगह हडताल, अहिंसा शहर बन्द देश बन्द और सब कुछ खत्म हो रहा है क्यो? क्योकि इस देश की बगिया को सीचने स आपसे कही न कही भूल हुई है। देश के भविष्य का निर्माण करने वाले आज खुद जिन्दाबाद, मुर्दाबाद के नारो म अपना अस्तित्व तलाश कर रहे है। आप लोग विद्यार्थियो को क्या शिक्षित करोगे जबकि आप खुद शिक्षित नहीं आपको शिकायत है कि कहीं मैं आपके बच्चो के मुह स रोटी के निवाले न छीन लू। मैं यहा का प्रिंसिपल नहीं हू। जल्लाद और यही जल्लाद आपसे बिनती करता है कि आप इस तरह बच्चो के भविष्य से खिलवाड मत कीजिए। अगर मेरे रहने से आपको दु ख पहुँचता है तो मैं यहा और नही रहूगा। आई विल रिजाईन। (इतना कह कर स्टेज से चला जाता है)

प्रधान — साथियो। आज हमने यह सघर्ष जीत लिया और वर्मा भी चला जायेगा। जब तक वर्मा घर न्ही पहुँचता हमारे नारो की बुलन्द आवाज उसके कानो तक पहुँचनी चाहिए। टीचज यूनियन (कोई साथ नहीं देता) आप लोग मेरे साथ नारा क्या नही लगाते बाला टीचज यूनियन

भटनागर — नही अब तुम्हारा कोई साथ नही देगा और ना ही हम प्रिंसिपल साहब को यहां से जाने देंगे।

प्रधान — तुम्हारा दिमाग तो नही खराब हो गया भटनागर।

भटनागर — दिमाग खराब था। अब नही है। आज हमे मालूम हुआ कि अध्यापक क्या होता है? विद्या जैसी पवित्र सस्थाओ म से कम यह जिन्दाबाद मुर्दाबाद के नारो की आवाज - चाहिए।

नई सुबह

पात्र परिचय

कृष्ण देव
उमाशंकर
मानव—प्रताप सिंह
सुभद्रा
विकास
रमेश
सुनील
वेटर
अखबार बेचने वाला
एक आदमी
दूसरा आदमी

(आश्रम मे हवन हो रहा है और कोई 10 12 मनुष्य मंत्रो का उच्चारण कर रहे हैं और मंत्रो की समाप्ती के पश्चात् स्वामी कृष्ण देव अपने प्रवचन सुना रहे हैं।)

कृष्ण देव — सभी धर्मों का आदर ही सच्ची श्रद्धा है भक्ति है। मानव को यह जान लेना चाहिए कि जितने मत हैं उतने ही पथ और यह सभी पथ जिस स्थान पर पहुच कर समाप्त होते हैं वहा मानव की मानवता जागरूक होती है। मनुष्य को यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि विभिन्न धर्मों के विविध सम्प्रदाय केवल एक ही परमात्मा की अभिव्यक्तिया हैं। मनुष्य उस प्रभु को कितने ही नामो से पुकारते है। लोगो ने इसे कितने ही नामो से विभाजित सा कर दिया है। परन्तु फिर भी प्रत्येक नाम म उस पालनहार की शक्ति विद्यमान है। मानव को मानवता का संदेश इस संसार म इस समाज की दिशाओ म बिखेरना चाहिए। मानवता हम इस बात का आदेश देती है कि हम किसी के भी प्रति घृणा न करें।

एक — स्वामी कृष्ण देव की

सभी	जय
	स्वामी कृष्ण देव की जय
	संगीत अंतराल
कृष्ण देव	उमा शंकर ।
उमा शंकर	जी गुरुदेव ।
कृष्ण देव	बहुत समय से एक बात हृदय में जागृत होने की चेष्ठा कर रही है ।
उमा शंकर	आज्ञा कीजिए गुरुदेव ।
कृष्ण देव	वो जो मानव अकेला कार्य में मग्न है । कौन है वो ?
उमा शंकर	इसे इस आश्रम में आए लगभग एक वर्ष होने को है । यह बहुत कम बोलता है और इस आश्रम द्वारा सौंपा गया प्रत्येक कार्य बड़ी श्रद्धा और लगन से करता है ।
कृष्ण देव	इसी कारण वश तो हम पूछ रहे हैं कि यह कौन है ? और क्यों संसार से विरक्त होकर यहां आया है ?
उमा शंकर	लगता है जैसे इसकी आत्मा पर बहुत बड़ा बोझ हो ।
कृष्ण देव	तो क्या यह आत्मा का बोझ हल्का करने के लिए इस शांति वन में उपस्थित हुआ है ।
उमा शंकर	ऐसा ही लगता है गुरुदेव ।
कृष्ण देव	मैं कुटिया में जा रहा हूं । इसे मेरे पास आने के लिए कहो । उसे अकेले ही भेजना ।
उमा शंकर	जो आज्ञा गुरुदेव । (पाज)
उमा शंकर	मानव
मानव	जी
उमा शंकर	तुम्हें इस समय गुरुदेव के सम्मुख उपस्थित होना है ।
मानव	मुझे गुरुदेव के सम्मुख ?
उमा शंकर	ऐसी ही उनकी इच्छा है ।
मानव	तो चलिए ।
उमा शंकर	तुम्हें अकेले ही जाना है । ऐसा ही आदेश है गुरुदेव का ।
मानव	मगर मैं अकेला कैसे सामना कर सकूंगा उनका । आप भी साथ चलिए न ।
उमा शंकर	उनकी किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता और न ही तुम ऐसा करने का साहस करना । जाओ गुरुदेव इंतजार कर रहे होंगे ।
	पाज
मानव	क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?

कृष्ण देव — आओ। बैठो बहुत समय से तुम ससार मे समस्त सुख सुविधाओ का त्याग कर इस आश्रम मे श्रद्धा और विश्वास से सभी काय बिना किसी हिचकिचाहट से कर रहे हो ऐसा क्या ?

मानव — यह तो मेरा कतव्य है गुरुदव।

कृष्ण देव — तुम्हारा उत्तर जान कर बहुत प्रसन्नता हुई।

मानव — यह मेरा सौभाग्य है कि मै आपको प्रसन्न कर सका।

कृष्ण देव — तुम्हारा वतमान तो बहुत हो सम्मानजनक है और भविष्य भी ऐसा ही होगा। मगर तुम्हारे अतीत के बारे मे हम अनभिज्ञ हैं और इसे जानने के इच्छुक हैं।

मानव — क्षमा चाहता हू गुरुदेव। मेरा अतीत क्या था शायद यह मैं खुद भी नही जानता।

कृष्ण देव — शायद शब्द का उपयोग करके तुमने प्रश्न का उत्तर अपने आप दे दिया। तुम्हे हमारे सम्मुख अपने अतीत के पन्ने पलटने ही होंगे।

मानव — अब इन पन्ना पर पढने लायक कुछ नही है गुरुदेव।

कृष्ण देव — तुम अपने अतीत को छिपाने की जितनी चेष्टा करोगे उतनी ही हमारी जानने की जिज्ञासा बढ़ेगी।

मानव — गुरुदेव मैं

कृष्ण देव — मैं जानता हू कि तुम अपना अतीत भुलाने के लिए ही यहाँ आए हो। मगर अभी तक एसा नही हुआ है।

मानव — आप ठीक कहते ह गुरदेव। मैं जितना भी भूलने की कोशिश करता हू उतना ही अतीत की यादो के भवर म फसता ही जा रहा हू। मेरी आखो के आगे अधेरा है। मुझे कुछ दिखाई नही देता। मुझे रास्ता दिखाइये गुरुदेव नही तो इस ससार के भयानक अधेरो मे भटक जाऊगा।

कृष्ण देव — किसी भी बात का समाधान तब तक असम्भव है जब तक वो बात किसी के सम्मुख कही न जाए। कहो कौन हो तुम वो कौन सा ऐसा पाप है जिसके प्रायश्चित के लिए तुमने इस समाज का त्याग किया है।

मानव — गुरदेव। मेरा नाम रायबहादुर प्रताप सिंह है।

फ्लैश बैक

एक आदमी — रायबहादुर प्रताप सिंह जी हम अधे और लाचार लोगों के लिए आश्रम बनाना चाहते हैं।

प्रताप सिंह — यह तो बडी खुशी की बात है जो आपने यह सब कुछ करने की सोची।

दूसरा आदमी	हम चाहते हैं कि आप भी इस आश्रम के निर्माण के लिए कुछ चन्दा दें।
प्रताप	विकास।
विकास	यस सर।
प्रताप	चैक बुक है तुम्हारे पास?
विकास	जी। यह लीजिए।
प्रताप	कितन का चैक काट दू?
एक आदमी	जैसा आप मुनासिब समझें।
प्रताप	यह लीजिए पचास हजार का चैक।
एक आदमी	आपका बहुत बहुत धन्यवाद सेठ जी। आप ही तो हैं इस शहर के सबसे बडे दान दाता है। इस दरवाजे से कभी भी कोई खाली हाथ नही गया।
प्रताप	धन्यवाद तो मुझे आपका करना चाहिए क्योंकि आपने मुझे दान देने का अवसर दिया।
दूसरा	यह तो आपकी महानता है जो आप ऐसा सोचते हैं। आज तो इन्सान दूसरा से लिया गया उधार तक वापिस लौटान म कतराते हैं।
प्रताप	उनकी बात छोडिए। अगर आपका किसी और चीज की जरूरत पडे तो बिना किसी झिझक के आना।
एक आदमी	जरूर आएगे सेठ जी। अब हम इजाजत चाहेगे। अच्छा सेठ जी। नमस्कार।
प्रताप	नमस्कार
विकास	अच्छा सर म भी चलता हू। सभी फैक्ट्रियो म कर्मचारियो को तनख्वाह बाटनी है।
प्रताप	ठीक है तुम जाओ।
विकास	अच्छा सर।
प्रताप	ओ० के०। (चला जाता है)
सुभद्रा	मैं कितनी खुशनसीब हू जो आप जैसा पति मिला जो दूसरो का दुख दर्द अपना समझता है।
प्रताप	मगर सुभद्रा। मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हार लिए इस घर की चार दीवारी म खुशिया नही समेट सका।
सुभद्रा	उसकी मर्जी के बिना तो यह प्रकृति भी करवट नहीं बदल सकती। हम तो फिर भी इन्सान हैं।
प्रताप	आखिर उसका यह प्रकोप हम पर ही क्यो। निमित्त प्रत्यक्ष वस्तु से प्यार करते हैं। नफरत करता है।

सुभद्रा — ऐसा सच नही है।

प्रताप — फिर क्या नही हम औलाद की खुशिया नसीब हुई। क्या सुभद्रा क्यो ?

सुभद्रा — शायद वो हमसे यही कह रहा हो कि स्वार्थ से ऊपर उठ कर अपना प्रत्येक काय जो इन्सान या इन्सानियत के प्रति है इसी लगन और विश्वास के साथ करते रहो।

प्रताप — तो क्या एक बेटे का बाप कहलाना स्वार्थ है। औलाद स्वार्थ नही होती सुभद्रा। वो तो प्यार का वो एक समदर है जिसमे हर कोई डूब जाना चाहता है।

सुभद्रा — औलाद स्वार्थ का कारण भी तो बन सकती है।

प्रताप — मगर मैं ऐसा सोच भी नही सकता कि औलाद की खातिर लोगो की भलाई के लिए बढे हुए हाथ वापिस खीच लूगा।

सुभद्रा — मगर ऐसा शायद हमारी औलाद जरूर कर सकती है। इसी लिए शायद हमे औलाद के सुख की बजाए भगवान ने हम लोगो की सेवा करने का अवसर दिया है जो सिफ खुशनसीबो के ही नसीब मे होता है।

प्रताप — तुम ठीक कहती हो सुभद्रा। कभी कभी मुझे न जाने क्या हो जाता है ? सब कुछ जानते हुए भी अनजान सा बन जाता हू।

सुभद्रा — विकास भी तो अपने बेटे जैसा ही तो है।

प्रताप — मैंने भी उसे चीफ कैशियर से ज्यादा अपना बेटा समझा है।

सुभद्रा — मैंने भी उसकी आखो मे कुछ देखा है। हमारे लिए आदर प्यार और सब कुछ।

प्रताप — सुभद्रा विकास बहुत ही अच्छा और मेहनती लडका है। उसमे कुछ करने की क्षमता है और वो करेगा भी। ऐसा मेरा विश्वास है।

(सगीत अन्तराल)

[पश्चिमी सगीत वातावरण को उत्तेजक बना रहा है और तीन स्वर एक साथ जाम टकराकर चीयर्स कहते हैं।]

रमेश — विकास तुम्हारे हाथ कौन सी लाटरी लग गई है ? जो रातों रात अमीर बन गए।

विकास — लाटरी नही लगी मेरे दोस्त। मेरे हाथ तो एक ऐसा खजाना लगा है जिसका मालिक बहुत ही बेवकूफ है।

सुनील — बेवकूफ !

विकास — हा बेवकूफ ! इसके सिवा उसे कोई और नाम दिया ही नही जा सकता। उस बेवकूफ को लोग राय बहादुर प्रताप सिंह

कहते हैं मेरे मालिक जो सिफ दान देना ही अपना फज समझते हैं। उन्हें तो यह देखने की भी फुसत नहीं कि उनके द्वारा दिया गया पैसा जरूरतमन्द लोगो के पास पहुचता भी है कि नहीं।

रमेश — उसके पास दौलत तो बहुत होगी ?

विकास — अरबों रुपय की सम्पति है उसकी।

सुनील — यार विकास इतना बेवकूफ तो नही होगा वो जितना तुम उसे समझते हो।

विकास — तूने भी क्या बात कर दी दोस्त। अगर कोई मुझे मूर्खों की लिस्ट बनाने के लिए कहे तो सब से पहले मैं राय बहादुर प्रताप सिंह का ही नाम लिखूगा।

सुनील — वो क्यो ?

विकास — क्योंकि वो अनादर कर रहा है उस लक्ष्मी का। जिसे हासिल करने के लिए इन्सान इन्सान नहीं रहता। वो तो दौलत को ठोकरें मार मार कर अपने घर से बाहर निकाल रहा है। यह तो हम ही है जो उसकी पूजा करते ह और उसका सही इस्तेमाल करना जानते है।

रमेश — इस बार म बैठकर (सभी हसते है)

विकास — (थोडी शराबी हालत मे) वेटर एक बोतल स्काच और लाओ।

सुनील — लगता है आज कुछ लम्बा हाथ मारा है।

विकास — ठीक सोचा सुनील। आज बीस हजार का फायदा हुआ है मुझे।

रमेश — बीस हजार का मगर वो कैसे ?

विकास — बताता हू पहले नई बोतल खुलने दो।

वेटर — यह लीजिए स्काच की बोतल सर।

विकास — लाओ (बोतल खोल कर शराब गिलासो म डालता है और सभी चीयस कहते हैं)

विकास — हा तो क्या पूछ रहे थे तुम ?

रमेश — वो बीस हजार

विकास — हा वो। तुम तो जानते ही हो कि हमारे मालिक रायबहादुर प्रताप सिंह नहीं प्रताप सिंह नहीं दानवीर कर्ण जो हर रोज गरीबो को भोजन खिलाते हैं और वो भी भरपेट। पाच सौ से कही ज्यादा भिखारी खाना खाते हैं रोजाना और इसका इन्तजाम करता हू मैं। मैं दोस्तो मैं। हर महीने सैकडो बोरी गेहू और चावल की खरीद भी तो मैं ही करता हू और मेरे मालिक को मुझ पर पूरा भरोसा है।

सुनील — और हमारा यार उस विश्वास के ^ामन को तार तार कर रहा है।

रमेश — अगर किसी दिन उसे पता चल गया तो।

विकास — ऐसा कभी हो ही नही सकता क्यो कि उसके पास फुसत ही नही है और दूसरे जिस दिन उसे पता चलेगा उस दिन देखा जाएगा। कल के लिए हम अपना आज क्यो कुरबान कर दें।

रमेश — तुम ठीक कहते हो दोस्त।

विकास — जाम खाली हो गए। इन्हे फि र भरो। अपनी आज की सुहानी शाम के नाम। (जाम भरते ह और चीयस कहते है)

सुनील — विकास एक काम कर यार।

विकास — बोलो।

सुनील — अब की बार यह सारा राशन हमारे अकल की दुकान स खरीदो कुछ हम भी बहती गंगा म हाथ धो लें।

विकास — ठीक है अब की बार ऐसा ही होगा। दोस्त दोस्त के काम नही आएगा तो और कौन आएगा।

रमेश — यह ठीक कहा तुमने विकास। अब की बार अगर तुम्हारा मालिक कोई और फैक्ट्री बनाए तो सिमेंट और सरिया हमारे से खरीदना। बहुत दर म पुराना स्टाक पड़ा है। आधी कीमत पर द दूंगा तुझे। दोस्त दोस्त के काम नही आएगा तो और कौन आएगा।

विकास — तुम भी ठीक कहते हो यार। एक एक जाम और भरो। (जाम भरे जाते हैं) हम सब की खुशिया क नाम। चीयस।

संगीत अन्तराल

(सुबह का उजाला। पक्षी चहचहा रहे हैं)

सुभद्रा — यह लीजिए चाय और यह अखबार।

प्रताप — लाओ। (चाय म एक दो घूट भरता है और अखबार के पन्ने पलटता है) ओ माई गाड।

सुभद्रा — क्या हुआ ?

प्रताप — आज इसी शहर म सर्दी से 45 इन्सान मर गए क्योंकि उनके पास रहने का कोई ठिकाना ही नही था। क्या वाकई ही इतनी सर्दी है।

सुभद्रा — सर्दी का एहसास तो उन्हे होता जिनके पास तन ढांपने के लिए कपड़ा तक नहीं है। आग की लपटो स शरीर को गर्मी देते हैं बेचारे और आखिर आग की ही आगोश मे तो सो जाते हैं सदा सदा के लिए। सड़क पर जन्म लेते हैं और सड़क पर ही दम तोड़ देते हैं।

प्रताप — सुभद्रा तुम्हारा कहना सही है। आज इस देश मे कितने ही लोग होंगे जिन्हे सरकार बनाने और पलटने के लिए वोट देने का तो हक है मगर जिंदा रहने का नही।

सुभद्रा — शास्त्र कहते हैं कि मानव सर्वोत्तम है। मगर कहा है यह सब बातें ? शायद किताबो मे कहानिया ही बन कर रह गई हो।

प्रताप — हमारे इन बडे बडे लोगो के घरो मे रखे हुए कुत्ते बिल्ले भी इन्सानो से ज्यादा बहतरीन जिन्दगी जीते हैं।

सुभद्रा — मेरी एक बात मानेंगे आप ?

प्रताप — क्या मैंने कभी तुम्हारी किसी भी बात से इन्कार किया है। कहो क्या कहना चाहती हो तुम ?

सुभद्रा — आपने अपनी जिन्दगी मे कितनी ही सस्थाओ को चन्दा दिया है। अगर उनका हिसाब लगाया जाए तो लाखो मे ही होंगे। मगर क्या पता आप द्वारा दिया गया पैसा जरूरतमद लोगो तक पहुचता भी है कि नही। मैं चाहती हू कि आप इन गरीब और बेबस लोगो के रहने के लिए कुछ करें।

प्रताप — मैं भी यही सोच रहा था सुभद्रा। मगर क्या हम अकेले इतना बडा काम कर सकते हैं।

सुभद्रा — मैं मानती हू कि यह समस्या पल भर मे ही खत्म नही हो जाएगी। मगर जो हमसे बन पडे वो तो हमे करना ही चाहिए।

प्रताप — करेंगे जरूर करेंगे सुभद्रा। हम एक ऐसे भवन का निर्माण करवायेंगे जिसमे वो लोग रह सके जिनके लिए घर मे रहना एक सपना सा है।

सुभद्रा — शायद आपने यह भी सुना होगा कि सपने भी कभी कभी सच हो जाते है।

(सगीत अन्तराल)

(आफिस मे फोन की घण्टी बजती है)

विकास — हैलो विकास दिस साइड सर आप आ गए—अभी आया सर। (कदमो की आवाज) मे आई कम इन।

प्रताप — आओ विकास बैठो। आज तुमने सुबह का अखबार तो देखा होगा।

विकास — यस सर।

प्रताप — उसमें तुमने एक न्यूज यह भी पढी होगी कि सर्दी की वजह से कुछ लोग मर गए क्योकि उनके पास रहने को घर नही थे।

विकास — जी मैंने पढ़ी थी।

प्रताप	मैं चाहता हू कि ऐसे लोगो के रहने के लिए एक इमारत का निर्माण किया जाए।
विकास	सर इसमे तो बहुत खर्च आएगा।
प्रताप	इसकी तुम चिंता न करो और मैं चाहता हू कि यह सारा काम तुम अपनी देख रेख मे करो। यह कुछ ब्लैंक चैक हैं जो तुम्हारे नाम पर हैं।
विकास	सर मैं अपने आप को बड़ा खुशनसीब समझता हू जो आपने मुझे इस काबिल समझा।
प्रताप	यह सब मैंने सुभद्रा के कहने पर किया है क्योंकि वो तुम्हें कुछ और भी समझती है और हा वो जो पार्क के साथ वाली हमारी जमीन है इमारत वहीं पर बनेगी।
विकास	सर वो जमीन तो हमने नई फैक्ट्री के लिए खरीदी है।
प्रताप	फैक्ट्री के लिए कोई और जमीन खरीद लेंगे।
विकास	सर शायद आपको मालूम न हो कि वो जमीन बहुत कीमती है।
प्रताप	मेरे दस सालों की जिन्दगी से कम। अब यह काम जल्द से जल्द शुरू हो जाना चाहिए।
विकास	ऐसा ही होगा सर।
	(संगीत अन्तराल)
	(विकास और रमेश जोर से हसते हैं)
विकास	, ले भई रमेश अब तो तेरे दिन भी फिरने वाले हैं। तुम्हारा सारा पुराना स्टाक अब इस इमारत के निर्माण पर लगेगा। अपना वायदा तो याद है न। आधी कीमत वाला।
रमेश	पर वो तो यार आज सुबह ही डैडी ने किसी और ठेकेदार को दे दिया पर तू चिंता मत कर हम तुझे पन्द्रह परसेंट डिस्काउंट देंगे और बिल पूरे का बनेगा।
विकास	यह की न दोस्तों वाली बात। कुछ अडवास भी चाहिए या।
रमेश	तुम्हारे पास कुछ है ?
विकास	यह देख ब्लैंक चैक। रायबहादुर प्रताप सिंह ने मेरे नाम से काटे है।
रमेश	तो फिर चलो बैंक चलते हैं।
विकास	हा चलो। फिर उसके बाद सुनील को लेकर वहीं बैठते है।
रमेश	हां यह ठीक रहेगा। तुम बाहर मेरी गाडी मे बैठो मैं घर फोन कर दू की रात देर से आऊंगा (रमेश टैलीफोन का नम्बर मिलाता है) हैलो कौन डैड एक खुशखबरी पुराना स्टाक बिक गया मेरा दोस्त विकास हा वही जो रायबहादुर

प्रताप सिंह के बहुत नजदीक है डैड वो प्रताप सिंह के लिए एक बहुत बडी इमारत बनवा रहा डैड अब तो आपको मानना पडेगा कि हम भी अच्छे बिजनसमैन हैं नही डैड आधी कीमत पर नही पूरी। सिर्फ पन्द्रह परसंट डिस्काउन्ट का लालच दिया है उसे अच्छा डैड रात को थोडा लेट आऊगा आ० क० डड।

(सगीत अन्तराल)

(पांच महीने बाद)

विकास सर आपका महान कार्य सम्पूर्ण हुआ। अब तो लोग आप द्वारा निर्मित उस इमारत म बने घरो म रहकर आपको दुआए दे रह हैं।

प्रताप तुमने भी तो बहुत महनत की है विकास इसका तुम्ह भी तो इनाम मिलना चाहिए।

विकास आपका इतना कह देना ही मेरे लिए बहुत बडा इनाम है सर।

प्रताप आई एम पराउड ऑफ यू माई सन।

विकास थैंक्यू सर। सर मैं एक महीने की छुट्टी चाहता हू।

प्रताप क्या कही जा रहे हो ?

विकास जी दोस्तो क साथ किसी हिल स्टेशन पर

प्रताप हां हां जरूर। अब वैसे भी तुम्ह आराम की जरूरत है। तुम्हारी हिल स्टेशन की यात्रा का सारा खर्च हम देंगे।

विकास थैंक्यू सर।

(सगीत अन्तराल)

(रायबहादुर प्रताप सिंह द्वारा निर्मित भवन के गिरने का शोर और लोगो की चीख पुकार करने की आवाजें। उन्ही आवाजो म स उभरती है अखबार बेचने वाले की आवाज)

अखबार बेचने वाला आज की ताजा खबर आज की ताजा खबर रायबहादुर द्वारा निर्मित इमारत ध्वस्त। पचास मारे गए। 125 जख्मी। आज की ताजा खबर। आज की ताजा खबर। रायबहादुर प्रताप सिंह ने गरीबो के लिए घर नही कब्रिस्तान बनाए। आज की ताजा खबर आज की ताजा खबर।

फ्लश बैक समाप्त

प्रताप मैंने ही उन लोगो के लिए मरघट का निर्माण किया। विकास पर विश्वास करके मैंने बहुत बडी गलती की। विकास के बारे मे मुझे उसके दोस्तो द्वारा ही पता चला। मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

कृष्ण देव तो क्या इसीलिए तुम ससार को त्याग कर यहा आए हो ?

प्रताप — हा गुरुदेव । इस दुघटना स मर दामन पर एक ऐसा धब्बा लगा जिसे अगर मैं चाहू भी तो साफ नही कर सकता ।

कृष्ण देव — ता तुम इस ससार मे दूर इस स्थान पर प्रायश्चित करने आए हो ।

प्रताप — जी गुरुदेव ।

कृष्ण देव — तुम उस पाप का प्रायश्चित कर रहे हो जो पाप तुमने किया ही नही है ।

प्रताप — यह कैसे हो सकता है ?

कृष्ण देव — पापी तुम नही वो है जिसने तुम्हार विश्वास से अपने स्वाथ की पूर्ती की । दूसरो के उद्धार के लिए एकत्रित किए धन का उपयोग अगर मनुष्य अपने स्वार्थो की पूर्ती के लिए करता है तो वह इस समाज मे पापी कहलाने का हकदार है । पाप विकास ने किया और प्रायश्चित तुम कर रहे हो । जीवन मरण तो मनुष्य के हाथ नही है । तुम बिना किसी स्वाथ के लोगो के लिए इमारत बना सकते हो मगर उनका भाग्य तो तुम्हार हाथ म नही ।

प्रताप — मनुष्य के भाग्य के लिए मनुष्य ही उत्तरदायी है और कोई नहीं । इसी लिए इस दुघटना की जिम्मदारी से मैं अपने आप को अलग नही कर सकता ।

कृष्ण देव — एक प्रश्न पूछना चाहता हू । क्या इस इमारत म आश्रित सभी लोग मत्यु को प्राप्त हुए ?

प्रताप — नही गुरुदेव ।

कृष्ण देव — उसमे से कुछ बच भी गए होगे ।

प्रताप — बहुत से उनमे से कुछ ऐस लोग भी हैं जिन्हें खरोच तक नही आई ।

कृष्ण दव — तो फिर इन बचने वाले मनुष्यो के बारे म तुम क्या कहोगे ।

प्रताप — यह उनका भाग्य था ।

कृष्ण दव — और जो मत्यु को प्राप्त हुए वो भी तो उनका अपना भाग्य था । तुमने तो अपना कम किया है और प्रत्येक कम अनिवाय रूप स गुण दोष स मिश्रित है मानव का जन्म हुआ है इसीलिए मरण भी होगा । इस जीवन मरण के चक्रव्यूह म अपने आप को मत उलझाओ मानव । लौट जाओ उस समाज म जिसे त्याग कर तुम यहा आए हो ।

— कौन सा मुह लेकर जाऊ गुरुदेव ।

कृष्ण देव	ससार को त्याग कर सयास ग्रहण करने वाले से ससार मे रहकर अपन समस्त कतव्यो को पूरा करने वाला ही श्रेष्ठ है।
प्रताप	मेर द्वारा किया गया काय लोगो को सिफ दुख ही तो देता है गुरदेव । क्या करू गा कहा जा कर ?
कृष्ण देव	ससार के प्रति ऐसा कोई उपकार नही किया जा सकता जो चिरस्थायी हो। किसी व्यक्ति का हम जो भी कुछ सुख दे सकत हैं वह क्षणिक ही होता है। सुख और दुख के इस सतत ज्वर का कोई भी सदा के लिए उपचार नही कर सकता। हम इस ससार म सुख को नही बढ़ा सकते और न ही दुख का। ज्वारभाटा यह उतार चढाव तो ससार की प्रकृति है। इसक विपरीत सोचना तो वैसा ही है जसे यह कहना कि मृत्यु बिना जीवन के सम्भव है।
प्रताप	आप ठीक कहते ह गुरुदव । मैं वाकई भटक गया था। मैंन तो कोई पाप ही नही किया।
कृष्ण दव	किया है मानव तुमने एक पाप अवश्य किया है।
प्रताप	मैंने कौन सा पाप किया है गुरुदेव ।
कृष्ण देव	अपनी पत्नी को समाज म अकला छोड कर तुमन पाप किया है।
प्रताप	सुभद्रा ।
कृष्ण देव	हां सुभद्रा जो तुम्हारी अर्धांगिनी है तुम्हारे सुख दुख की भागी-दार। उसे अकेला छोड आए मानव ।
प्रताप	मुझे क्षमा कीजिए गुरुदेव।
कृष्ण देव	क्षमा मुझ से नही उससे मागा। इस पाप का प्रायश्चित तो तुम्हें वही करना है। जाओ, मानव उस समाज मे वापिस जाओ। आज इस देश को इस समाज को तुम्हारी जरूरत है सिफ तुम्हारी। जाओ मौत के मु ह म भी जा कर बिना तक वितक किए सत्र की सहायता करो। भले ही तुम लाखो बार ठगे जाओ पर मु ह से एक बात तक न निकालो। निधन के प्रति किए गए उपकार पर गव न करना और न ही उससे कृतज्ञता की ही आशा रखना। एक आदश सयासी होन की अपक्षा एक आदश गृहस्थी होना अधिक कठिन है। जाओ मानव उसी ससार म वापिस जाओ। जो देखो नई सुबह का उजाला जो तुम्ह समाज मे फैले अधेरो मे भी रास्ता दिखाएगा। ☐

पतझड के फूल

पात्र परिचय

वीना
अशोक
विमला
रामदयाल
सावित्री
मुकेश
अमर
शांति
सतोष
इस्पैक्टर
रामदीन
लडके की मा
रामू

(रात के 12 बजे का समय आसमान पर बादल गज रहे थे। दूर कहीं कुत्ता के रोने की आवाज। एक शराबी फिल्मी गाना गुनगुनाता हुआ आ रहा है।)

अशोक — मुझे दुनिया वालो शराबी न समझो मैं पीता नही हू पिलाई गई है। (इतने मे एक कुत्ता भौंकता हुआ शराबी के नजदीक आता है।)

अशोक — साले डराता है मुझे ? चल भाग यहा से कुत्ता कही का (लात मारता है और कुत्ता चू चू करता दूर भागता है) हमे भौंक कर डराता था। हम कभी अपनी बीबी से नही डरे। साली जब भी शराब पीने से रोकती है तो ऐसे ही पिटाई होती है उसकी। (इतने मे बादल जोर से गरजते हैं।)

अशोक — (चिल्लाकर) खामोश। इस तरह गरज कर तुम हमे डरा नही सकते। हमारे साथ हमारी महबूबा है। यह शराब हा हा यह शराब। इसके

दम पर हम सारी दुनिया से टकरा सकते है हा हा सारी दुनिया से (जोर स हसता है)

(सगीत अ तराल)

(एक बच्ची के रोने की आवाज)

विमला चुप हो जा मेरी बच्ची चुप हो जा। अगर तेरे रोते हुए तेरा बाप आ गया तो फिर हम दोनो की खैर नही। (बच्ची और ज्यादा रोती है और साथ साथ माँ भी।)

विमला तुझे पता है जब तेरा बाप नशे म लडखडाता हुआ आएगा। (इसके साथ दरवाजा जोर स खटखट ता है) लो आ गया अब चुप हो जा नही तो वो तुझे रोता हुआ देख रोज की तरह आज मुझे फिर मारेगा। चुप हो जा *(दरवाजा फिर जोर स खटखटाया जाता है।* (विमला जाकर दरवाजा खोलती है)

अशोक (शराब क नशे मे) मैं कब स दरवाजा खटखटा रहा था। तुझे सुनाई नही दिया ? कहा गई थी तू ?

विमला मैंने कहा जाना था। यही बैठी दूसरे कमरे म बच्ची को चुप करा रही थी। देखो कैसे रो रही है।

अशोक इस रोने क सिवा और कुछ आता ही नही है। मगर तू बता कि तू कहा गई थी ?

विमला यहीं तो थी बच्ची के पास।

अशोक देखो। मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो। असल बात तो यह है कि तू बच्ची के पास नही थी। अगर तुम उसके पास होती तो वो रोती ही क्यो ?

विमला मेरी तो समझ म कुछ नही आता कि क्या कहना चाहते हो तुम ?

अशोक मैं क्या कहना चाहता हू ? ठहरो बताता हू। मैं रात को रोज लेट आता हू। 11 12 बजे तक इस दौरान तुम कहा जाती हो ?

विमला शराब ने तो तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है। मैं कहा जाऊगी ?

अशोक कहीं भी मैंने कौन सा पहरा बिठा रखा है। तुम कही भी जाती होगी पिछले दरवाजे से।

विमला हे भगवान।

अशोक हा हाँ कहो ? क्या कहना चाहती हो एक क्या गई ?

विमला मेरे मे इतनी ताकत कहा जो मैं किसी को कुछ कह सकू। अगर मैं ऐसा कर सकती तो शायद तुम शराब कभी न पीते। यह तो मेरी अपनी ही कमजोरी थी।

अशोक — हू। मेरी अपनी ही कमजोरी थी। अब एसा कर अपनी कमजोरी छोड और बहादुरी की तरह सच सच बता कि पिछले दरवाजे से किस मिलन गई थी।

विमला — (गुस्से से) बस करो मैं अब और नही सुन सकती। मैं सब कुछ सह सकती हू मह सकती हू मगर यह नही बर्दाशत कर सकती कि कोई मुझे चरित्रहीन कहे और वो भी मेरा अपना ही पति। जो शराब के नशे मे सारी सीमाए लाघ कर पता नहीं क्या उल्टा सीधा बकता रहता है।

अशोक — हरामजादी (तमाचा मारता है) जुबान चलाती है और वो भी अपने पति परमेश्वर पर।

विमला — (व्यग्य से) हू पति परमेश्वर बनने की काबलियत है तुममे। वो कभी भी शराब के नशे मे अधे होकर अपनी औलाद अपनी बीवी अपने सुनहरे ससार को भूल नही जाते। वो तुम्हारी तरह जानवर बनकर अपनी बीवी से एसा सलूक नही करते जैसा मैं न जाने कितने ही सालो से सहन करती आ रही हू।

अशोक — (हसकर) हा हा हा हा वो क्या पीटेंगे अपनी बीवी को ? वो तो उसके चरण दबाएगे। लाओ मैं तुम्हारे चरण दबा देता हू। भागो मत मैं तुम्हारे चरण दबाऊगा। (और विनोद उसे पकडकर मारना शुरू कर देता है और वो चीखती चिल्लाती है)

बिमला — देखो मेरी तरफ अब कदम बढाने की कोशिश मत करना नही तो

अशोक — जुबान चलाती है (मारता है और वो चीखती है) तूने मेरे मुह पर तमाचा मारा मैं तुम्हे नही छोडूगा। अब नहीं छोडूगा तुझे।

विमला — रुक जाओ वहा। तुम्हारे रहते मेरी बच्ची का भविष्य सुरक्षित नही है। अगर उसके लिए मुझे विधवा भी बनना पडे तो बनूगी। मैं कहती हू रुक जाओ।

अशोक — यह सब्जी काटने वाला चाकू लेकर डरा रही हो। तू क्या मैं तुम्हे नही छोडूगा। (और इस तरह दोनो गुत्थम गुत्था हो जाते है और फिर एकदम विमला की चीख गूजती है और एक आवाज जो अशोक की अतरात्मा की है जोर से हँसती है)

आवाज — हा हा हा हा

अशोक — (शराब का नशा उतर जाता है) कौन हो तुम ?

आवाज — यह सवाल तुम मुझ से पूछ रहे हो या अपने आप से। तुम वाकई बहुत बहादुर हो इतने बहादुर कि अपनी बीवी का कत्ल करने से भी नही चूके।

अशाक मैंने इसका कत्ल नही किया ? मैं ता इसे डरा रहा था। चाकू मेर हाथ मे नही इसके हाथ मे था।

आवाज मगर फिर भी बेचारी तुम्हार जुल्म की चक्की म पिसते हुए इस दुनिया से नाता तोड़कर सदा के लिए चली गई। इसके जिम्मेदार सिफ तुम हो तुम।

अशोक नही नही ऐसा नही हो सकता यह तो महज एक ऐक्सीडट था।

आवाज लेकिन फिर भी कत्ल कत्ल ही है और तुम इससे अपने आपको अलग नहा कर सकते। तुम अपनी जिस महबूबा क बलबूते पथरीली चट्टानो से टकरा जाने की क्षमता रखत थे वा तुम्हारी महबूबा कहा है। शराब महबूबा नही हो सकती, वो तो कलक है इस समाज पर और साथ म तुम जैस लोग जो पति पत्नी क बीच यह कलकित महबूबा लाकर खडी कर दत हो। इस शराब के नशे मे अधे होकर उस वफादार पत्नी का खून कर दिया जो आधी आधी रात तक तुम्हारा इतजार करती थी। क्या काई एसा दिन भी था जिस दिन तुमन उसे न पीटा हो। तुम इसान नही हा अशाक तुम इसान की खाल मे एक वो खतरनाक जानवर हो जिसको इस समाज म रहने का कोई हक नही है। तुम जैसे न जान कितन ही इसान इस समाज को गदला किए हुए है और तुम्ह इस समाज म रहन का काई हक नही है। तुम कातिल हा हा हाँ तुम कातिल हा। तुम्ह जिदा रहन का कोई हक नही है। हा हा तुम्ह कोई हक नही है। तुम कातिल हा कातिल हा कातिल हो।

अशोक हा बिमला मैं ही तुम्हारा कातिल हू। सारी जिदगी दुख ही तो देता रहा तुझे। मैं तुम्हारा कातिल हू और मुझे जिदा रहन का कोई हक नही है।

(सगीत अन्तराल)

(टैलीफोन की घण्टी बजती है)

इन्सपैक्टर पुलिस स्टेशन क्या ? खून हो गया आप कहा स बोल रहे है ? ठीक ह हम अभी पहुच रह है। रामदीन

रामदीन यस सर।

इसपैक्टर रामदीन डीफैंस कालोनी म एक औरत का कत्ल हा गया है। जीप बाहर निकालो।

रामदीन बहुत अच्छा साहब। (जीप वारदात की जगह पर पहुँचती है)

इन्सपैक्टर आप लागा मे से फोन किस महिला न किया था।

सतोष जी मैंन।

इंसपैक्टर — आपका नाम।

संतोष — जी संतोष वर्मा।

इंसपैक्टर — आप मेरे साथ आइए। मौका देखना है। रामदीन तुम यहीं दरवाजे पर ठहरो। और कोई भी अन्दर न जाने पाए।

रामदीन — यस सर। (दोनों अन्दर आते हैं)

इंसपैक्टर — ओह माई गाड। आखिर समझ नहीं आता कि आज के इन्सान को हो क्या गया है? मिसेज वर्मा आपको इन दोनों लाशों के बारे में कब पता चला।

संतोष — इंसपैक्टर साहब। मेरे पति किसी दूसरे शहर टूर पर गये हुए हैं। मैं अपने किसी रिश्तेदार को मिलने जा रही थी। सोचा कहीं वो पाउ से आ ही न जाये तो मैं घर की चाबी इनको देने आई थी। दरवाजा आधा खुला हुआ था। सबसे पहले मैंने विमला की लाश देखी तो आपको फोन कर दिया।

इंसपैक्टर — ओह आई सी (इतने में बच्ची के रोने की आवाज आती है)

इंसपैक्टर — यह रोने की आवाज?

संतोष — इनकी एक छः मास की बेटी है शायद वो रो रही होगी। मैं देखती हूं।

इंसपैक्टर — ओह तो यह पीछे छोड़ गए इस नन्ही सी जान को समाज के भयानक थपेडे खाने के लिए। अब इस बेचारी का क्या होगा?

संतोष — इंसपैक्टर साहब? सुना है इस लड़की की बुआ इसी शहर में कहीं रहती है किसी तरह पता लगाकर यह बच्ची उसको सौंप सकते हैं।

इंसपैक्टर — हां यह ठीक रहेगा। आप उनका एड्रेस नोट करवा दीजिए।

संतोष — एड्रैस तो मुझे भी नहीं पता। हां मुझे याद आया शायद हमारी पड़ोसन कमला को मालूम हो मैं उसे भेज देती हूं।

इंसपैक्टर — हां प्लीज जरा जल्दी भिजवा दीजिए। (संतोष वहां से चल देती है)

रामदीन — साहब यह बच्ची मुझे दे दीजिए अभागी। इसके नसीब में भी माँ बाप का प्यार नहीं लिखा होगा।

इंसपैक्टर — तुम ठीक कहते हो। रामदीन यह सब कुछ यहीं खत्म नहीं हो जाएगा। इन दोनों की गलती का भयानक साया जिन्दगी भर इस बच्ची का आपने गुनाह पर्दों में जकड़ने की कोशिश करेगा।

रामदीन — मगर साहब। इसमें भला इस बच्ची का क्या दोष?

इंसपैक्टर — रामदीन। शायद तुम इस समाज को नहीं जानते यह समाज नहीं है दरअसल यह वो मौसम है जो इन जैसी कलियों को कभी भी खिलने नहीं देता। अगर यह कहीं खिल कर फूल बन भी गई तो उस फूल को

पखुडिया कोमल नही पथरीली होगी। हा रामदीन पथरीली।
(सतोष का कमरे म प्रवेश)

सतोष — इसपैक्टर साहब मैंने कमला को भेज दिया है। वो कह रही थी कि इसकी बुआ को लेकर आ जाऊगी। वो नजदीक हो कही रहती है।

इसपैक्टर — क्या आप बता सकती हैं कि इसने अपनी बीवी का खून क्यो किया होगा।

सतोष — जी मैं ठीक तरह से तो नही जानती मगर अक्सर इनकी लडाई होती रहती थी। अशोक को विमला के चालचलन पर शक था। मेरा ख्याल है इसी वजह से उसने इसका खून किया होगा और बेचारा खुद भी शर्म के मारे आत्महत्या कर बैठा।

इसपैक्टर — हू। तो यह बात है। अक्सर ऐसे केसो मे ऐसा ही होता है। रामदीन इन दोना लाशो को पोस्टमाटम के लिए भिजवा दो।

रामदीन — बहुत अच्छा साहब। (रामदीन लाशो को उठवाने मे लग जाता है थोडी देर मे लडकी की बुआ और उसका पति कमरे मे प्रवेश करते हैं।)

अमर — इसपैक्टर साहब यह सब कैसे हुआ ?

इसपैक्टर — इसके बारे मे ठीक तरह से तो मैं कुछ नही कह सकता मगर मिसिज सतोष वर्मा का कहना है कि अशोक को अपनी बीवी पर शक था कि वो

शान्ति — बस कीजिए इसपैक्टर साहब यह सच नही है। सतोष किसी पर तोहमत लगाने से पहले सच की गहराई तक पहुँचना चाहिए।

सतोष — मैं क्या सारा मुहल्ला यही कहता है कि हर रोज रात को अशोक अपनी बीवी को पीटता था और उसे चरित्रहीन तक कहता था।
(बच्ची रोती है)

शान्ति — मत रो मेरी बच्ची। तुम माँ के प्यार से वचित नही रहोगी। मैं तुझे माँ का प्यार दूगी।

(सगीत अतराल)

(बीस साल बाद जब वह लडकी बडी हो जाती है)

शान्ति — वीना बेटे।

वीना — आई मम्मी। कहिए ?

शान्ति — बेटे कॉलेज का टाइम हो गया और तुम अभी तक

वीना — कहा मम्मी अभी तो पूरे पचास मिनट पडे हैं बस पापा का नाश्ता तैयार कर लू।

शान्ति — तुम रहन दो मैं खुद कर लूगी।

वीना मम्मी । यह कैसे हो सकता है ? मैं चलती हू रसोई म वहो सब कुछ जल ही न जाये । (अमर का प्रवेश)

अमर नाश्ता तैयार हुआ कि नही ।

वीना (दूसरे कमरे से) अभी लाई पापा ।

शाति यह लडकी तो मुझे बस काम करने ही नही देती । कालेज की पढाई और उसके बाद घर का सारा काम । बिल्कुल मां की तरह लगती है । वही शक्ल वही आवाज ।

अमर शाति मैं अपने आप को कितना खुशनसीब समझता हू जब वीना की तरफ देखता हू । ऐसी बेटी भगवान हर किसी को दे ।

(सगीत अतराल)

(कालेज म विद्यार्थियो का शोर)

मुकेश हैलो वीना ।

वीना हैलो मुकेश । कैसे हो ?

मुकेश बस ठीक हू । आजकल पढाई कैसी चल रही है ?

वीना कुछ खास नही बस थोडा बहुत ही पढा जाता है।

मुकेश मैं सब जानता हू वीना तुम मुझे ऐसे ही बना रही हो । इतना ज्यादा न पढा करो आखें खराब हो जायेगी किसी दिन । कभी फुर्सत निकाल कर इधर उधर भी देख लिया करो । मेरा मतलब है हमारी तरफ ।

वीना (सिर्फ हस देती है)

मुकेश वीना आज ऐसा करते ह कि दो पीरियड खाली है कही घूमते हैं ?

वीना न बाबा न यह काम मुझसे नही होगा मैं तो खाली टाईम म घूमने की बजाए लाईब्रेरी म बैठना ज्यादा पसन्द करूगी ।

मुकेश मुझे पहले ही मालूम था कि तुम यही कहोगी ।

वीना तो फिर तुम भी क्यो नही चलते मेरे साथ ।

मुकेश इस लाईब्रेरी मैं तो क्या दुनिया की किसी भी जगह तुम्हारे साथ आखें बन्द किए जा सकता हू ।

वीना मगर मैं तो तुम्हारे साथ तभी चलूगी जब तुम आखे खोल के चलोगे । ठोकर खा गये तो

मुकेश तो तुम सम्भाल लेना ।

वीना मैं ।

मुकेश हा वीना ।

वीना मुझे वो बात करने के लिए कह रहे हो जो तुम्हे करनी चाहिए । खैर छोडो आओ अन्दर चलें ।

(सगीत अतराल)

(दरवाजा खटखटाने की आवाज)

अमर — शांति देखना जरा शायद वीना कॉलेज से आई होगी। (दरवाजा खुलता है) शान्ति अब तो चाय का एक प्याला पिला दो अब तो वीना भी आ गई है।

शांति — अभी लाई।

वीना — मम्मी। आप बैठिए चाय मैं बना कर लाती हू।

शांति — नही वीना तुम कॉलिज से आ रही हो और कुछ थकी हुई भी हो। तुम आराम करो, चाय मैं बना लाती हू।

वीना — ऐसा तो मम्मी हो ही नही सकता। (रसोई घर की तरफ जाती)

शांति — यह लडकी भी पता नही किस मिटटी की बनी हुई है। जिस भी घर में जायेगी सभी को खुश रखेगी।

अमर — मैं तो सिर्फ इतना ही कहूगा शांति कि आज कल ऐसी लडकिया तो बस कहानियो मे मिलती है।

शांति — (भावुक) अगर आज इसके मा बाप जिन्दा होते तो कितने खुश होते।

अमर — अब बीती बातें दोहराने से क्या फायदा ? जाने वाले तो चले गए लेकिन दे गए कुछ यादें कडवी सी। अशोक तो ऐसा न था। फिर क्यो उसने बिमला को मार डाला।

शान्ति — यह तो भगवान ही जानता होगा कि उसने ऐसा क्यो किया ? मगर जहां तक मैं समझती हू कि इसमे दोष अशोक का ही होगा। जब से उसने शराब पीनी शुरू की बस उसी दिन से बिमला को मुसीबतो के काले साये ने अपने मनहूस पजो मे जकड लिया। यह तो अशोक खुशकिस्मत था कि उसको बिमला जैसी पत्नी मिली थी।

अमर — किस्मत के लिखे को कौन टाल सकता है।

शांति — अब क्या पता हमारी वीना की किस्मत मे क्या लिखा होगा ?

अमर — अच्छा ही होगा शांति। वीना जसी इटेलीजेंट लडकी के लिए हम कोई रिश्ता तालाश करने की जरूरत नही पडेगी। वो तो खुद चल कर आएगा हमारे घर तक (वीना का प्रवेश)

वीना — कौन खुद चलकर आएगा हमारे घर पापा ?

अमर — तेरा रिश्ता।

वीना — ओह नो पापा। मैं अपने मम्मी पापा को छोडकर कही नही जाऊगी।

शांति — बेटी। एक न एक दिन तो हर लडकी को जाना है अपने नए घर मे अपने मा बाप को छोडकर।

वीना — मम्मी।

(सगीत अन्तराल)

(कॉलेज के विद्यार्थियो का शोर)

मुकेश हैलो वीना कैसी हो।
वीना बहुत अच्छी तुम सुनाओ ?
मुकेश आई एम फाईन। वीना आज जेम्स बांड की नई फिल्म लगी है चलोगी।
वीना नही मुकेश। सारी आई कांट गो।
मुकेश मगर क्या।
वीना इसका तो मुझे भी पता नही। मुकेश एक बात पूछूँ।
मुकेश हा हा
वीना मुकेश। न जाने कितनी बार तुम मुझे पिक्चर और कही घूमने के लिए कह चुके हो मगर मेरे हर बार इन्कार करने पर भी तुम
मुकेश वीना। मुझे मालूम है कि तुम हर बार मुझे इन्कार करती आई हो और करती रहोगी मगर फिर भी न जाने क्यो मुझे ऐसा लगता है कि कभी न कभी यह पत्थर दिल तो जरूर पिघलेगा।
वीना मुकेश यह दिल पत्थर का नही है। यह धडकता भी है और कभी कभी तो यह बहुत तेज धडकता है। (पीरियड शुरू होने की घण्टी बजती है) पीरियड शुरू हो गया। बची हुई बातें फिर कभी सही। आओ कलास मे चलें।

(संगीत अन्तराल)

रामदयाल (बाहर से आते हुए) सावित्री। मुकेश आ गया कालेज से ?
सावित्री जी अभी नही।
रामदयाल नौकर से कहो कि चाय लाए। ठहरो मै ही कह देता हू। रामू
रामू जी मालिक।
रामदयाल चाय लाओ।
रामू साथ मे कुछ खाने को भी लाऊ मालिक ?
रामदयाल नही।
(रामू जाता है
रामदयाल सावित्री आज फैक्ट्री मे किशन चन्द आया था वो मुकेश को माग रहा था अपनी लडकी मज के लिए।
सावित्री तो आपने हा कर दी क्या
रामदयाल हॉं ?
सावित्री मुकेश से पूछे बिना ही।
रामदयाल इसकी मैं जरूरत नही समझता।
सावित्री क्या वो आपकी बात मान जाएगा ?

रामदयाल	उसे माननी ही होगी । इस घर के जितने भी फैसले है वो घर के बडे लोग ही करते आये हैं । उसे मेरा यह फैसला मानना ही पडेगा ।
सावित्री	वो भी तो एक जिद्दी बाप का जिद्दी बेटा है ।
रामदयाल	मैं कुछ भी सुनना नही चाहता । इस घर मे वही होगा जो मैं चाहूगा । (बाहर स्कूटर आने और रुकने की आवाज)
सावित्री	लगता है मुकेश आ गया ।
रामू	मालिक चाय ।
रामदयाल	रख दो । रामू मुकेश को मेरे पास आने को कहो ।
रामू	बहुत अच्छा मालिक । (नौकर आता है)
सावित्री	चाय लीजिए ।
रामदयाल	(प्याला लेकर चाय की चुस्किया लेता है) ।
सावित्री	देखिए आप उसे प्यार से
रामदयाल	सावित्री मैं कोई उसका दुश्मन तो नही हू और जो कुछ भी करूगा उसकी भलाई के लिए ही मुकेश अन्दर आता है)
मुकेश	आप ने मुझे बुलाया पापा ?
रामदयाल	हा । बेटा । मुकेश मैं चाहता हू कि अब तुम अपनी जिम्मेदारी को समझो । अब मैं भी तो बूढा हो गया हू । अब तो किसी नन्हे मुन्ने से खेलने को दिल करता है ।
मुकेश	मैं कुछ समझा नही पापा ।
रामदयाल	बेटे मैं चाहता हू कि तुम मेरे साथ फैक्टरी मे हाथ बटाओ और घर मे माँ का हाथ बटाने के लिये किसी को ले आओ ।
मुकेश	आपका मतलब है कि ?
सावित्री	हा बेटा बडी देर से इस घर मे शहनाईयो की आवाज नही गूजी ।
रामदयाल	हा बेटा अब तुम शादी कर ही लो ।
मुकेश	पापा मैं भी बहुत दिनो से आपसे एक बात कहना चाहता था मगर हिम्मत नही कर पाता । वीना बहुत अच्छी लडकी है पापा । इस घर के लिए वही उपयुक्त है।
रामदयाल	यह वीना कौन है ?
मुकेश	मेरे साथ कालेज मे पढती है ।
रामदयाल	पढती है या तुम जैसे अमीरजादो को अपने वश मे करती है ।
मुकेश	पापा आपको बिना जाने किसी के बारे मे ऐसा नहीं कहना चाहिए ।
रामदयाल	तुम भी कान खोल कर सुन लो तुम्हारी शादी वहीं होगी जहां मैं चाहूगा ।

मुके॰ नही पापा शादी मैंने करनी है और वहीं करूंगा जहाँ मैं चाहूंगा।

सावित्री बेटे जिद्द मत करो अपने पापा का कहा मानो। मंजू बहुत अच्छी लड़की है।

मुकेश मगर मम्मी मैंने कब कहा कि वो बुरी है।

रामदयाल तो फिर उसके साथ तुम्हें शादी करनी ही पड़ेगी।

मुकेश मैं अगर शादी करूंगा तो सिर्फ वीना से।

रामदयाल मुकेश। अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुम्हें इस घर से बेदखल कर दूंगा।

सावित्री यह आप क्या कह रहे हैं।

रामदयाल वही जो मुझे कहना चाहिए।

मुकेश पापा। आपकी यह शानो शौकत यह दौलत और पुरानी परम्पराओं में जकड़ा यह घर आपको ही मुबारक। जिस दिन भी आप कहेंगे इस घर से चला जाऊंगा। (चला जाता है)

राम एक लड़की की खातिर यह हमें भी छोड़ने को तैयार हो गया। आखिर यह वीना है कौन?

(संगीत अंतराल)

अमर वीना बेटे। कल तुम कालेज छुटने के बाद जल्दी आ जाना।

वीना पापा। क्या मैं घर कभी लेट भी आई हूं?

अमर नहीं नहीं बेटे तुम तो सदा टाइम पर ही आई हो। मगर कल कुछ स्पैशल बात है न इसीलिए कह रहा था।

वीना (खुशी से) स्पैशल। पापा मुझे भी बताओ न क्या स्पैशल बात है कल?

अमर तुम ही इसे बता दो शांति और अच्छी तरह फुर्सत में कभी समझा भी देना।

शांति वीना बेटे। कल कुछ लोग तुम्हें देखने के लिए आ रहे हैं। लड़का बहुत अच्छा है। बैंक में नौकरी करता है। लड़के की मां और कुछ जान पहचान की औरतें आयेंगी।

वीना (बुझे मन से) जी।

अमर क्या बात है वीना?

वीना कुछ नहीं पापा।

अमर बेटी अगर तुम्हें यह शादी पसन्द नहीं तो मुझे बता दे। हम तो तेरी खुशी में ही खुशी है।

शांति बेटी मां बाप कभी भी किसी का बुरा नहीं सोचते। अगर नहीं मम्मी ऐसी कोई बात नहीं है।

शांति मुझे तुम पर पूरा भरोसा है वीना मेरी बेटी ।

(संगीत अंतराल)

(कालेज के विद्यार्थियों का शोर)

वीना हैलो मुकेश ।

मुकेश हैलो ।

वीना क्या बात है मुकेश ? आज रोज की तरह तुम मुझे गेट पर नहीं मिले और तुम्हारे चेहरे से परेशानी भी साफ झलकती हुई नजर आ रही है । क्या बात है ?

मुकेश कोई खास बात नहीं बस ऐसे ही ।

वीना क्या ऐसे ही ?

मुकेश वीना । मेरे मा बाप मेरी शादी करना चाहते हैं ।

वीना (खुशी से) सच । काग्रेचुलेशन मुकेश । तुम्हें तो खुश होना चाहिए ।

मुकेश नहीं वीना यह शादी मेरी मर्जी के खिलाफ है ।

वीना तो इसका मतलब है तुम किसी और को चाहते हो ।

मुकेश हां वीना मै वाकई किसी और को चाहता हू और वो हो तुम । मै न जाने कब से कुछ कहना चाहते हुए भी कुछ न कह सका । यहां कॉलेज में मुझे अगर किसी का सदा इंतजार रहा है तो केवल तुम्हारा । हां वीना सिर्फ तुम्हारा और आज न जाने कैसे कुछ हिम्मत करके मैंने अपनी दिल की किताब तुम्हारे सामने खोल दी है जिसके हर पन्ने पर सिर्फ तुम्हारा ही नाम है । मैं यह भी जानता हू कि तुम मुझे चाहती हो । वीना तुम एक बार हा कह दो अगर मेरे मा बाप हमारी शादी से सहमत न भी हुए तब भी हम किसी दूसरी जगह जाकर रह लेंगे ।

वीना मुकेश तुम यह कह क्या रहे हो ? तुम अपने मा बाप को छोडने के लिए तैयार हो और वह भी मेरी खातिर एक लड़की की खातिर । तुम उस मां को छोडने के लिए तैयार हो जिसने तुम्हें जन्म देते समय न जाने कैसी कैसी तकलीफें सही होगी । उस मां को जो सारी सारी रात जागकर भी अपने बच्चे को सुलाने की कोशिश करती है । मुकेश क्या तुम जानते हो कि भगवान ने मां क्यो बनाई ?

मुकेश नहीं ?

वीना सिर्फ इसलिए क्योंकि भगवान खुद हर समय, हर घर में मौजूद नहीं रह सकता इसलिए उसने औरत को मा का रूप दिया । मा के साथ साथ बाप का रुतबा भी कम नहीं है । उन्होंने जी तोड मेहनत करके तुम्हारी जिन्दगी की हर जरूरत को पूरा करने की कोशिश की होगी ।

वो तो अपने बेटे से यही उम्मीद लगाए बैठे होंगे कि अब उनका बेटा जवान हो गया है और वो कुछ पल चैन की सांस लेंगे (व्यंग से) मगर यहां तो उनका बेटा अपने छोटे से स्वार्थ की खातिर अपने उस फर्ज से मुंह मोड़ रहा है जो उसका उसके मां बाप के प्रति है ।

मुकेश वीना ।

वीना नहीं मुकेश नहीं । मुझे रोको मत आज मुझे भी कुछ कह लेने दो । शायद तुम्हें याद होगा कि उस दिन मैंने कहा था मुकेश यह दिल पत्थर का नहीं है यह भी धड़कता है और कभी कभी तो यह बहुत ज़ोर से धड़कता है । मगर मुकेश कभी कभी यह किसी के सामने श्रद्धा से झुक भी जाता है । मुकेश हमें अपने बड़ों को भूल नहीं जाना चाहिए । मां बाप कभी भी अपने बच्चों का बुरा नहीं चाहते मगर बच्चे कभी कभी ऐसी बातें सोचने लग जाते हैं जो उन्हें नहीं सोचनी चाहिए ।

मुकेश वीना ।

वीना मुकेश शायद तुम्हें मालूम नहीं आज मुझे भी देखने के लिए कोई आ रहा है । तुमसे बिछुड़ने का मुझे दुःख तो बहुत होगा मगर मां बाप के फैसले को मानने से मैं इंकार नहीं कर सकती ।

मुकेश अच्छा वीना चलता हूं ।

(संगीत अन्तराल)

(बाहर स्कूटर रुकने की आवाज । मुकेश कमरे में आता है ।)

मुकेश रामू ।

रामू जी छोटे मालिक ।

मुकेश मम्मी पापा कहीं नजर नहीं आ रहे ।

रामू वो बाज़ार कुछ खरीददारी करने गए हैं । कुछ लाऊं छोटे मालिक ।

मुकेश नहीं दिल नहीं करता ।

(बाहर कार के रुकने की आवाज)

रामू लगता है मालिक आ गए । मैं जाता हूं कार से सामान निकालने ।

सावित्री (अन्दर आती है) आ आए बेटे ?

मुकेश जी मम्मी ।

सावित्री बेटे तुमने कल से कुछ नहीं खाया आखिर वो तुम्हारे पिता हैं । क्या उन्हें इतना भी हक नहीं ?

रामलाल रहने दो सावित्री समझाना उसे चाहिए जो बात को समझ सके । उस लड़की ने तो इसकी आंखों के आगे ना समझी की दीवार खड़ी कर दी

है। मैंने अपनी जिंदगी मे ऐसी बहुत सी लडकियाँ देखी है जो दौलत हासिल करने के लिए किसी हद तक भी गिर सकती हैं।

मुकेश — नहीं पापा प्लीज ! वीना के बारे में ऐसा मत कहिए। यह हमारे खानदान की बदनसीबी है कि आप उसे इस घर मे लाना नही चाहते। हा मा मैं सच कहता हू।

सावित्री — आप मुकेश की बात मान क्यो नहीं लेते ?

मुकेश — नही मा पापा से ऐसा कहने का कोई फायदा नही। यह जहा भी कहेगे मैं शादी कर लूगा।

सावित्री — (खुशी से, सच बेटे।

मुकेश — हा माँ।

रामदयाल — तो अक्ल ठिकाने आ ही गई बरखुरदार की।

मुकेश — यह अक्ल ठिकाने शायद जिंदगी भर न आती अगर वो मुझे मेरा कर्तव्य याद न दिलाती जो मेरा मेरे माँ बाप के प्रति है। हा पापा यह सब उसी लडकी की बदौलत हुआ है जिसको कि आपने न जाने क्या कुछ कह डाला।

रामदयाल — तो क्या वो लडकी ?

मुकेश — हा पापा उसने तो मुझे मजबूर कर दिया कि मैं अपने प्यार को भूल जाऊ अगर इसमे माँ बाप को खुशी मिलती हैं। पापा वो कहती है कि औलाद को यह नहीं भूलना चाहिए कि आज वो जिस स्थान पर पहुचा उसके पीछे उसके मा बाप की न जाने कितनी ही कुर्बानियाँ होगी और वक्त आने पर मा बाप की खातिर औलाद को भी सब कुछ कुर्बान कर देना चाहिए। पापा मैं वहाँ शादी करूगा जहाँ आप कहेंगे।

रामदयाल — मुकेश मैं वीना से मिलना चाहता हू। अभी इसी वक्त।

(संगीत अन्तराल)

(काल बैल बजती है)

शांति — लगता है वो लोग आ गए। (दरवाजा खोलती हैं) आईए बैठिए।

संतोष — बहन जी ऐसा लगता है जैसे आपको पहले भी कहीं देखा है। मगर कुछ याद नहीं आ रहा।

शांति — मुझे भी ऐसा ही लगता है। लडके को भी साथ ले आते वो भी लडकी देख लेता।

लडके की माँ — मेरा कहना वो कभी नहीं टाल सकता आखिर माँ हू न वैसे आपकी लडकी की तारीफ बहुत सुनी है।

शांति	मैं अपनी बेटी की तारीफ करती अच्छी तो नही लगती मगर इतना ही कहूगी कि कभी भी आपको शिकायत का मौका नही देगी।
संतोष	(अपने आप से) समझ नहा आ रहा कि इस औरत को कहा देखा है ?
लडके की मा	लडकी को तो बुलाईये।
शांति	अभी बुलाती हू। वीना बेटे जरा चाय तो लाना।
संतोष	(अपने आपसे) कुछ समझ नहो आता कहाँ देखा है।
लडके की माँ	वाकई आपकी लडकी तो बहुत सुन्दर है जैसा सुना था वसा ही पाया।
शांति	बहन जी आप तो कुछ खा नही रह किसी ख्यालो म खोए लगते है ?
संतोष	नही नही एसी कोई बात नही।
लडके की मा	बहन जी आपकी लडकी तो अब हमारी हुई।
संतोष	(अपने आप) हाँ अब याद आया। आज से बीस साल पहले यहाँ यह यही लडकी तो नही जो उस वक्त छ महीने की थी।
लडके की माँ	अब कोई अच्छा सा महूत निकलवा कर हम इसे अपने साथ ले जायेंगे।
संतोष	आप मेरे साथ बाहर आईए आपसे एक बात करनी है।
लडके की मा	बहन जी मैं अभी आई।
शांति	हा हाँ जरूर। एक साइड पर जाकर।
संतोष	मैं तो कहती हूँ की यह बात यहीं पर खत्म कर दो।
लडके की माँ	मगर क्या ?
संतोष	क्योंकि यह लडकी इनकी अपनी नही है। आज स बीस साल पहले इस लडकी के बाप ने अपनी बीवी की हत्या कर दी थी क्योंकि उसे शक था कि वो चरित्रहीन है।
लडके की माँ	अच्छा किया जो तुमने मुझे बता दिया। आओ अन्दर चलें।
संतोष	बहन जी आप से एक सवाल पूछना चाहते ह और हम उम्मीद है कि आप झूठ नही बोलेंगे। क्या वीना आपकी ही अपनी लडकी है ?
शांति	मैं कुछ समझी नहीं आप कहना क्या चाहते है ? अगर मेरी नहीं भी है तो इससे क्या फर्क पडता है। लडकी तो जैसी है आपके सामने ही है।
लडके की माँ	फर्क पडता है। मैं जानना चाहती हू कि हम जो चिराग लेकर जाना चाहते हैं वो हमारे खानदान को रोशन करेगा या कि उसे जला देगा वीना आपकी ही लडकी है न। आप बताती क्यो नही ?
संतोष	यह कुछ नहीं बतायेंगी। मगर मैं जानती हू की वीना इनकी अपनी लडकी नही है याद कीजिए आज से कोई बीस बरस पहले एक आदमी ने एक चरित्रहीन औरत की हत्या की थी और बाद म खुद भी आत्म

हत्या कर बैठा। वहा एक 6 महीने की बच्ची भी थी और वही बच्ची आज वडी हो गई है शादी के लायक।

लडके की माँ मगर वा हमारे घर की बहु नही बनेगी।

शाति बहन जी ऐसा मत कहिए। मैं आप के पाव पडती हू इसके मा बाप की सजा इस बच्ची को मत दीजिए। इसकी माँ चरित्रहीन नही थी।

सताप आपके इतना कह देने से यह समाज क्या मान जायेगा? इस पतझड रूपी समाज मे ऐसी कलिया कभी नहीं खिलती अगर गलती से कभी खिल कर फूल बन भी गई तो उन फलो मे खुशबू नही होती। मैं तो बस इतना ही कहूगी की पतझड मे फूल नही खिलते। आईए चलें।

लडक की मा चलिए। (दोना बाहर जाती हैं)

वीना माँ क्या मैं आपकी बेटी नहीं हू? क्या मेरी मा ?

शाति नहीं बेटी यह सब झूठ है।

वीना तो फिर यह लोग मुझे इस तरह ठुकरा कर क्यो चले गए? क्या वाकई मैं पतझड का फूल हू? क्या यह समाज इसी तरह बेकसूर लोगो को सजा देता रहेगा? मैं पूछती हू इस समाज से और समाज से उन ठेकेदारो से कि मेरा कसूर क्या है?

शाति तुम्हारा कोई कसूर नही है।

वीना मगर सजा तो मुझे मिल ही गई। ठीक ही कहती थी वो औरत। पतझड में फूल तो नही खिलते।

रामदयाल (बाहर से आते हुए) पतझड मे फूल खिलेंगे बेटा जरूर खिलेंगे।

शाति आप ?

वीना मुकेश तुम?

मुकेश हाँ वीना यह मेरे डैडी हैं?

रामदयाल मैंने बाहर स सब सुन लिया है? पतझड समाज नही यह लोग खुद हैं और पतझड की ही तरह सूख चुका है इनका जमीर। तुम पतझड का नही अब भरी बगिया का फूल हो।



पानीपत की चौथी लड़ाई

पात्र परिचय

मानव
भगवान
राधा
डॉक्टर
नर्स
सुनार
इंसपेक्टर
एक कांस्टेबल
दूसरा कांस्टेबल
प्रभुदयाल
अखबार बेचने वाला
एक औरत

मानव — पानीपत के इतिहास के पन्ने खून की स्याही से तलवार की नोक द्वारा लिखे गए। पानीपत के इतिहास में आज तक केवल तीन लड़ाईयाँ लड़ी जा चुकी हैं। परन्तु चौथी लड़ाई का वर्णन इतिहास के किसी भी पन्ने पर नहीं है। यह लड़ाई कब शुरू हुई और कब समाप्त होगी इसके बारे में कोई नहीं जानता। यह लड़ाई उन दुश्मनों के साथ नहीं है जो भारत अर्थात् सोने की चिड़िया को अपने पिंजर में कैद करना चाहते थे। यह लड़ाई उन लोगों के साथ भी नहीं है जिन्होंने घर में शरण मांगने के बहाने घर के मालिक को ही गुलामी की जंजीरों में जकड़ लिया। यह लड़ाई तो उन लोगों के साथ है जो स्वतन्त्र भारत के स्वतन्त्र नागरिकों के अधिकार अपने विशाल महलों की बुनियादों में दफन कर लेते हैं।

(एक इंसान की खूंखार हंसी और इसी हंसी में गूंजती नारों की आवाज)

हमें क्या चाहिए — इंसाफ

इन्साफ हमारा   अधिकार है।
अधिकारो की लडाई   ,   जीत के रहेंगे, जीत के रहेंगे।
(और यह हसी और भयानक हो जाती है। इस बुलन्द नारों के बीच गोलीया चलने की आवाजें और लोगो की भगदड, चीखें। हसी और भयानकता अपने म समेट लेती है।

भगवान — यह लोग जैसे अन्धो की भीड अपने अधिकारो की प्राप्ति के लिए मौत की दीवार से अपना सिर टकरा रहे हो।
(फिर हसता है और लोगो की चीखो पुकार का शोर थम जाता है मगर भगवान दास की हसी विशाल भवन से टकराकर और भयानकता उत्पन्न कर रही है)

मानव — आप इस तरह हस क्यो रहे हैं ?

भगवान — क्योकि उन्हें मालूम ही नही कि उनके अधिकार तो मेरे पास सुरक्षित हैं। मगर तुम कौन हो ?

मानव — मैं इस शहर में नया आया हू और आपको जानता भी नही। कौन हैं आप ?

भगवान — मैं भगवान हू।

मानव — भगवान ? मगर वो तो ऊपर रहता है।

भगवान — मैं धरती पर रहने वाला छोटा भगवान हू। भगवान दास। दास केवल उसका जो मुझसे भी बडा भगवान है (हसता है) क्यो आए हो यहा ?

मानव — अपने अधिकारो की तालाश म।

भगवान — लेकिन तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि तुम्हारे अधिकार यहा है ?

मानव — मुझे बताया गया है कि इस शहर के नागरिको के अधिकार यही है।

भगवान — हा इस विशाल महल की बुनियादो मे दफन है और इन अधिकारो को लौटा कर मैं इस महल की बुनियाद को खोखला नही होने दूगा।

मानव — तो फिर शायद मैं गलत जगह आ गया हू। अच्छा चलता हू।

भगवान — ठहरो

मानव — जी

भगवान — क्या नाम है तुम्हारा ?

मानव — मानव

भगवान — क्या करते हो ?

मानव	आज मानव कर ही क्या सकता है ? घुट घुटके मरने के सिवा।
भगवान	कितनी योग्यता है तुमम ?
मानव	क्या फायदा ऐसी योग्यता का जो अयोग्य लोगो के कदमो तले कुचली जाती हो।
भगवान	योग्यता इसलिए कुचली जाती है क्योकि अयोग्य लोगो को किसी का सरक्षण प्राप्त होता है। तुम्हें भी सरक्षण की आवश्यकता है।
मानव	मुझे सिर्फ भगवान का सरक्षण चाहिए।
भगवान	मैं ही भगवान हू।
मानव	मैं आपकी बात नही कर रहा।
भगवान	तो फिर किसकी कर रहे हो ?
मानव	जिसकी इजाजत के बिना इसान सास भी नहीं ले सकता।
भगवान	मेरी इजाजत के बिना भी कोई सांस नही ले सकता।
	(तीन चार गोलिया चलने की आवाज)
	इन गोलियो की आवाज सुनी तुमने ?
मानव	(डरते हुए) हा
भगवान	इन गोलिया से कुछ इसानो की सासें रुक गई। लोग मुझे भगवान कहते हैं। उन्हे कम करने के लिए मै ही प्रेरित करता हू और इसका फल भी मुझे ही प्राप्त होना है डरावनी हसी)
मानव	मुझे आपसे डर लगता है।
भगवान	तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नही। तुम मेरी शरण म हो। तुम्हारे अधिकार मेरे पास हैं और उचित समय पर तुम्हें लौटा दूगा।
मानव	वो समय कब आयगा ? आयेगा भी या नही।
भगवान	अवश्य आयेगा मानव।
मानव	मगर कब ?
भगवान	जब तुम्हे अधिकारो की आवश्यकता ही नही होगी।
मानव	मैं कुछ समझा नही।
भगवान	समझने की इच्छा छोड दो सब कुछ समझ जाओग।
मानव	आप तो एक पहेली बनते जा रहे हैं।
भगवान	भगवान एक ऐसी पहली है जिसे कोई भी हल नहीं कर सकता।
मानव	मैं इसे जरूर हल करके रहूगा।
भगवान	ऐसी चेष्ठा भी कभी मत करना।
मानव	मगर क्यो ?

भगवान जिस दिन भगवान की पहेली हल हो गई उस दिक भगवान अस्तित्वहीन हो जायेगा। मुझे अस्तित्वहीन करने की कोशिश करोगे तो तुम्हारी भी सास रुक जायेगी।

मानव नही नही ऐसा मत कीजिएगा।

भगवान (हसते हुए) भगवान की बात जल्दी समझ जाते हो। मेरे बारे म तो सब कुछ जान लिया अपने बारे मे कुछ नही बताओगे हम जानने को उत्सुक है।

मानव म उस गरीब मा का बेटा हू जिसने दिन रात लोगो के कपडे सिल सिल कर मुझे एम ए तक शिक्षा दिलाई। वो सारी जिन्दगी यही समझती रही कि पढने के बाद मेरा बेटा नौकरी करेगा और मैं सुख का साम लूगी। मगर कहा। नौकरी मिलनी दूर मा ने चारपाई पकड ली। मा के इलाज के लिए कहा कहा नही गया। सरकारी हस्पतालो मे गरीब की कोई परवाह नही करता। फिर प्राईवट हस्पताल की दवाईया की लिस्ट बढती गई और घर का सामान घटता गया और एक दिन

(फलैश बैक)

डॉक्टर तुम्हारी मा की हालत खराब है। इन्हे इलाज के लिए दिल्ली ले जाना होगा। बहुत खर्च आयेगा। कर सकोगे ?

मानव हाँ हा डाक्टर साहब माँ की जिन्दगी के लिए अगर बिकना भी पडे तो पीछे नही हटूगा।

डॉक्टर मेरा एक दोस्त वहा है। मैं उसे लेटर लिख दूगा। तुम्हे दस हजार का इन्तजाम करना होगा। इससे ज्यादा भी खर्च हो सकता है।

मानव जी बहुत अच्छा।

डॉक्टर (चलते हुए) नर्स।

नर्स यस सर

डॉक्टर यह कल चले जायेंगे इनका हिसाब देख लेना।

नर्स ओ के सर (चलते कदमो की आवाज)

मानव मा (पाज) मा

राधा (बहुत धीमी और कमज़ोर आवाज़) हू।

मानव ठीक हो न।

राधा हू ठीक हू। मानव बेटा क्या बात है ? तू कुछ परेशान है।

मानव हा माँ

राधा मुझे नही बतायेगा ?

मानव	अब क्या बताऊ मां। तेरे इलाज के लिए दिल्ली जाना है। यहा पर भी पैसे देने है। कहा से आयेंगे इतने पैसे।
राधा	तू मेरी चिन्ता छोड बेटा, इलाज से कुछ नही होगा। जितनी लिखी होगी जी लूगी।
मानव	नही मा, मैं तुम्हारा इलाज जरूर करवाऊगा। मां जो जेवर तुमने मेरी शादी के लिए रखे हैं, क्या न उन्हें बेच दें ?
राधा	नही बेटा, उन्हें नही बेचना वो तो मेरी होने वाली बहु के लिए है।
मानव	मा जेवरो का क्या है ? फिर बन सकते हैं परन्तु मा तो दोबारा नही मिल सकती। तुम्हे मेरी सौगन्ध मा, मुझे जेवर बेच लेने दे।
राधा	अपनी सौगन्ध के बल पर अपनी बात मनवाने की तेरी आदत नही जायेगी। मेरी कमजोरी जानता है न। जा जैसी तेरी मर्जी वैसा कर। सारे जेवर काले सन्दूक मे हैं तथा चाबी भगवान शिव की मूर्ति के पीछे है।
नर्स	यह आपका 6550/ रु० का बिल इसे पे कर दीजिए।
मानव	(हैरानी से) इतना ज्यादा बिल।
नर्स	यह हमारे कन्सैशनल चार्जिस है। (चली जाती है)
मानव	यह तो सरासर लूट है।
राधा	बेटा तू यह सब छोड और जेवर-बेच आ। जा जल्दी जा और जल्दी आना।
मानव	अच्छा मा
	(सगीत अन्तराल)
सुनार	आओ बाबू जी कौन सा जेवर दिखाऊ।
मानव	(बौखलाए हुए) जी जी मैं जेवर खरीदने नही बेचने आया हू।
सुनार	जेवर बचने आए हो।
मानव	जी हा यह देखिए। जल्दी म हू इसकी कीमत लगायें मेरे पास समय नही है
सुनार	समय नही है। ठहरो धर्म काटे पर तोल कर लू। इन सब के लगभग चालीस हजार रुपये बनेंगे।
मानव	जी मन्जूर है जल्दी दीजिए।
सुनार	(अपने आप से) साठ हजार का माल चालीस म दे रहा है। जरूर चोरी का होगा।
मानव	क्या सोच रहे हैं आप ?

सुनार	कुछ नही कुछ नहीं। आप दो मिनट बैठिए मैं घर से पैसे मगवाता हू। आजकल समय खराब है न इतना कैश दुकान पर नही रखता।
मानव	ठीक है आप ज़रा जल्दी कर दीजिए।
सुनार	अन्दर से फोन करता हू (पाज) फोन डायल करता है) हैलो पुलिस स्टेशन जी मैं रामदयाल ज्यूलर बोल रहा हू मेरी दुकान पर एक आदमी शायद चोरी का माल बेचने आया है जी हा ठीक है जी आप जल्दी आ जाईए। (फोन रखता है) (पाज) बस दो मिनट म पैसे पहुच रहे है। (घडी की टिक टिक) (जीप आ कर रुकती है)
सुनार	यही है साहब
इ सपेक्टर	पकड लो इसे
मानव	यह सब क्या है ?
इन्सपैक्टर	थाने चल कर पता चलेगा।
मानव	मैं कुछ समझा नही।
इ सपैक्टर	वो हम समझा देंगे।
मानव	देखिए शायद आपको कोई गलतफहमी हुई है।
इ सपैक्टर	मगर इस डण्डे को कभी गलतफहमी नही होती। इस चोर को जीप मे डालो।
एक	चल ओए।
मानव	मेरी बात तो सुनिए।
दूसरा	आराम स जीप मे बैठ जा इसमे तेरी ही भलाई है चलो।
मानव	आप मेरे साथ ऐसी जबरदस्ती नही कर सकते।
एक	ओ अन्दर जीप मे बैठ।
मानव	देखिए आप जो कर रहे हैं ठीक नहीं है। क्या जुम किया है मैंने।
इन्सपैक्टर	वो भी बतायेंगे चिन्ता मत कर पहले थाने चल।
मानव	नही मैं यही जानना चाहता हू। यह मेरा अधिकार है।
इन्सपैक्टर	उठा के जीप म डालो इसे मैं बताऊँगा कि अधिकार क्या होता है (ज़ोर से) उठाओ इसे।
मानव	मेरी मा हास्पिटल मे बीमार है यह जेवर उसके हैं। (जीप स्टाट होती है)
इन्सपैक्टर	ऐसी कहानियां हम दिन मे बहुत बार सुनते हैं। चलो।

मानव (दूर होती आवाज) मैं सच कह रहा हूँ इन्सपैक्टर साहब भगवान के लिए ऐसा मत कीजिए मेरी माँ मर जायेगी ।

(फ्लैश बैक समाप्त)

मानव और मेरी माँ मर गई । मेरे अधिकार जेल की सलाखों के पीछे दम तोड़ते रहे । माँ की चिता को अग्नि भी न दे सका । लावारिस समझ कर उसे जला दिया गया । पुलिस स्टेशन में मुझसे चोरों के गिरोह के बारे पूछा गया जिसे मैं जानता तक नहीं था । कोई मेरी बात पर यकीन नहीं करता । सारे जेवर मालूम नहीं कहाँ गए । समाज की नज़रों में मैं चोर बन गया । मेरे अधिकार मुझसे छिन गए और उन्हीं अधिकारों की तालाश में आप तक पहुँचा हूं ।

भगवान तुम सही जगह पर आये हो मानव । जब तक तुम मेरे साथ हो तुम्हें अधिकारों के पीछे भागने की कोई आवश्यकता नहीं वो अपने आप ही तुम तक पहुंच जायेंगे ।

मानव कैसे ?

भगवान अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए दूसरों के अधिकार छीन लो ।

मानव अगर हर इन्सान ऐसा करने लगे तो अनर्थ नहीं हो जाएगा ।

भगवान इसकी चिंता तुम्हें नहीं करनी चाहिए । मानव । तुम्हें जीने का अधिकार मिला है और तुम्हें जीना होगा । इस कुरुक्षेत्र के युद्ध में कोई किसी का अपना नहीं है । सभी स्वार्थों के तीर चलाकर एक दूसरे का गला काट रहे हैं । अगर तुम्हें अपना गला बचाना है तो आधुनिक युग के शोर करते बान चलाने होंगे ।

मानव शायद आप ठीक कहते हैं ।

भगवान शायद शब्द का उपयोग मेरे सामने फिर कभी मत करना मानव । भगवान जो भी कहते हैं सत्य ही कहते हैं ।

मानव जी (फोन की घण्टी बजती है)

भगवान मैं भगवान बोल रहा हूं (शेर की दहाड़ समाप्त और बिल्ली की तरह) मैं तो दास हूं आपका जी मैंन ? नहीं नहीं भगवान मैं तो ऐसा स्वप्न मे भी नहीं सोच सकता शायद प्रतिद्वंदी ने गलत सूचना आप तक पहुंचाई होगी नहीं नहीं प्रभु मेरा यह मतलब नहीं था जी जी लेकिन मैं अस्तित्वहीन

हो जाऊगा। भगवान मुझे आपके आशीर्वाद की जरूरत है क्या ? नहीं मिलेगा नही नही प्रभु मैं मर जाऊंगा (रोने लगता है) ऐसा मत करें भगवा मैं कही का नही रहूगा। हैलो हैलो। (फोन नीचे रखता है) मैं लुट गया बरबाद हो गया।
(मानव जोर जोर से हसता है) जब भगवान रोता है और मानव हसता है तो जानते हो क्या होता है ?

मानव — क्या ?

भगवान — ताडव।

मानव — ताडव।

भगवान — हा ताडव। चारो तरफ प्रलय। भाई से भाई का कत्ल। धर्म से धर्म का टकराव। भगवान से भगवान की लड़ाई। मासूम बच्चो के मुह मे मां के दूध की बजाए मां का खून। चारो तरफ बिखरी लावारिस सडी हुई लाशें। इसे कहते है ताडव। हां हा ताडव (जोर से हसता है और उसी हँसी के बीच बम के विस्फोट गोलियो की आवाज और लोगो की भगदड चीखो पुकार)

अखबार बेचने वाला — आज की ताजा खबर आज की ताजा खबर शहर मे कई जगह बम विस्फोट। अज्ञात लोगो द्वारा नर सहार। 50 मारे गए, 10 जख्मी आज की ताजा खबर। आज की ताजा खबर ।

(सगीत अतराल)

(भगवान दास फोन के नम्बर डायल करता है)

भगवान — मैं भगवान बोल रहा हू मेरी बात ध्यान से सुनो। कल शहर मे हडताल होगी और शाम को एक बहुत बडा जलसा जिसको हम सम्बोधित करेंगे। ज्यादा से ज्यादा लोगो की भीड इकट्ठी होनी चाहिए यह हमारा शक्ति परीक्षण है और उस जलसे म एक बहुत बडा विस्फोट होगा जो आवाज ज्यादा करे नुक्सान कम ।
(बहुत लोगो की भीड और उस भीड को सम्बोधित कर रहे भगवान दास)

भगवान — आज फिर स्वतन्त्र भारत को गुलामी की जजीरो से जकडने की कोशिश की जा रही है। हमे सावधान रहना है उन षडयन्त्र कारियों से जो हँसते खेलते भारत को काल का ग्रास बना रहे हैं। हमे होशियार रहना है उन लोगो से जो धर्म को ढाल बना

कर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं। मैं पूछता हू कि यह कहा का इन्साफ है कि मासूम और निर्दोष लोगो के खून से इस धरती पर कलकित इतिहास लिखा जाए।

(दो तीन भीषण विस्फोट और भगदड)

कुछ देश के दुश्मन मेरी आवाज को बन्द करना चाहते हैं मैं उन्हें बता देना चाहता हू कि जुल्म और अन्याय के खिलाफ मेरी यह जग आज से शुरू होती है इस पानीपत की ऐतिहासिक धरती से मैं पानीपत की चौथी लडाई का आह्वान करता हू।

मानव — (कान म फुसफुसाते हुए) गाडी तैयार है आपको निकल चलना चाहिए।

भगवान — (धीमे से) ठीक है गाडी स्टार्ट रखो। (ऊँची आवाज से लोगो का शोर और विस्फोट)

मानव — सब कुछ तैयार है आईए।

(गाडी के पास पहुचते हैं दरवाजा बन्द होने की आवाज गाडी चलती है)

मानव — इस भगदड मे न जाने कितने लोग पाव तले कुचले गए कुछ बच्चों को कुचले जाते हुए तो मैंने भी देखा है।

भगवान — वो तो ठीक है अब मेरी बात सुनो कल सुबह के अखबारों में पहले पन्ने पर हमारी खबर बडे बडे अक्षरो म छपनी होगी कि हम पर कातिलाना हमला हुआ। हम बाल बाल बच गए। समझ गए।

मानव — जी।

भगवान — मुझे घर छोड देना और गाडी ले जाना। इस ब्रीफकेस म नोटो के बडल हैं। आज से इन्हें तुम हमारे लिए खर्च करोगे।

मानव — जी बहुत अच्छा।

भगवान — खर्च करने मे सकोच मत करना।

मानव — नहीं करूगा।

(गाडी रुकती है)

भगवान — सारे इन्तजाम करके जल्दी लौट आना। तुम्हारा परिचय कुछ लोगो से करवाऊगा। जल्दी आना।

मानव — जल्दी आऊगा आप चिन्ता न कीजिए।

भगवान — तो फिर जाओ।

(गाडी आगे बढती है)

(सगीत अन्तराल)

भगवान — आओ प्रभुदयाल मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। क्या समाचार लाए ?

प्रभुदयाल — बडे भगवान का सिंहासन डोलने लगा है।

भगवान — (हंसते हुए) डोलेगा अभी और डोलेगा। उस पर बैठना उसके लिए मुश्किल हो जायेगा।

प्रभुदयाल — वो सिंहासन तो आपके योग्य है।

भगवान — हां और वो ही मेरी मंजिल है और वो ही मेरा अधिकार है। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए मैं उसकी राह मे अनंत कांटे बिछा दूंगा जो उसे अपनी पलकों से उठाने पड़ेंगे।

प्रभुदयाल — और आपका छोटा सिंहासन।

भगवान — वो तुम्हारा होगा प्रभुदयाल।

प्रभुदयाल — सच।

भगवान — हां।

प्रभुदयाल — और वो मानव।

भगवान — मानव तो हम जैसे लोगों को सत्ता तक पहुंचाने मे सहायता करता है। उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं। मानव तो एक कठपुतली है। जैसा नचायेंगे वैसा ही नाचेगा।

प्रभुदयाल — आगामी चुनावों के बारे मे क्या सोचा है ?

भगवान — वो हम जीतेंगे। हमारे धर्म के लोग हमें अपना उत्तराधिकारी बनायेंगे।

प्रभुदयाल — तो फिर इसके लिए हमें आज से कार्य शुरू कर देना चाहिए।

भगवान — इसकी कोई आवश्यकता नहीं। यह काम चुनाव मे दो दिन पहले होगा।

प्रभुदयाल — दो दिन का समय कम नहीं क्या ?

भगवान — दो दिन भी बहुत है क्योंकि धर्म की गति बहुत तेज होती है। यह एक क्षण मे एक किनारे से दूसरे किनारे पहुँच जाता है।

प्रभुदयाल — हम राजनीति की शतरंज मे आपको मात देना कठिन है।

भगवान — क्योंकि मेरे मोहरे अपनी इच्छा से चलते हैं वो खेल के नियमों से बंधे हुए नहीं है। मेरा सबसे सशक्त मोहरा तो वो चला आ रहा है मानव। मानव शक्ति। (हंसता है) आओ मानव बैठो। (मानव बैठता है) इनसे शायद तुम पहली बार मिल रहे हो।

प्रभुदयाल — बंदे को प्रभुदयाल कहते हैं। तुमसे मिल कर बहुत प्रसन्नता हुई।

मानव — जी मुझे भी।

भगवान	मानव क्या समाचार लाए हो ?
मानव	आप द्वारा कहा गया हर काय सम्पन्न कर आया हू ।
भगवान	हम तुमसे प्रसन्न है मानव । लो पियो ।
मानव	जी मैं शराब नही पीता ।
भगवान	यह शराब नही सोम रस है मानव ।
मानव	सोमरस ?
भगवान	हा इसे देवता लोग पीते ह ।
मानव	ता फिर मैं इसे कैसे पी सकता हू । मैं तो मानव हू !
भगवान	(हसता है) यह भी सत्य है ।
मानव	अच्छा जी अब आना चाहता हू ।
भगवान	ठीक है जाओ । कल तुम्ह एक बडे काय को सम्पन्न करना है । जाओ मानव जाओ । (हसता है और जाम टकराते हैं)
प्रभुदयाल	आपके बडे सिहासन के नाम ।
	(सगीत अन्तराल)
राधा	मानव उठो बेटा ।
मानव	(नीद मे) कौन माँ ।
राधा	उठो बेटा ।
मानव	थोडा और सोने दो न ।
राधा	अगर मानव इसी तरह सोता रहा ता सुबह कभी नही आएगी । उठो मानव मरे साथ आओ ।
मानव	मुझे कहा ले जा रही हो माँ ?
राधा	कुछ दिखाने (पाज) का देखो । (एक औरत जोर जोर स रो रही है) (रोती है)
औरत	मेरा एक ही सहारा था वो भी इन जालिमो ने छीन लिया (रोती है)
राधा	यह वो माँ है जिसका इकलौता बटा इमसे छीन लिया गया । उस तरफ विधवा को देखो जो चन्द घटे भी सुहागिन रह सकी । आओ ।
मानव	नही माँ नही रुक जाओ ।
राधा	क्यो डर गए ? मैं ता तुम्ह उसी रास्त से ले जा रही हू जिसका निर्माण करन मे तुमन भगवान दास को सहयोग दिया ।
मानव	मेरे साथ भी कौन सा अच्छा सलूक हुआ ।
राधा	एक गन्दी मछली को मारन के लिए यह जरूरी नही कि सारे तालाब मे ही जहर डाल दो ।

मानव   तुम कहा जा रही हो मां ? रुको।

राधा   मुझे हाथ मत लगाना। तुम्हारे हाथो से इन्सानी खून की बू आती है।

मानव   मा रुक जाओ।

राधा   (दूर होती आवाज़) अगर तू मुझे खुश देखना चाहता है तो तुम्हे गुमराही की दलदल से निकलना होगा।

मानव   रुक जाओ मा। (जोर से) मा। (पाज़) तो क्या यह सपना था ? तो क्या मां की आत्मा को मुक्ति नही मिली ? क्या मेरे हाथो से इन्सानी खून की बू आती है। मां जाने से पहले इस दलदल से निकलने का रास्ता तो बता देती। मां ने ठीक कहा कि मैं एक गन्दी मछली को सजा देने के लिए तालाब में जहर डालता रहा। (निश्चय करते हुए) मगर अब ऐसा नही करूंगा। मुझे रास्ता मिल गया मां। रास्ता मिल गया।

(सगीत अन्तराल)

मानव   बाहर लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

भगवान   आओ मानव आओ—आज हम बहुत प्रसन्न है। हम को सिंहासन मिलने वाला है।

मानव   तब तो आज हम सोमरस जरूर पीयेंगे।

भगवान   हा हम बड़े भगवान हो गए और तुम देवता तो बन ही गए। जाओ वहा से विदेशी सोमरस के जाम अपने लिए और हमारे लिए भी बना कर लाओ।

मानव   जो आज्ञा भगवन (शराब गिलास मे डालने की आवाज़) लीजिए

भगवान   (जाम टकराकर) हमारी सफलता के लिए (पीने की आवाज़) पीने के बाद यह जाम इतना कड़वा क्यों लगा ?

मानव   क्योंकि इसमे जहर था।

भगवान   (डरते हुए) जहर।

मानव   हां जहर। इस धरती के सागर को बार बार मंथन करके जो जहर निकला था भगवान की तरह उसे तुम्हें ही पीना था। क्योंकि तुम भगवान हो। तुम्हारी इजाजत के बिना इन्सान सास तक नही ले सकता।

भगवान   (घुटे गले से) मेरी सांस बन्द हो रही है।

मानव   तुम कुछ क्षणो के महमान हो भगवान दास। ... यह पानीपत की चौथी लड़ाई तुम्हारे साथ ही जायेगी।

भगवान	तुमने मेरे साथ धोखा किया है (मर जाता है)
मानव	तुम्हारे मरने से इतिहास का एक कलंकित अध्याय समाप्त हुआ। लगता है कोई आ रहा है। इसे सोफे के पीछे छिपा दूं) (छिपाता है)
प्रभुदयाल	(आते हुए) भगवान जी कहां है ?
मानव	बस अभी आते हैं बैठिए (पाज) आपसे एक बात पूछूं ?
प्रभुदयाल	पूछो।
मानव	अगर भगवान दास जी मर जायें तो
प्रभुदयाल	जो इंसान यह खबर मुझ तक पहुंचायेगा मैं उसे सोने से तोल दूंगा। मगर यह तुम क्यों पूछ रहे हो ?
मानव	क्योंकि वो मृत्यु लोक को प्राप्त हो गए।
प्रभुदयाल	असम्भव।
मानव	यह देखिए।
	(प्रभुदयाल जोर जोर से हंसता है। डरावनी हँसी)
मानव	आप इस तरह हंस क्यों रहे हैं ?
प्रभुदयाल	क्योंकि अब मैं प्रभु हूं। (फिर हंसता है)
मानव	क्या ? एक और भगवान। तो क्या इस लड़ाई का कभी अंत नहीं होगा ?

अनजान रिश्ते

पात्र परिचय

मदन
निमला
अरूण
रजनी
विद्या
रमेश
हरीश
मोहन
मधु
राजेश
मनोज
माँ
पुरुष स्वर
लड़की स्वर
ड्राईवर

(काल बैल बजती है)

विद्या	बहू देखना तो कौन है ?
रजनी	अच्छा माँ जी । (दरवाजा खोलती है) अरे आप ? इतनी जल्दी आ गए आफिस से ।
अरूण	हां रजनी । (अन्दर आता है)
रजनी	क्या बात है ?
अरूण	कुछ नहीं । एक गिलास पानी पिलाना ।
रजनी	अभी लाई । (पानी लेने जाती है)
विद्या	क्या बात है बेटा ? कुछ परेशान दिखाई देते हो ।
अरूण	कुछ खास नहीं माँ ।
विद्या	इसका मतलब कुछ न कुछ जरूर है । मुझे नहीं बतायोगे ।
रजनी	लीजिए पानी । (पानी पीने की आवाज़) क्या बात है ?

अरुण क्या बात है ?

विद्या बताओ न अरुण ।

अरुण मां मेरी दिल्ली ट्रांसफर हो गई ।

रजनी क्या ?

विद्या क्या ?

अरुण हां मां ।

विद्या बेटा तू मुझे दफ्तर ले चल मैं तेरे साहब से मिलना चाहती हूं ।

अरूण उससे क्या होगा ?

विद्या मैं उन्हें बताऊंगी कि अभी एक ही माह हुआ है तेरे बाप का साया हमारे सर से उठे हुए । तू ही तो एक सहारा है अगर तू ही चला गया तो कैसे होगा यह सब कुछ (सिसकती है)

अरुण मैं बड़े साहब से मिला था और उन्हें घर की हालत की जानकारी दी ।

विद्या तो क्या कहा उन्होंने ?

अरूण कहते हैं चिन्ता मत कर मैं हैड आफिस बात करूंगा और तुझे वापिस बुला लूंगा ।

विद्या ऐसा हो जाएगा ।

अरुण कहा तो ऐसा ही है ।

विद्या बेटा तेरे बिना

अरूण मां जिन्दगी में इतने उतार चढ़ाव तो आते ही हैं अगर इनसे ही इन्सान घबरा जाए तो

विद्या मेरी जगह अगर तू होता तो पता चलता जिन्दगी में सिर्फ दुख ही उठाए हैं ।

अरूण अगर हमारी किस्मत में दुख लिखे हैं तो उठाने भी तो हम ही पड़ेंगे । क्यों न मुस्करा कर उठाए जायें ।

विद्या तेरी यही हिम्मत तो सारे दुख भुला कर कुछ नया सोचने कि प्रेरणा देती है बेटे वरना तेरे पिता की मौत के बाद यह घर बिखर ना जाता ।

अरुण मां तुम इस घर की बुनियाद हो तुम कमज़ोर कभी मत होना यह घर कभी नहीं बिखरेगा । मां मैं दिल्ली जाने की तैयारी कर लूं । आओ रजनी । (दोनों कमरे में पहुँचते हैं) क्या बात है रजनी बहुत चुप चुप हो ।

रजनी (हँसने का प्रयास करती हुई) मैं ? हूं हूं नहीं तो ।

अरुण क्या अपने मन की उदासी मुझसे छिपा सकती हो ?

रजनी	मैं तो आपके सामने एक खुली किताब हूँ छिपाने का तो सवाल ही पैदा नही होता ।
अरुण	अगर इसी तरह तुमने मुझे दिल्ली भेजा तो कैसे बिताऊँगा अपने दिन । प्लीज़ रजनी
रजनी	ऐसा मत कहिए । जब किसी की कोई प्रिय वस्तु उसकी आँखो से ओझल हो रही हो तो उदास होना तो स्वभाविक ही है ना ।
अरुण	अरे पगली मैं कोई सदा के लिए ता नही जा रहा ।
रजनी	आप दिल्ली रहेगे कहा ?
अरुण	मोहन के पास ।
रजनी	कौन मोहन ?
अरुण	मेरा एक बहुत अच्छा दोस्त है जिस दिन हमारी शादी हुई इत्तफाक से उसी दिन उसकी भी शादी थी इसलिए तुम उससे नही मिल सकी ।
रजनी	मगर आप गाजियाबाद म मेरी मौसी के यहा क्यो नही रह लेते दिल्ली के पास ही तो है ।
अरुण	नही रजनी रिश्ते तभी बने रहते है जब तक इसान दूर दूर ही रहे ।
रजनी	कैसी बात करते है । आप । मौसी तो आपको बहुत मानती है । वो नाराज़ होगी जब उसे मालूम होगा कि आप किसी दोस्त के यहा टिके हैं ।
अरुण	मोहन कोई आम दोस्त नही है रजनी अपना से भी बढकर । एक ही तो इसान है मेरे जीवन मे जिसे दोस्त कह सक सच्चा दोस्त ।
रजनी	अगर आपको उस पर इतना भरोसा है तो ठीक है ।
अरुण	बच्चे अभी तक स्कूल से नही आए । टाईम तो हो गया ।
रजनी	बस अभी आ जायेंगे । तो फिर किस गाडी स जा रहे है आप ?
अरुण	आज रात की ।
	रेलगाडी के चलने की आवाज
	(सगीत अतराल)
	(काल बैल बजती है । दरवाज़ा खुलता है ।)
मोहन	(हैरानी से) अरे अरुण तुम यहा ।
अरुण	अन्दर आने क लिए नही कहोगे ?
मोहन	ओ सारी अरुण । अन्दर आओ । बैठो । मधु इधर आना ज़रा ।
मधु	जी ।
अरुण	नमस्ते भाभी ।
मधु	नमस्ते ।

मोहन	मधु यह मेरा दोस्त अरूण है जिसका ज़िक्र मैं अक्सर तुमसे करता रहता हू।
मधु	अच्छा तो आप है ?
अरूण	जी।
मधु	अकेले ही आ गए भाभी को क्यो नही लाए ?
अरूण	जी वो फिर आ जाएगी।
मोहन	बातें ही करोगी या अरूण को कुछ खिलाओगी भी।
मधु	ओह हा अभी लाई। (चली जाती है)
मोहन	बडी देर बाद दिल्ली आए हो तुम।
अरूण	हा यार घर गृहस्थि मे कहा निकला जाता है।
मोहन	हा यह तो ठीक। मगर दिल्ली कैसे आए ?
अरूण	मेरी ट्रासफर हो गई है।
मोहन	रहने का अभी कोई इन्तजाम तो नही किया ?
अरूण	स्टेशन से सीधे तुम्हारे पास ही आ रहा हू।
मोहन	बस तो फिर ठीक है। तुम यही रहोगे मेरे पास और भाभी को भी यही बुलवा लो।
अरूण	नही मोहन वो यहा नही आ सकती। माँ के पास भी तो किसी को रहना चाहिए।
मोहन	तुम्हारे पिता जी तो हैं।
अरूण	पिछले माह उनका देहान्त हो गया था।
मोहन	ओह नो।
अरूण	रात को सीने मे हल्का सा दर्द हुआ और सुबह चारपाई पर उनकी लाश थी। वहा मैनेजर साहब से बात की थी कहते थे कि तुम यहा जाकर ज्वायन तो करो मैं तुम्हें वापिस बुला लूगा।
मधु	लीजिए।
मोहन	ले अरूण। (चाय की चुस्किया लेता है)
अरूण	भाभी चाय तो बहुत अच्छी बनाई है।
मोहन	अब तो रोज मिलेगी ऐसी चाय। मधु अरूण हमारे पास रहेगा इसकी यहा ट्रासफर हो गई है।
मधु	यह तो बहुत अच्छी बात है। लीजिए न भाई साहब आप तो कुछ ला ही नही रहे।
मोहन	इसे अपना ही घर समझो अरूण।
अरूण	तभी तो सीधा यही पहुँचा हू।
मोहन	कब ज्वायन करना है।
	आज ही।

मोहन — ठीक है मैं चेंज कर लू रास्ते म तुम्हे ड्राप कर दूँगा। मधु बात सुनना वो मेरे कपडे निकाल देना।

मधु — अच्छा जी। (दोनो दूसरे कमरे मे पहुचते हैं)

मधु — (फुसफुसाते हुए) कब तक रहेगा यह ?

मोहन — कह रहा था जल्दी ट्रासफर वापिस हो जायेगी। मेरा ख्याल दो तीन महीने लग ही जायेंगे।

मधु — तो क्या दो महीने यहा रहेगा ?

मोहन — आहिस्ता आहिस्ता बोलो।

मधु — दो महीने यही रहेगा ?

मोहन — मजबूरी है।

मधु — काम कहा करता है ?

मोहन — बैंक मे।

मधु — तब तो इसे मैं ज्यादा देर टिकने नही दू गी।

मोहन — नही मधु ऐसा मत करना।

मधु — मेरा यह मतलब नही था।

मोहन — तो फिर

मधु — मेरे मामा जी की पहचान बैंक के एम डी से है उनसे कहकर इसकी वापिस ट्रासफर करवा दू गी।

मोहन — हा यह बात ठीक रहेगी। हम दोनो दफ्तर चलते है तू अपने मामा से बात कर लेना।

मधु — आप बेफिक्र रहना। इसकी ट्रांसफर तो हुई समझो।

(सगीत अन्तराल)

(बाजार का शोर

अरुण — यार मुझे तो यकीन ही नही आ रहा कि सात दिन बाद मेरी वापिस ट्रासफर हो गई।

मोहन — हाँ तुम्हारे मैनेजर साहब ने कोशिश की होगी।

अरुण — जाकर उनका थैंक्स करूगा।

मोहन — अरुण यार आज लच करा दे।

अरुण — नही आज लच तू करवायगा।

मोहन — नही भई आज तो तेरे से ही खाऊँगा।

अरुण — सवाल ही पैदा नही होता।

मोहन — क्यो भई ?

अरुण — पिछले दो दिन से तो मेरे से ही खा रहा है।

मोहन — और जो तू सात दिन से मेरे घर से ही खा रहा है वो

अरुण — मोहन।

मोहन आई एम सारी मेरा यह मतलब नही था ।

अरूण दोस्त यह बात कह कर तुमने मेरा दिल दुखाया है। मैं तेरे इस एहसान का बोझ लेकर नही जाऊँगा। यह लो दो सौ रुपये मेरे सात दिन तुम्हारे घर ठहरने के बदले ।

मोहन कैसी बच्चा जैसी बातें कर रहे हो । इसे जेब म रखो ।

अरूण यह पैसे वापिस जेब म नही जायेंगे किसी भी कीमत पर नही ।

मोहन और यह पैसे मैं भी नही लूंगा किसी भी कीमत पर नही ।

अरूण नही लेगा ।

मोहन नही । (अरूण वहा पास ही खडे एक भिखारी को देख उसे आवाज लगाता है)

मदन जी ।

अरूण क्या नाम है तुम्हारा ।

मदन जी मदन ।

अरूण यह लो दो सौ रुपए ।

मदन (हैरानी से) दो सौ ।

मोहन इधर ला चल भाग यहाँ से ।

अरूण देखो मोहन तुम्हे इससे रुपए छीनने का कोई हक नही । लाओ रुपए इधर दो ।

मोहन यह लो जो जी म आए करो ।

अरूण यह लो ।

मदन लेकिन बाबू जी बाबू जी रुकिए तो सही बाबू जी आई एम नाट बैगर (भावुक होकर) आई एम नाट बैगर (ज्यादा भावुक होकर) आई एम नाट बैगर रोते हुए) आई एम नाट बैगर ।

(संगीत अंतराल)

मदन मा मा

माँ आ गया मदन ।

मदन यह ले मा खा । खूब खा । मैं जानता हू कि तू कल से भूखी है ।

मा तू भी खा बेटे ।

मदन हा मा मैं भी खाऊगा भर पेट खाऊगा । मेरे पास पैसे भी हैं यह देख 180 रुपए ।

माँ कहा स आए तेर पास यह पैसे ?

मदन कोई सज्जन भिखारी समझ के दे गया ।

माँ (भावुक होकर) हे भगवान क्या अब यह दिन भी देखने थे ?

मदन मैंने उसे बहुत आवाजें लगाई मा कि मैं भिखारी नही हू मगर वो मालूम नही भीड म कहा गुम हो गया ।

माँ	चलो यही भगवान की मर्जी। सात-आठ दिन तो आराम से रोटी खा सकेंगे।
मदन	और उसके बाद मा।
मा	वो उसके बाद देखा जाएगा।
मदन	नही मा अगर भगवान ने अचानक यह दो सौ रुपए मेरे हवाले किए इसका जरूर कोई मतलब है।
माँ	कुछ मुझे भी तो बता।
मदन	मा अब नौकरी के चक्कर मे मारा मारा नही फिरू गा क्योकि मुझे मालूम हो गया है कि यह मेर नसीब मे नही है।
मा	तो फिर क्या करेगा ?
मदन	इन 80 रुपया से फलो की एक छाबडी लगाऊँगा। जो कुछ कमाई हुई मा वटा रोटी भी खा लेंगे।
मा	ठीक सोचा है तूने बेटा।
मदन	तो फिर ठीक है कल से यह काम शुरु कर दूँगा।
मा	भगवान तुम्हे सफलता दे।

(सगीत अन्तराल)

(बाजार का शोर घडी की टिक टिक)

मनोज	दो प्लेट और बनायो।
मदन	अच्छा साहब।
राजेश	यार इसकी फ्रूट चाट तो बहुत बढिया है।
मनोज	फल अच्छे और साफ सुथरे है। सबसे बडी बात तो ये है कि खुद साफ सुथरा है।
मदन	लीजिए साहब।
राजेश	यह लो पैसे।
मदन	जी यह लीजिए।
राजेश	क्या बात है भई 2 रुपए वापिस कर रहे हो।
मदन	साहब आज मारकीट मे फ्रूट थोडा सस्ता मिल गया।
मनोज	कमाल है ऐसा तो कोई नही करता।
मदन	साहब प्राफिट कम और सेल ज्यादा यही मेरा इमान है।
राजेश	यह बात गलत है। इस दुनिया मे अगर ऊँचे उडना चाहते हो तो ऐसा कभी मत सोचना।
मदन	मगर क्यो साहब ?
राजेश	देखो यह बेईमानी नही बिजनस है। बिजनस म जिस काम मे ज्यादा मुनाफा होता है लोग उसे ही करते हैं न।

मदन	जी साहब ।
राजेश	मगर तुम तो अपना मुनाफा अभी से कम कर रहे हो जो बुरी बात है ।
मदन	लेकिन साहब ईमानदारी ।
राजेश	यह जो तुम इतने साफ और ताजे फल बेच रहे हो यही बहुत बडी ईमानदारी है । यह लो 2 रुपए अपने पास रखो ।
मदन	थैंक्यू वैरी मच सर ।
राजेश	पढे लिखे हो ?
मदन	जी ।
राजेश	कितना ।
मदन	बी ए किया है ।
मनोज	(हैरानी से) क्या ?
मदन	हा साहब ।
राजेश	और यह काम कहीं नौकरी ही कर लेते ।
मदन	साहब आप तो ऐसे कहते है जैसे मैंने अपना इंतजार कर रही नौकरी को ठुकरा कर शौक के लिए यह काम शुरू किया है ।
मनोज	इसका कहना ठीक है यार । आज नौकरी कहा मिलती है ।
राजेश	ठीक है अगर तुमने यह काम शुरू किया है तो अच्छी बात है । मुझे विश्वास है कि तुम तरक्की जरूर करोगे और हा मुनाफा जोडने की बजाए उसे खर्च करो और ज्यादा फल लाओ और ज्यादा मुनाफा कमाओ ।
मदन	ऐसा ही करूगा ।
राजेश	वो सामने मेरा ऑफिस है । मेरा नाम राजेश है कभी किसी चीज की जरूरत हो तो बताना ।
मदन	जी बहुत अच्छा ।
राजेश	मनोज चला जाए ।
मनोज	हाँ चलो (दोनों चले जाते हैं) (मोटर साईकल रुकता है)
पुरुष स्वर	दो प्लेट चाट लगाना यार—
मदन	माफ करना बाबू जी आज तो फल जल्दी खत्म हो गए ।
लडकी स्वर	ओह ना ।
पुरुष स्वर	यार तेरी चाट की तारीफ सुनकर दो किलोमीटर का सफर करके यहा आए हैं और कहता है कि सब खत्म ।
लडकी स्वर	अभी तो दो ही बजे हैं । क्या बिजनेस करेगा तू ?
पुरुष स्वर	हाँ यार । ज्यादा फ्रूट खरीदो हम कल आयेंगे । क्या डार्लिंग ?
लडकी स्वर	ओह यस । रिजर्व सम फ्रूट्स फार अस ।

पुरुष स्वर	क्या बात करती हो हनी । इस बेचारे को भला अंग्रेज़ी समझ आयेगी ।
मदन	आई अंडरस्टैंड एवरी थिंग सर ।
लड़की	(हैरानी से) वट ।
मदन	आई एम ग्रैजुएट मैडम ।
लड़की	मगर फिर भी यह काम ?
मदन	काम करने में क्या बुराई है ?
पुरुष	गुड । (मोटर साईकल स्टार्ट) हम कल आयेंगे ।
लड़की	बाय ।
मदन	बाय मैडम । (मोटर साईकल चला जाता है)
	(संगीत अंतराल)
	(घड़ी की टिक टिक)
मदन	राजेश जी आपसे एक सलाह लेनी थी ।
राजेश	हां हां कहो ।
मदन	भगवान की दया से अब मेरा कामकाज भी ठीक हो गया है । मैं इसे और आगे बढ़ाना चाहता हूं ।
राजेश	यह तो बहुत अच्छी बात है । तो फिर क्या सोचा है तुमने ?
मदन	मैंने ऐसी फ्रूट चाट की छाबड़ीयां अलग अलग जगह पर लगाने के लिए दस आदमीयों से बात की है । फ्रूट उन्हें खरीद कर मैं दूंगा और हर एक से बीस रुपए प्राफिट में से लूंगा । बाकी सब उनके ।
राजेश	आईडिया तो तुम्हारा बुरा नहीं है । क्या वो सभी आदमी भरोसे के हैं ।
मदन	जी हां बहुत भरोसे के ।
राजेश	तो फिर देर किस बात की । पैसों की जरूरत तो नहीं ।
मदन	जी नहीं । भगवान की दया से 2 साल में काफी पैसा जोड़ लिया है ।
राजेश	तो फिर ठीक है जल्द से जल्द यह काम शुरू कर दो । वैसे कब तक तुम्हारा इरादा है ।
मदन	कल से । (घड़ी की टिक टिक)
राजेश	गुड ।
	(संगीत अंतराल)
	(कार सड़क पर भाग रही है)
मदन	ड्राईवर वो जो स्कूटर अभी अभी पास से गुजरा है उसका पीछा करो ।
ड्राईवर	ओ के सर । (कार रुकती और टर्न लेती है)
मदन	ध्यान से ज्यादा रैश होने की जरूरत नहीं है। (कार भागती है और ब्रेक लगते हैं)

मोहन	क्यो वे ध्यान स नही चल सकता ।
मदन	इसमे इसका कोई दोष नही है मैंने ही इसे आपका पीछा करने के लिए कहा था ।
मोहन	क्यो ?
मदन	क्योकि मुझे आप से कुछ काम है ।
मोहन	कहिए ?
मदन	यहा नही ।
मोहन	तो फिर ।
मदन	यह रहा मेरा काड । अगर आप कहे तो मैं आपके पास आ सकता हू ।
मोहन	नही नही मैं ही आपके पास आ जाऊंगा ।
मदन	थैंक्यू ।
मोहन	कब आना होगा ?
मदन	अगर आज शाम किसी भी वक्त आ जाएं मैं घर पर ही रहूँगा ।
मोहन	बाई द वे आप मुझसे मिलना क्या चाहते हैं ? मैं तो आपको जानता तक नही ।
मदन	लेकिन मैं आपको जानता हू ।
मोहन	(हैरानी से) मुझे ?
मदन	हां आपको ।
मोहन	मगर कैसे ।
मदन	यह मैं आपको आज शाम बताऊँगा ।
मोहन	अजीब पहेली है ।
मदन	जिंदगी भी तो एक अजीब पहेली है । कभी कभी इसका सही हल भी गलत साबित होता है और कभी कभी गलत हल भी सही हो जाता है ।
मोहन	काफी दिलचस्प इंसान है आप ।
मदन	तो फिर आज शाम आ रहे है न आप ?
मोहन	अब तो आना ही पडेगा ।
मदन	मैं आपका इंतजार करूँगा । तो फिर इजाजत है ।
मोहन	ओ क
मदन	ड्राईवर चलो । (गाडी स्टाट होती है और चलती है)
	(सगीत अतराल)
निमला	आपसे कोई मिलने आया है । कह रहा था आपने उसे बुलाया है ।
मदन	हां निमला मैं उसी का ही इंतजार कर रहा हू । उसे भेज दो और हां चाय पानी का भी इंतजाम कर देना ।

निमला	जी अच्छा। (निमला के कदमों की आवाज) आप अन्दर जाइए वो आपका ही इंतजार कर रहे हैं।
मोहन	थैंक्यू। (दरवाजा खोलता है)
मदन	वैलकम आईए बैठिए पाज) क्या मैं आपका नाम जान सकता हू।
मोहन	(हैरानी से)वट। कमाल है आप तो यह रह थे जा कि आप मुझे जानते हैं और आप अब मेरा नाम पूछ रहे है। ऐसी पहेली तो मैंने जिन्दगी मे नही सुनी।
मदन	मैंने कहा था न कि जिदगी एक अजीब पहेली है। कभी कभी इसका सही हल भी गलत साबित होता है और कभी कभी गलत हल भी सही हो जाता है।
मोहन	मैं कुछ समझा नही।
मदन	पहेली का सही हल यह है कि मैं आपका जानता हू और यही हल गलत हो गया क्योंकि मैने आपका नाम पूछा।
मोहन	जीनीयस रियली यू आर जीनियस। मुझे आप से मिलकर बहुत खुशी हुई।
मदन	लेकिन जितनी खुशी मुझे हुई उसका अन्दाजा शायद आप न लगा सके। आज भगवान ने मुझे आपसे मिलाकर मुझे कर्ज से मुक्त कराने की कृपा की।
मोहन	कर्ज कैसा कैसा कर्ज कैसी बातें कर रहे हैं आप।
मदन	आज से 15 साल पहले कनाट प्लेस मे कस्तूरबा गाधी रोड पर आप अपने दोस्त के साथ झगड रहे थे और उसने उस झगडे को निपटाने के लिए एक भिखारी का 200 रु० दिए।
मोहन	हाँ दिए थे।
मदन	वो पहेली का गलत हल था जो भिखारी के लिए सही साबित हुआ।
मोहन	आप कैसे जानते हैं?
मदन	क्योंकि वो भिखारी मैं हू।
मोहन	यकीन नही आता।
मदन	उसी 200 रुपये की बदौलत आज मेरे पास इतना पैसा है जिसकी गिनती मैं खुद नही कर सकता क्या नाम था आपके उस दोस्त का।
मोहन	अरुण।
मदन	मैं अरूण का कर्जदार हू। मेरी जितनी भी सम्पत्ति है उसके आधे हिस्सा उसे देकर मे कर्ज से मुक्त होना चाहता हू। कहाँ है वो?
मोहन	वो अब इस दुनिया मे नहीं है।
मदन	ओह नो।

माहन	उसे कनद कसर था। उसकी मौ त म बारे मे मुझे बहुत बाद म पता चला।
मदन	कोई और तो होगा उसका ? मेरा मतलब है पत्नी बच्चे।
माहन	उसके दा लडक और पत्नी थी और माँ। मैं उनके पास लखनऊ गया था मगर वहा मालूम हुआ कि अरूण की मौत के तीन महीने बाद उसकी मा भी चल बसी। अरूण के इलाज के लिए घर गिरवी रखा था उसे भी बेचना पडा। अब उसकी पत्नी और बच्चे कहा हैं मैं नही जानता।
मदन	अगर कभी उसकी पत्नी दिखाई दे तो मुझे बताना मैं उसके हिस्से की सम्पत्ति उसे सौंप देना चाहता हू।
सोहन	शायद इसम मैं आपकी काई मदद नही कर सकता।
मदन	क्यो ?
मोहन	क्योकि मैंने आज तक उसकी पत्नी को नही दखा।
मदन	तो क्या मैं इस कर्ज स कभी मुक्त नही हो सकूगा।
मोहन	धीरज रखिए। आपने ही ता कहा कि जिदगी एक पहेली है और दुनिया म ऐसी कोई पहेली नही है जिसका कोई हल ही न हो। (इतने म रजनी और निमला चाय का सामान लेकर अदर आते हैं)
मदन	निमला यह कौन ह ?
निमल	ड्राईवर बहादुर इसे लाया है। कह रहा था यह पढी लिखी भी है। बच्चो को पढा लिखा भी देगी। नौकरी के लिए आई है।
मदन	क्या नाम है तुम्हारा।
रजनी	जी रजनी।
मदन	क्या तुम्हें यह काम करना अच्छा लगेगा ?
रजनी	पेट की भूख मजबूरी के सामने अच्छे बुरे काम का कोई भेद नही होता।
मदन	और कौन कौन है तुम्हारे घर मे।
रजनी	मेरे दो बेटे जो कॉलिज मे पढ रहे हैं।
मदन	और तुम्हारे पति।
रजनी	उनका देहात हो चुका है।
मदन	वैरी सैड। निमला इसे रख लो।
रजनी	जी आपका बहुत बहुत शुक्रिया।
निमला	ठीक है अब तुम जाओ कल सुबह आना।
रजनी	जी बहुत अच्छा नमस्ते।
मदन	नमस्ते। (चली जाती है)
मदन	बेचारी, जरूरतमद लगती है।

निमला — बहादुर कह रहा था कि बड़ी मेहनती है। आप चीनी कितनी लेंगे।

मोहन — जी एक चम्मच।

मदन — ओह सारी मोहन जी बातों में मैं भूल ही गया था।

मोहन — नही नही ऐसी कोई बात नही।

मदन — यह लीजिए न। मेरी आपसे यही रिक्वेस्ट है कि अरूण के परिवार को तालाश करने मे आप मेरी सहायता कीजिए। जो भी खच आएगा मैं दूगा।

मोहन — नही खच की कोई बात नही यह तो मेरा फज है। वैसे मदन जी आप जो कर रहे है ऐसी बातें सिफ कहानियो म मिलती हैं।

मदन — मैं तो कुछ नही कर रहा। मैं तो उस इसान को अपने लिए भगवान मानता हू जिसने मुझे आज इस मुकाम तक पहुचाया। यह सब कुछ तो उसी का है।

मोहन — अच्छा अब इजाजत चाहूगा। किसी और जगह जाना है।

मदन — आप मेरा यह काम करवा दें मैं आपका यह एहसान जिदगी भर नही भूलूगा।

मोहन — आप चिता न कीजिए अरूण का परिवार जरूर मिलेगा ऐसा मेरा विश्वास है। अच्छा जी चलता हू। नमस्ते।

निमला — नमस्ते। (चला जाता है) कौन था यह ?

मदन — यह वही इसान है निमला जिसके साथ झगडकर इसके दोस्त ने आज से कोई 15 साल पहले 200 रुपए दिए थे जिसकी बदौलत आज मैं यहा तक पहुँचा हू। यह मुझे आज सुबह अचानक ही मिल गया और मैंने उसे यहाँ बुला लिया।

निमला — तो इसके दोस्त का पता चला।

मदन — वो दोस्त मर चुका है और अब उसके परिवार की तालाश म इसकी सहायता लूगा और अपनी आधी सम्पत्ति उसकी पत्नी के नाम कर दूँगा।

निमला — पता नही वो बेचारे कहाँ और किस हाल म होंगे।

मदन — यह तो भगवान ही जानता है।

(सगीत अन्तराल)

रमेश — देखो भैय्या इस शर्ट को छोड दो यह मेरी है और तुम इसे नही पहन सकते।

हरीश — रमेश मैंने दोस्त की पार्टी पर जाना है इस कमीज के सिवा इस घर म और है ही क्या जिसे पहनकर कही जाया जा सके।

रमेश — मगर यह तो मेरी है।

हरीश — मानता हू यह तुम्हारी है ।

रमेश — तो फिर ठीक है शरीफ आदमीयो की तरह इसे छाड दो ।

हरीश — बेवकूफ कही के मेरी बात को समझने की कोशिश कर ।

रमेश — न न बिल्कुल नही तुम यह कमीज़ छोड दो ।

हरीश — इसे ज्यादा मत खीचो फट जाएगी ।

रमेश — मेरी कमीज छोड दीजिए ।

हरीश — मेरा ख्याल है तू बातो से मानने वाला नही है । (उसे मारता है)

रमेश — (गुस्से से) यह सरासर ज्यादती है भैया एक तो मुझ से मेरी कमीज़ छीनी जा रही है और दूसरे पीटा जा रहा है । यह ज्यादती है ।
(कमीज़ फटने की आवाज़)

रमेश — (गुस्सा और रोते हुए) यह क्या किया तुमने । मैं तुम्हें नही छोडूगा ।
(दोनो मे मारपीट और बतन गिरने की आवाज़)

रजनी — (गुस्से से) यह क्या हो रहा है ?

रमेश — यह देखा मा देखो इसने क्या किया है ?

रजनी — शर्म आनी चाहिए तुम लोगो को (भावुक) मैं न जाने क्या मुसीबतें उठा-उठा कर तुम लोगो को कुछ बनाना चाहती हू और तुम हो कि (रोती है)

हरीश — मुझे माफ कर दो मा ।

रजनी — आज अगर तुम्हारे पिता जिन्दा होते तो ऐसी बातें करने की तुम्हारी हिम्मत होती । बोलो चुप क्यो हो अच्छा फायदा उठा रहे हो मा की ममता का । अगर तेरा बडा भाई तेरी कमीज पहन लेता तो क्या फर्क पडता । मगर नही तुम तो कुत्ते की दुम की तरह रहोगे ।

रमेश — हा हा मै तो कुत्ता ही हूँ बल्कि उससे भी बदतर वो तो झूठन खा कर भी पेट पाल लेता है मुझे तो वो भी नसीब नही ।

रजनी — फिक्र मत करो अब वो भी मिल जाएगी । मुझे किसी मदन सेठ के यहा नौकरी मिल गई है दो जून की रोटी तो वहा से मिल ही जाएगी । (रोती है हे भगवान क्या यह दिन भी दिखाने थे ।

हरीश — मत रो माँ भगवान पर भरोसा रखो अगर वो दिन नही रहे तो यह दिन भी नही रहेंगे ।

(सगीत अन्तराल)

(इन्टरकाम बजने की आवाज़)

मदन — हा कहो क्या है ? ठीक है उसे भेज दो । (दरवाजा खुलता है) आयो मोहन बैठो कुछ पता चला ?

मोहन	अरुण की पत्नी की मौसी गाजियाबाद मे रहती थी। किसी से मालूम होने के बाद मैं वहा गया तो पता चला कि उनके हसबैंड का तबादला बंगलौर हो गया और वो सारे बेंगलौर चले गए।
मदन	आज शाम की फलाईट मे तुम बेंगलौर क्यो नही चले जाते।
मोहन	ठीक है मैं चला जाता हू।
मदन	(इटरकाम उठाता है) ऐसा करो आज शाम की फ्लाईट से मोहन कुमार बेंगलौर जायेंगे किसी भी कीमत पर सीट चाहिए और जब यह जायें तो इन्हें दस हजार रुपए दे दिए जायें। (इटरकाम रखता है)
मोहन	इतने पैसो की क्या जरूरत है।
मदन	जरूरत है मोहन, इसे तुमसे ज्यादा मैं जानता हू। प्लीज किसी भी तरह मुझे वो परिवार तालाश कर दीजिए।
मोहन	जिस तरह यह कडिया जुड रही है मुझे उम्मीद है कि मैं उन्हे तालाश कर लूगा। अच्छा इजाजत चाहता हू।
मदन	ओ. के. । आल द बैस्ट
	(सगीत अन्तराल)
रजनी	बीबी जी यह साथ वाला पोरशन बिल्कुल खाली पडा है और सफाई भी वहा रोज होती है। साहब ने इस पर इतने पैसे क्यो बर्बाद कर दिए। किस के लिए।
निर्मला	रजनी इसके मालिक की तालाश जारी है जब वो मिल जाएगा उसे सौंप दिया जाएगा।
रजनी	इसके मालिक तो आप लोग है।
निर्मला	नही रजनी इसका मालिक कोई और है।
रजनी	मैं कुछ समझी नहीं बीबी जी। (बाहर कार के हार्न की आवाज)
निर्मला	लगता है वो आ गए। फिर कभी फुर्सत मे बताऊगी।
मदन	(आते हुए) निर्मला जल्दी खाना लगवा दो। मुझे जल्दी कही जाना है।
निर्मला	खाना तो टेबल पर लगा है।
मदन	गुड। वो नई नौकरानी कैसी है।
निर्मला	बहुत अच्छी। खाना भी आज उसी ने बनाया है खायेंगे तो पता चलेगा।
	(टैलीफोन की घण्टी बजती है)
मदन	हैलो मदन दिस साईड ... हा वो आ गए है ठीक है मैं अभी पन्द्रह मिनट मे पहुंच रहा हू। (टैलीफोन नीचे रखता है)
निर्मला	आप जा रहे हैं।
मदन	हां निर्मला।

निमला — खाना तो खाते जायें।

मदन — समय नही है। तुम लोग खा लेना।

निमला — रुकिए तो सही क्या फायदा ऐसी दौलत का जो दो पल चैन म नही बैठन देती।

रजनी — यह दौलत है ही ऐसी चीज़ बीवी जो ना हो तो चैन नही ह। तो भी चैन नही।

निमला — हा यह तो है।

रजनी — आप कुछ बतान वाली थी उस साथ वाले पोरशन के बार म।

निमला — फिर कभी बताऊँगी। तूने अगर घर जाना है तो जा।

रजनी — अच्छा जी। बीवी जी आप बच्चा को पढाने के बारे मे कह रही थी मगर बच्चे दिखाई नही दिए कहा हैं वो।

निमला — शिमला म पढते हैं जब छुट्टियो म आएँगे तो पढा लेना बडा मुश्किल पढाई है उनकी। अच्छा तू जा सुबह जल्दी आ जाना।

रजनी — अच्छा जी।

निमला — और सुन वो किचन से कुछ खाना ले जाना वरना बकार ही बाहर फेंकना पडेगा।

(सगीत अतराल)

मोहन — जब मैं उनके ठिकाने पहुचा तो मालूम हुआ कि सारा परिवार अमेरिका चला गया।

मदन — तो क्या उनके मिलन की आखिरी उम्मीद भी खत्म हो गई।

मोहन — उम्मीद पर तो दुनिया कायम है। आप हिम्मत न छोडिए।

रजनी — साहब जी आपस काम है। बीबी जी घर पर नही हैं अगर होती तो उनस ही कह दती।

मदन — हाँ हाँ कहा।

रजनी — कल मेरे पति का श्राद है। कुछ पैसा की जरूरत थी तनख्वाह म से काट लीजिएगा।

मदन — यह लो सौ रुपया हमारी तरफ से। भगवान से प्रायना करना कि जिसकी हम तलाश कर रहे ह वो जल्दी मिल जाए।

रजनी — नही साहब मैं अपने पति का श्राद अपन ही पैसा से करूगी। मुझे पचास ही चाहिएँ। भगवान से प्रायना जरूर करूगी।

मदन — चलो अच्छा यह लो पचास रुपए।

रजनी — धन्यवाद। (चली जाती है)

मोहन — बडा स्वाभिमान है इस औरत म।

मदन — हा मोहन। बेचारी विधवा है किसी अच्छे घराने की लगती है मजबूरी मे सब कुछ कर रही है।

मोहन	अच्छा मदन जी फिर मैं चलता हू अगर कही से उनके बारे म पता चलेगा तो बताऊंगा ।
मदन	जरूर मुझे इतजार रहेगा । (घडी की टिक टिक)
	(सगीत अन्तराल)
	(पश्चिमी सगीत और पार्टी मे लोगो का हल्का सा शोर)
राजेश	यार हर साल तुम कोई न कोई नया प्राजेक्ट शुरू कर देते हो क्या करोगे इतनी दौलत का। बहुत अच्छे बिजनेस मैन बन गए हो।
मदन	यह सब तो आपसे ही सीखा है।
मनोज	(नशे म) मैं सोचता हू कि नौकरी छोडकर फ्रूट की छाबडी लगा लू ।
राजेश	शी ऐसी बातें न करो मनोज ।
मदन	कहने दीजिए यह कोई झूठ थोडे ही कह रहा है।
मोहन	एक मिनट मदन जी ।
मदन	ऐक्सक्यूस मी
राजेश	ओ यस जरूर ।
मधु	अच्छा भाई साहब अब हम इजाजत चाहते हैं ।
मदन	भाभी जी थोडी देर और रुकते ।
मधु	रात बहुत हो गई इजाजत चाहेंगे ।
मोहन	हाँ मदन ।
मदन	खाना खा लिया ।
मोहन	जी हा ।
मदन	तो फिर ठीक ऐस यू विश ।
मधु	अच्छा भाई साहब नमस्ते ।
मदन	नमस्ते ।
निमला	सुनिए वो ड्राईवर कहाँ है ?
मदा	वो वर्मा जी को छोडने गया है।
निमला	रजनी ने घर जाना था दर हो गई कैसे जाएगी अब ।
मदन	मोहन ।
मोहन	हाँ कहो ।
मदन	अगर तुम बुरा न मनाओ तो रजनी को घर छोड देना शायद रास्ते म ही पडे ।
मोहन	हा हा जरूर कहाँ है वो ?
निमला	वो उधर है आईये ।
	(सगीत अतराल)
	(कार के चलने की आवाज)

रजनी — बस वो सामने वाले मकान के आगे रोक दीजिए। (कार रुकती है और घर के अन्दर लड़ाई झगड़े की आवाज सुनाई दे रही है। बरतनो के खड़कने की आवाज भी।) हे भगवान इन लोगो ने तो मेरा जीना हराम कर दिया। (दरवाजा खोलकर अन्दर जाती है)

मोहन — मधु तुम बैठो मैं देखता हूँ क्या हो रहा है।

हरीश — मैं आज तुझे नही छोड़ू गा। रोज रोज का झगड़ा आज खतम ही कर दूँ गा।

रजनी — कुछ शर्म करो तुम दोनो।

रमेश — माँ देख तेरे बड़े को कितना मारा है इसने देख। छोटा हूँ न। हाथ नही उठा सकता इसी का नाजायज फायदा उठाता है यह। मगर अब मैं तेरा लिहाज नही करूँ गा हाँ मा नही करूँ गा इसका लिहाज।

मोहन — क्या बात है यह लड़ाई क्या हो रही थी।

रजनी — ओह आप माफ कीजिएगा यह दोनो भाई भूखे थे भूख से लड़ रहे थे।

मोहन — (अपने आप से) अरे यह अरुण की तस्वीर यहाँ। यह तस्वीर किसकी है।

रजनी — मेरे पति और इन दोनो के पिता।

मोहन — ओह माई गाड।

रजनी — आप इन्हे जानते हैं ?

मोहन — हमने तुम्हे कहाँ कहाँ नहीं तालाश किया भाभी।

रजनी — भाभी।

मोहन — हाँ भाभी अब तुम्हारे बच्चो को भूख से लड़ना नही पड़ेगा। कल का सवेरा तुम्हारे इन बच्चो के लिए वो खुशियाँ लेकर आयेगा जिसकी उम्मीद इन्सान केवल सपनो मे करता है।

रजनी — यह आप क्या कह रहे हैं मुझे कुछ समझ नही आ रहा है।

मोहन — सुबह का इन्तजार करो भाभी सब समझ आ जाएगा।

(संगीत अन्तराल)

(सुबह का उजाला पक्षी चहचहा रहे है) (कार के रुकने की आवाज)

मोहन — आईए। (दरवाजा खटखटाया जाता है और दरवाजा खुलता है।)

रजनी — इतनी सुबह मुझे बुला लिया होता मालिक।

मदन — आपका ही तो मन आया हूँ रजनी जी।

रजनी — मैं आपकी नौकरानी हूँ मालिक। आप मुझसे नौकरों जैसा ही सलूक करें।

मदन — नहीं रजनी जी हमारा रिश्ता मालिक नौकर का नही है।

रजनी — तो फिर क्या रिश्ता है।

मदन — कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिनको कोई नाम ही नहीं दिया जा सकता। आप अपने बच्चों के साथ मेरे साथ चलिए।

रजनी — मगर कहां ?

मदन — उस घर में जो बरसों से आपका इन्तजार कर रहा है।

रजनी — मैं कुछ समझी नहीं। यह सब क्या है ?

मदन — मैं आपको सब समझा दूंगा। तुम लोग अपनी मां को गाडी में बिठाओ वो तुम्हारी अपनी गाडी है।

रमेश — हमारी अपनी गाडी।

हरीश — मगर कैसे ?

मदन — बताऊँगा सब कुछ बताऊँगा। बाहर गाडी खडी है जरूरी सामान समेट लो मैं आपका बंगले में इन्तजार कर रहा हूं। आओ मोहन।

(संगीत अन्तराल)

मदन — मोहन मैं चाहता हूं कि इन्हें आप ही शुरू से लेकर अब तक की बता दो।

मोहन — जी बहुत अच्छा। भाभी याद करो आज से कोई पन्द्रह साल पहले अरुण की ट्रांसफर दिल्ली हुई थी और वो अपने एक दोस्त के यहां ठहरा था वो दोस्त मोहन मैं ही हूँ।

रजनी — तो क्या वो आपसे लड कर गए थे।

मोहन — जी वो मेरी गलती थी मेरे मुंह से कोई ऐसी बात निकल गई थी।

रजनी — जी मैं सब जानती हूं उन्होंने मुझे बता दिया था और यह भी बताया था कि उन्होंने आपको 200 रुपए देने चाहे और आपके इन्कार करने पर वो पैसे उसने एक भिखारी को दे दिए थे।

मदन — वो भिखारी मैं हूं।

रजनी — (हैरानी से) असम्भव।

मदन — और उन्हीं 200 रुपए की बदौलत आज मैं यहां तक पहुंचा हूं। मेरी हालत उस वक्त क्या थी शायद इसका अन्दाजा आप न लगा सकें। खैर छोडो। मेरी जितनी भी सम्पत्ति है उसके आधे की आप हकदार हैं और यह रहे उसके कागजात। साथ वाला पोरशन जो बडी देर से खाली पडा है आपका है।

रमेश — आपकी सारी सम्पत्ति कितनी वल्यू की होगी।

मदन — यही कोई बीस बाईस करोड।

रमेश — हे भगवान यह मैं क्या सुन रहा हूँ ?

रजनी — कहीं आप हमारे साथ मजाक तो नहीं कर रहे। (भावुकता) अगर यह मजाक है तो भगवान के लिए एसा मत कीजिए। सहन नहीं कर सकूंगी मैं। (सिसकती है)

मोहन यह मजाक नहीं है भाभी ठास हकीकत है यह सब कुछ तुम्हारा भी है।

मदन अगर आप कारोबार से अलग होना चाहते हैं या कोई और काम करना च हत ह तो इसकी आपको पूरी आजादी है।

हरीश नहीं अंकल हम ऐसे ही मिल जुल कर काम करेंगे।

मदन मुझे तुम्हारा यह उत्तर सुन कर खुशी हुई बेटे बहुत खुशी।

(सगीत अतराल)

(टैलीफान के डायल घूमते ह)

रमेश हैलो म ो होटल मैनेजर से बात करवायो हाय सतीश कैसे हो मैं रमेश ऐसा है आज रात एक पार्टी अरेंज करनी है शराब और शबाब का प्रबध भी करना होगा हो जायगा ना ? गुड वैरी गुड ओ के सी यू दियर (टैलीफोन नीचे रखना है)

सगीत अ तराल)

(रात का समय बादल गरज रहे है और हवा भी तेज है)

रजनी रात के 12 बजने को है रमेश अभी तक नहीं आया।

हरीश आ जायेगा तू उसकी चि ता छोड द।

रजनी कैसे छोड दू बेटा बाहर मौसम भी तो बहुत खराब है।

हरीश मौसम तो थोडी देर के लिये खराब होता है अगर औलाद खराब हो जाये तो

रजनी क्या बात है तु मुझसे कुछ छिपा रहा है।

हरीश हां मा आज मदन अकल ने मुझे बुलाया था।

रजनी क्या कहा उन्होने।

हरीश यही की रमेश का सम्भालो वो उस रास्त की तरफ बढ रहा जहा इन्सान क नसीब म अ धेरा के सिवा कुछ नहीं होता। जुआ, शराब और न क्या क्या शौक नहीं पाल रखे उसने।

रजनी क्या ? तुमन मुझे पहले क्या नहीं बताया। (दरवाजा खुलता है और बादलो का शोर तेज होता है)

रमेश (नश म) मेरे खिलाफ क्या साजिश की जा रही है ?

रजनी तू शराब पी कर आया है।

रमेश शराब नहीं पीऊगा तो लोगों की बातें कैसे सुनु गा।

रजनी कौन सी बातें कैसी बातें ?

रमेश यही कि राता रात कौन सा खजाना हाथ लग गया हमारे।

रजनी तुम्हे मालूम तो है।

रमेश — मगर लोगों को यह बात हजम नहीं।

रजनी — कौन सी ?

रमेश — यही कि 200 रु० से करोड़ों रुपये बनाना। बात कुछ और ही है।

रजनी — क्या है ?

हरीश — ओ बेवकूफ जा जाकर माँ जा तुझे मालूम नहीं है कि तू क्या बक रहा है।

रजनी — तू चुप कर हरीश। हां क्या क्या बात है ?

रमेश — तुम्हारा मदन सेठ से क्या रिश्ता है ?

हरीश — (गुस्से से) रमेश।

रजनी — तुम्हें मेरी कसम हरीश बार एक शब्द भी बोला। यह बात लोगों ने पूछी ?

रमेश — हां नहीं मैं पूछता हूं तेरा क्या रिश्ता है उसके साथ ?

रजनी — जिन्दगी में कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिनका कोई नाम नहीं होता। उन्हें अनजान रिश्ते कहते हैं।

रमेश — इन अनजान रिश्तों को यह समाज कभी मान्यता नहीं देता। रिश्ते स्पष्ट होने चाहिये। (बादल गरजते हैं) बोल क्या रिश्ता है तेरा ?

रजनी — (चांटा मारती है) कमीने मां पर शक करता है।

रमेश — मुझे शक नहीं यकीन है कि तू चरित्रहीन है।

रजनी — नहीं (बादल गरजते हैं)

रमेश — तू चरित्रहीन है तू चरित्रहीन है तू चरित्रहीन है ...... चरित्र (नशे में चूर हो जाता है) बादल गरजते हैं।

हरीश — मां इसकी बातों का बुरा मत मनाना यह होश में नहीं था। मां तू बोलती क्यों नहीं तू चुप क्यों है ......

रजनी — हरीश बेटे मुझे सोफे पर बिठा दे। मेरे-सीने में [illegible]

हरीश — आराम से मां आराम से। मैं डाक्टर को बुलाता हूँ [illegible] करता है) अंकल मां की तबीयत अचानक खराब हो [illegible] डाक्टर को बुला दीजिए।

रजनी — हरीश बेटे मुझे इतना पसीना क्यों आ रहा है [illegible] यह कैसा महसूस किया। क्या [illegible] नहीं देगा।

मदन — क्या हुआ भाभी ?

निमला — [illegible] हो है न।

रजनी — [illegible] अच्छा किया [illegible] [illegible] से पूछना है।

हरीश — [illegible] मैंने [illegible] नहीं [illegible]

रजनी लेकिन यह रिश्ता तुम्हारे सामने भी स्पष्ट हो जाना चाहिए। बताइए क्या रिश्ता हमारा।

मदन कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिनका कोई नाम नहीं होता।

रजनी समाज को नाम वाला रिश्ता चाहिए। वो क्या रिश्ता है हमारा।

मदन वो ही जो एक भाई का बहन के साथ होता है।

रजनी हरीश जब तेरा भाई नींद-से जागे तो उसे बता देना कि हम अनजान नहीं है। पवित्र है (मर जाती है)

हरीश माँ (जोर-जोर से रोता है) नहीं माँ नहीं अब जिन्दगी देखने का समय आया तो तू चली गई।

मदन जिन्दगी की पहेली का कभी कभी सही हल भी गलत साबित होता है। क्या आज समाज का इतना पतन हो गया कि हर इंसान पहेली को अपने अपने तरीके से हल करना चाहता है क्यों यह समाज अनजान रिश्तो को अपनी गन्दी नजर से देखता है। 